THE BOOK WAS DRENCHED

TEXT FLY WITHIN THE BOOK ONLY

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180050

UNIVERSAL
LIBRARY

प्राणों का सौदा

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H831/S53P Accession No. G.H. 203

Author श्रीमती, शशिराम |

Title - प्राणिका सागर | 1944

This book should be returned on or before the date last marked below.

प्राणोंका सौदा

लेखक

श्रीराम शर्मा

चित्रकार

श्री आर० एस० पण्डित (काठियावाड़)

प्रकाशक

अयोध्यासिंह

विशाल भारत बुकडिपो

१६५/१, हरिसन रोड,

कलकत्ता

सन् १९४४

मूल्य—३॥)

प्रकाशक—
अयोध्यासिंह
विशाल भारत बुकडिपो,
१९५।१, हरिसन रोड,
कलकत्ता।

प्रथम संस्करण—१९३९
२१००
द्वितीय संस्करण—१९४४
११००

मुद्रक—
के. वी. अप्पाराव
मेट्रोपोलिटन प्रिंटिंग एण्ड पब्लिशिंग हाउस लि०,
९०, लोअर सरकूलर रोड,
कलकत्ता।

समर्पण

उनको, जिनकी धमनियोंमें गरम खून
दौड़ रहा है, और जो जीनेके
लिए मरना जानते हैं।

—श्रीराम शर्मा

कथा-सूची

संख्या	कथा	पृष्ठ
१	रुद्रप्रयागका आदमख़ोर	१
२	प्रेमोपहार	१२
३	बदला	२६
४	अटल नियम	३५
५	अपमानजनक मृत्यु	४४
६	शैतानी समूह	५२
७	यमदूतसे साक्षात्	६७
८	जंगलकी दुलहिन	७९
९	जंगलका डाकू	९७
१०	काले कारनामे	१०८
११	रोमांचकारी कुश्ती	११८
१२	दुर्घटना	१२६

चित्र-सूची

संख्या	चित्र	पृष्ठ
१	"प्रतिमाको देखकर समझा कि कोई आदमी पेशाबके लिए निकला है।"	१०
२	"नीचे सिंह उचक और कूदकर उसे पकड़नेकी वृथा चेष्टा कर रहा था।"	२२
३	"मुतशिवी मगरको मारनेके लिए कूद पड़ा।"	३२
४	"सिंह भैंसेके विशाल कंधोंपर दृढ़तासे चिपटा हुआ अपने पैने नखोंसे उसे फाड़ रहा था, दाँतोंसे काट रहा था और विकराल रूपसे बुरी तरह गुर्रा रहा था।"	३८
५	"घोष बाबूने देखा, उनके पलँग और अलमारीके बीच एक भीमकाय शेर बैठा है।"	७१
६	"घोष बाबूने शेरकी भयंकर साँस महसूस की।"	७४
७	"शेर कम्पोत्पादक गुर्राहटके साथ पलँगपर कूद पड़ा।"	७४
८	"दोनों हाथोंसे चाकूकी मूँठ थामकर वार करनेकी कोशिश की।"	७७

संख्या	चित्र	पृष्ठ
९	"दैत्य बघेरा पिछले पैरोंपर पीछेको हुआ, और उसकी गर्दनमें एक तीर बिंध गया।"	९३
१०	"ज़मींदार पहले तो अवाक् रह गया; पर जब उसने लूतीको बुलाया, तब वह उस ओर आई, और ज़मींदारके उसने पैर छुये।"	९४
११	"रायफ़ल-ध्वनिके उपरान्त गुर्राहट हुई और फिर पीड़ा-जनक भयानक गर्जना।"	१०६
१२	"उसने एफ़० की बाँह फिर पकड़ ली, और उनको जंगलकी ओर ले चला।"	११७
१३	"जंगलको दहलानेवाली गर्जनके साथ शक्तिका वह पुंज विद्युत् गतिसे सूअरपर टूट पड़ा।"	१२२
१४	"जैसे ही भैंसेने ग्रेट्ज़को उछालकर फेंका, वैसे ही फ़ाइरेने दन्नसे रायफ़ल दाग़ दी।"	१३७

परिचय

'प्राणोंका सौदा' लेखकके बारह लेखोंका संग्रह है। इनमें से कई लेख प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओंमें भी प्रकाशित हो चुके हैं।

इस संग्रहके दो लेख—'अपमानजनक मृत्यु' और 'रुद्रप्रयागका आदमखोर'—किसी पुस्तकके आधारपर नहीं हैं। शेष लेख चैडविककी Hunters and the Hunted, मेजर फ़ोरनकी Kill or be Killed, लेफ्टिनेंट कैसरलेकी Dwellers in the Jungle, नोलेजकी The Terrors of the Jungle and In the Grip of the Jungle पुस्तकोंमें वर्णित लेखों और 'वाइड वर्ल्ड' अंग्रेजी पत्रिकामें छपे दो लेखोंके आधारपर हैं। लेखक पुस्तकों और पत्रिकाके लेखकों तथा प्रकाशकोंका बड़ा ही कृतज्ञ है।

पुस्तकमें चौदह चित्र हैं। 'यमदूतसे साक्षात्'-सम्बन्धी तीन चित्र 'वाइड वर्ल्ड' मैगज़ीनसे लिये गये हैं, और शेष ग्यारह चित्र जीव-जन्तु-सम्बन्धी चित्र बनानेवाले प्रसिद्ध गुजराती कलाकार श्री० आर० एस० पंडितने बनाये हैं। लेखक भावपूर्ण चित्र बनानेके लिए श्री पंडितका कृतज्ञ है। और वह गुजराती 'कुमार'के सम्पादक मित्रवर श्री रावलजीका भी ऋणी है, जिन्होंने पंडित महाशयका परिचय लेखकसे कराया। पुस्तकके प्रथमसंस्करणके अवसर पर लेखोंके चयन आदिमें बन्धुवर पं० हरिशङ्कर शर्माने जो प्रयत्न कियाथा, उसके लिये लेखक आजभी उनका आभारी है।

परिचय लिखते समय मुझे स्व० ब्रजमोहन वर्माकी याद आ रही है। अबसे सात वर्ष पूर्व 'शिकार'की भूमिका लिखनेके बाद पं० बनारसीदास चतुर्वेदी और स्व० वर्माजीके साथ मैं चाय पी रहा था। अपने शिकार-सम्बन्धी संस्मरणोंको छपानेके लिए नामकी आवश्यकता थी। स्व० पं० पद्मसिंह शर्मा से मैंने पूछा कि कोई उपयुक्त नाम बताइये; पर कोई आकर्षक नाम न सूझा। अन्तमें सबको मेरे प्रस्तावित नाम 'शिकार'को मानना पड़ा—यद्यपि मैं स्वयं उस नामसे न तब संतुष्ट था और न अब। अस्तु, 'शिकार' नाम-करण हो जानेके बाद और मशीनपर फर्मा चढ़ जानेके बाद अन्य पुस्तकोंका जिक्र हुआ और स्व० वर्माजीने एक नाम पेश किया, शिकार-सम्बन्धी मेरी दूसरी किताबके लिए, और वह नाम था 'प्राणोंका सौदा'। अफसोस है, 'प्राणोंका सौदा'का नामकरण करनेवाले व्यक्ति अपने बीचमें नहीं है। अगर साहित्य-शिखरपर वेगसे बढ़नेवाला वह व्यक्ति—वर्माजी—आज होता, तो यह पुस्तक उसीकी देख रेखमें छपती। पर विधिकी गति वक्र है! उपर्युक्त शब्द लिखने से, आशा है वर्माजीकी आत्मा, उनके छोटे भाई राजन बाबू, उनके मित्रों और 'विशाल भारत'-परिवारको लेखककी भाँति कुछ सान्त्वना मिलेगी।

शिकार-संबंधी लेख लिखनेमें मुझे 'विशाल भारत'के पाठकों और अन्य हिन्दी-साहित्य-सेवियोंसे जो प्रोत्साहन मिला, वह शब्दोंमें अंकित नहीं किया जा सकता। इस पुस्तकके लिखनेका श्रेय पाठकोंकी अभिरुचि, मित्रोंके प्रोत्साहन और हिन्दी-साहित्यके गौरवको मिलना चाहिए। यों लेखककी भी प्रशंसा हुई है उसी तरह, जिस प्रकार गेहूँके साथ बथुआको भी पानी लग जाता है।

श्रीराम शर्मा

भूमिका

किसी भी साहित्य-सेवीको—विशेषकर वर्त्तमान परिस्थितिमें हिन्दी-साहित्य-सेवीको—इससे अधिक और क्या आत्मतोष होगा कि उसे साहित्यके किसी अंग-विशेषका जन्मदाता माना जाय। हिन्दीमें शिकार—मेरे विचारसे प्रकृति-सम्बन्धी साहित्यके पितृत्वके गौरवका ख़याल करके लेखक कभी-कभी यह सोचने लगता है कि यह सब उसके पूर्वजन्मके किसी पुण्यका फल है, वर्ना हिन्दीके विशाल क्षेत्रमें किसी अन्य योग्यतम लेखकके माथे यह सेहरा बंधता। पर इस प्रशंसा-प्राप्तिसे, पाठक विश्वास करें, लेखकका माथा नहीं फिरा, वरन् उससे तो उसमें नम्रता और संकोचशीलताकी मात्रा बढ़ गई है। हाँ, एक बातका दुःख उसे ज़रूर है, और वह यह कि गत पन्द्रह वर्षोंमें उसका कोई साथी—शिष्य नहीं—हिन्दी-साहित्यमें इस विषयपर नहीं दिखाई दिया। कई मित्रोंने प्रयास किया; पर उनके लेखोंमें लेखन-कलाकी मौलिकता न आ पाई, और शायद वे थककर अथवा हतोत्साह होकर बैठ गये। इसका मुख्य कारण यह था कि वे स्वयं प्रकृतिके सम्पर्कमें न आये थे। उन्होने प्रकृति-देवीको—आप चाहें तो उसे प्रकृति-परी कहें—उन आँखोसे न देखा, जिनसे उन्हें देखना चाहिए था। प्राकृतिक दृश्योंके चित्रणके लिए रायफ़ल और बन्दूक़की ज़रूरत नहीं, ज़रूरत है सूक्ष्म कल्पनाशक्ति, कोमल भावना, निरीक्षण-बुद्धि और अनुभूतिकी।

* *
*

लेखकके शिकार अथवा प्रकृति-चित्रण-सम्बन्धी लेखोंका इतना मान शायद इसलिए हुआ है कि उनका साहित्यिक महत्त्व है, यद्यपि संकोचवश उसे यह लिखना पड़ता है कि उसके गत २०-२१ वर्षके साहित्यिक जीवनमें शिकार-साहित्यका बहुत कम भाग है। पर किसी चीज़के अभावमें जब कोई चीज़ आती है, तब उसपर सबकी आखें लग ही जाती हैं। हां, लेखकने शिकारको साहित्यिक और दार्शनिक जामा पहना दिया है। कोई भी चीज़ जब तक कलापूर्ण नहीं होती, तब तक उसका विशेष महत्त्व नहीं होता। बढ़ियासे बढ़िया सागौनकी लकड़ी पड़ी हो; पर जब तक कुशल बढ़ई उससे कोई बढ़िया कुर्सी या मेज़ या कलमदान नहीं बनाता, तब तक उसका कोई विशेष महत्त्व नहीं होता—आकर्षणका तो कोई सवाल ही नहीं उठता। बस, लेखकने शिकार-जीवनकी घटनाओंको साहित्यिक समाजकी चीज़ बनानेकी कोशिश की है।

पाठक पूछ सकते हैं कि 'शिकार' और 'प्राणोंका सौदा' में क्या अन्तर है? क्या 'प्राणोंका सौदा' मौलिक रचना है? क्या उसका कोई साहित्यिक महत्त्व है? 'शिकार' आपबीती घटनाओंका चित्रण है, और 'प्राणोंका सौदा' कलाविद् और मशहूर शिकारियोंपर बीती घटनाओं अथवा दुर्घटनाओंका चित्रण है। अंग्रेज़ीमें छपे उन लेखोंको आप पढ़ें, तो आपको मालूम होगा कि मूल घटनाओंमें तनक भी अन्तर—घटाव-बढ़ाव—नहीं है। ढाचा वही है, रत्ती-भरका फ़र्क़ नहीं; पर लेखन-शैली और दार्शनिक तथा साहित्यिक विश्लेषणने संग्रहको एक नवीनतर चीज़ बना दिया है। चिन्ता, भय, सुख और दुःख-सम्बन्धी मनोविकारोंको अंकित करनेसे कथामें जान पड़ जाती है। यदि ऐसा न हो, यदि मनोविकार-चित्रणकी आवश्यकता न हो, तो विश्वके

लिए साहित्य भी फ़ज़ूल है। रामायणकी घटना ही कितनी है ; पर काव्यका रूप देनेसे उसका जो महत्त्व हुआ है, उसे हम खूब समझते हैं।

'प्राणोंका सौदा'का साहित्यिक महत्त्व क्या है—इसका उत्तर साहित्य-सेवी ही दें। मैं इस विषयमें कुछ न लिखूंगा।

* * * * * *
* * *

हिन्दी-साहित्यके नाते लगे हाथ एक बात और लिख दूं। हिन्दीमें शिकार-साहित्य अभी सागरकी एक बूंदके बराबर भी नहीं और शिकार-साहित्य जीव-जन्तुओंके रहन-सहन सम्बन्धी ज्ञानके बिना अधूरा ही समझना चाहिए। अंग्रेजीमें तो हाथी, शेर और अन्य जानवरोंपर बढ़िया पुस्तकें हैं ; पर हिन्दी-वालोंमें धनी मानी हैं और वे शेर मारनेके रेकर्ड तोड़नेपर तुले हुए हैं, फिर उनमें यह न होगा कि वे अपने अनुभवोंको लिखकर या लिखाकर उन्हें पुस्तकका रूप दे दें। शेर, चीतल, बघेरा, सूअर और हाथीपर इतनी सुन्दर पुस्तकें लिखी जा सकती हैं कि लेखक हिन्दी-साहित्यमें अमरता प्राप्त कर सकता है। जंगली जानवरोंको मारकर रेकर्ड—कोरे रेकर्ड—तोड़नेकी बातमें तो बधिकताकी बू है।

अनेक हिन्दी-साहित्य-सेवी इंग्लैण्ड गये हैं ; पर इन पंक्तियोंके लेखकने हिन्दीमें 'झील-प्रदेशों' (Lake district) का वर्णन नहीं पढ़ा। तात्पर्य यह कि हममें अभी प्रकृति-दर्शन और प्रकृतिका मूल्य आकनेकी बहुत कमी है, और इसी कमीके कारण, किन्हीं अंशोंमें, ऐसे साहित्यका निर्माण नहीं हो रहा। परन्तु आशा है, हमारे नवयुवक लेखक और कवि इस ओर ध्यान देंगे और साहित्यकी त्रुटि-पूर्ति और अपनी ख्यातिकी वृद्धि करेंगे।

श्रीराम शर्मा

रुद्रप्रयागका आदमख़ोर

हृषीकेश-बदरीनाथ-रोडपर, हृषीकेशसे लगभग नव्वे मील ऊपरको, पहाड़के अंचलोंमें, अलकनन्दा और मन्दाकिनी—काली गङ्गा—के सङ्गमपर, रुद्रप्रयाग एक गाँव है। बदरी और केदारके यात्रियोंके लिए वह एक चट्टी—ठहरनेका स्थान—है। किसी वृक्षके तनेसे, जैसे दो मुख्य शाखाएँ फूटती हैं, उसी भाँति, रुद्रप्रयागसे दो मार्ग फूटते हैं—एक तो मन्दाकिनीकी ओरसे केदारको; और दूसरा अलकनन्दाके किनारे-किनारे बदरीनाथको। रुद्रप्रयागमें आधुनिक सभ्यताका चिह्न—डाकघर भी है। पर वहाँ ऐसा कोई आकर्षण नहीं है, जिससे प्रकृति-प्रेमीको कोई विशेष आह्लाद हो। रुद्रप्रयाग है तो हिमालयमें; पर ग्रीष्मकालमें, वहाँ हिमालयका कुछ भी आनन्द नहीं आता। पहाड़की गंजी चोटियाँ, संकीर्ण घाटी और फलस्वरूप असह्य गर्मी—भट्टीकी-सी—अच्छे वनका अभाव, इन सब बातोंके संयोगसे यह प्रतीत होता है, मानो प्रकृतिने रुद्रप्रयागके समीप एक भयङ्कर षड्यंत्र रच रखा है। वहाँ खड़ा होकर,

कोई आँख भरके देखे, तो यह भान होता है कि अलकनन्दाके किनारेवाली पर्वत-मालाएँ मिली आती हैं। न-जाने विधाताने वहाँकी पर्वत-श्रेणियों और पहाड़ियोंको फुर्सतसे बनाया है, या जान बूझकर किसी षड्यन्त्रकी रचना की है। वहाँकी छोटी-छोटी झाड़ियाँ, टूटी-फूटी और भीमकाय चट्टानें हृदयमें गुदगुदी नहीं पैदा करतीं। उनको देखकर दो भाव उठते हैं, एक तो भय-जन्य प्रतिष्ठा और दूसरा आश्चर्य-मिश्रित आतंक। यही नहीं, गर्मीके दिनोंमें यदि कोई अपने सूखे कण्ठको सींचनेके लिए अलकनन्दाकी सलिल धाराके समीप जाता है, तो उसके हृदयमें यह ख़याल आता है कि अलकनन्दा तप्त पहाड़ोंके आधारको ठण्डा कर रही है; और ये ऐसे हृदयहीन हैं कि इनपर कुछ प्रभाव ही नहीं पड़ता। यह विचार आते ही मानो चट्टानोंकी ओरसे कोई मूक हँसीमें कहता है—"सहवासी विजानीयात् चरित्रं सहवासिनाम्"—सहवासीके चरित्रको सहवासी —साथ रहनेवाला— ही जानता है। अलकनन्दा हमारी आधार-शिलाको सींच नहीं रही; वरन् वह हमारी जड़ काट रही है। उसने हमारी छातीपर आरा चलाया है। काटकर हमें दो भागोंमें कर दिया है। स्वयं तो वह अपने जन्म-स्थानसे भागी जा रही है; और हमें—अचल प्राणियोंको भी—काट काटकर अपने साथ लिये जा रही है।

* *
*

एक दिन इसी रुद्रप्रयागके पास, किसी गाँवका एक घसियारा लापता हो गया। लोगोंने ढूँढा और बड़ी खोजके उपरान्त एक झाड़ीमें उसका विकृत कपाल, पैर, हाथ और हड्डीके कुछ टुकड़े

मिले। स्पष्ट ही यह बाघकी करतूत थी! मनुष्य-भक्षी बाघका समाचार आस-पास अगले ही दिन फैल गया। घसियारे और चरवाहे जंगलमें जानेसे सहमे। लोगोंने चारों ओरसे एक-एक झाड़ी और नालेको मथ डाला। दो बन्दूकवाले भी साथ थे; पर बाघका कुछ पता न चला। पुलिसमें रिपोर्ट कर दी गई। एक आदमी और एक साधारण किसानकी मौतका मूल्य ही क्या था! उसके घरवालोंके लिए चाहे हो! था भी वह घरका अकेला; पर एक बँदरियाके कम होनेसे वृन्दावन तो सूना नहीं हो जाता। उसकी मौतसे लोग दुखी न थे। वह तो साधारण-सी बात थी; पर लोगोंको भय था कि कहीं उसकी छूत न फैले, बाघ और लोगोंपर भी हाथ साफ़ न करे। अपने-अपने कुटुम्बका व्यक्तिगत विचार था। यह बात न थी कि वे औरोंकी बुराई चाहते थे; किन्तु अपनी बेबसी और असहाय स्थितिके कारण लोग अपना ही ख़याल करते थे। पशुओंके लिए घास और रसोईके लिए लकड़ी तो जंगलसे ही आती थीं। वही लोगोंका भण्डार था। लोग घास और लकड़ीके लिए गये; पर चार-चार और पाँच-पाँचकी टोलीमें सतर्क होकर। दो-तीन दिन बाद उनका भय कम होने लगा। नदीकी बाढ़के समान, समय पाकर, दो-चार दिनमें ही वह सतर्कताकी बाढ़ भी उतर गई। लोगोंने समझा कि कोई चलता-फिरता बाघ उधर आ निकला होगा। एक बलि चढ़ गई, चलो, अब आफ़त टली।

* *
*

उस घटनाके ठीक दस दिन पीछे, रुद्रप्रयागसे १५ १६ मीलकी दूरीपर, केदारके मार्गकी ओर, चन्द्रापुरीके निकट, एक और

आदमी बाघ द्वारा मारा गया। रुद्रप्रयागमें उसका धीमा-सा कम्प महसूस हुआ। बहुतेरोंने समवेदना प्रकट करते हुए कहा, चलो, खूब बला टली ; पर वह बला टलनेवाली न थी। बेसुध चुगते हुए पक्षियोंके झुण्डपर जैसे बाज़ टूट पड़ता है, उसी भाँति, पहली घटनाके ठीक एक मास बाद, रुद्रप्रयागके निकट एक घसियारेको बाघने फिर दबोच लिया। अस्थि-पंजर समेटकर उसकी दाह-क्रिया की गई और अलकनन्दामें चिताकी राखको बहा दिया गया। पति-वियोगसे दुखी स्त्री सिर धुन रही थी। अलकनन्दा अपने अनित्य कलरवसे अलख जगा रही थी। ऊपर झुरमुटोंमें वायुके झकोरे पहाड़ोंसे रंगरलियाँ कर रहे थे। आकाशमें घोर गर्जन हो रहा था। बादल फिर रहे थे। शोक मनानेके लिए नहीं ; किन्तु लोगोंकी फ़सलको सींचने और दैवी नियमके पालनके लिए। वह घटना--वह तो एक साधारण-सी बात थी। बस, एक किसान मारा गया था !

रुद्रप्रयागके आस-पासके गाँव हिरनोंके समान चौंके हुए थे। पुलिसमें रिपोर्ट कराई गई, तो ख़ानापुरी करके ज़ाब्तेकी रस्म अदा कर दी गई। कुछ दिन पीछे, रुद्रप्रयागसे ८-१० मील नीचे, श्रीनगरकी ओर एक आदमी फिर मारा गया। होते-होते ५० ६० मीलके घेरेमें दसवें या बारहवें दिन और कभी-कभी सातवें दिन कोई-न-कोई व्यक्ति बाघ-द्वारा उठाया जाने लगा। जैसे गाँवका डाकिया अपने गश्तपर चिट्ठी लेकर आता है, उसी भाँति बाघका गश्त ठीक समयपर होता था। पहले तो लोगोंका खयाल था कि कई बाघ हैं ; पर वर्षोंके अनुभवसे उन्हें पता चला कि एक ही राक्षस बाघके रूपमें उत्पात मचा रहा है।

प्लेग और हैज़ेके प्रकोपसे जैसे लोग चिन्तित हो जाते हैं, पता नहीं कौन कब चल बसे, वैसे ही रुद्रप्रयागके समीपवर्ती लोग घबराये हुए थे। शिकार करके बाघ न-जाने कहाँ चला जाता था। बहुत-से तो उसे भूत-प्रेत समझते थे; पर यह बात स्पष्ट थी कि वह एक स्थानपर न रहता था। आज किसी आदमीको मारा, तो उसे खाकर वह मीलों दूर चला जाता था। लाशपर दुबारा न आता था। जो आदमख़ोर बाघ दुबारा लाशपर आवे, तो उसे अपवाद ही समझना चाहिए। शेर या बाघ अधिकतर अपने शिकारपर दुबारा लौटनेपर ही मारे जाते हैं। बाघने कोई गाय मारी, तो वह उसका ख़ून पी जायगा, थोड़ा-बहुत मांस भी खा जायगा और फिर प्रातःकाल ही दुबारा उसी शिकारपर आयगा। शिकारी उस लाशके पास अपने बैठनेका स्थान बना लेते हैं और बाघके दुबारा आनेपर उसे मार देते हैं। आदमख़ोर बाघसे जितना एक बारमें खाया जायगा, खा लेगा, फिर दुबारा लाशपर आनेका नाम भी नहीं लेगा। दुबारा न आनेकी तो वह शपथ-सी खा लेता है। कदाचित् मनुष्यका मीठा मांस खानेसे उसकी पशुबुद्धि (Instinct) कुछ तीव्र हो जाती है। अथवा किसी रहस्यमयी शक्तिसे उसे यह प्रेरणा मिलती है कि दुबारा आना जोखिमका काम है। वह जोखिम (Risk) का काम नहीं करता। फिर पहाड़पर रेल और मोटर तो है नहीं; और न वहाँ हथेली-जैसी समतल भूमि है। पैदल चलकर ही कहीं आना-जाना हो सकता है, और ऊबड़-खाबड़ अगम्य स्थानोंमें आदमीकी पहुँच कहाँ? बाघके लिए ऐसे स्थानोंमें आना-जाना कुछ भी कठिन नहीं; और सामूहिक शक्ति भी उन पहाड़ोंमें क्या करे और कहाँ तक करे? गाँव-गाँव बन्दूकें

भी नहीं हैं। यदि गाँव-गाँव बन्दूकें, ठस्सा टोपीदार ही सही, होतीं, तो भी बाघ मारनेकी अधिक संभावना हो जाती। फिर शिकारी भी आदमी हैं। उनके भी बाल-बच्चे हैं। नोन-तेलकी चिन्ता उन्हें भी रहती है। किसीको खबर लगी कि बाघने पन्द्रह मीलपर मार की है, तो पहले तो ख़बर ही देरसे आती है। तार या टेलीफ़ोन तो वहाँ है नहीं, और जब तक वहाँ कोई पहुँचे, तब तक तो वह पिशाच अपने गश्तमें किसी और जगह चला जाता है। ऐसी ही कुछ कठिनाइयाँ थीं, जिनसे उस बाघका ऊधम बढता ही गया।

बाघके उत्पातसे हाहाकार मच गया। अबोध बालकोंका बिलखना, विधवाओंका चीत्कार और बंधु-विछोह जन्य क्रन्दन हिमालयकी ऊँची चोटियों और संकीर्ण घाटियोंको पार करके देश-भरमें फैल गया। बम्बई और कलकत्तेके समाचारपत्रोंमें भी दुखियोंकी आवाज़ पहुँची। निकटवर्त्ती लोग कहते थे, अब पापोंका प्रायश्चित्त हो गया। क्या अब भी बाघका अन्त न होगा? दो चार शिकारी आये; पर बाघका कुछ पता न चला। शिकारी बैठे हैं किसी गाँवमें, बाघने मार की किसी दूसरे गाँवमें। क्या यह भी प्रकृतिका षड्यंत्र था?—शायद।

इसी प्रकार कई वर्ष बीत गये। लोगोंकी कष्ट-कथाका कुछ ठिकाना न था। ग्रीष्मकालमें तो लोगोंका मरण ही था। पहाड़के छोटे और तंग मकान! रातको इन्हींमें सब सोते थे। बाहर पेशाब और पाख़ानेको निकलना कठिन था। उन तंग घाटियोंमें, गर्मीके दिनोंमें, भट्टीकी सी रँधन हो जाती थी। बाघके आतंकसे लोग शौच तकके लिए रातमें बाहर न निकलते थे। बीसियों ही आदमी इसी प्रकार उसके शिकार हुए थे। रातको माता बालकको पेशाब कराने

निकली कि वह बाघका शिकार हुई ! बालकके रोनेसे लोगोंको पता चलता कि उसकी माँ बाघने मार डाली !

भारतवर्षके किसी अन्य स्थानमें कदाचित् ही एक बाघका उत्पात इतने दिनों रहा हो ; पर अलबेले हिमालयकी प्रत्येक बात अद्वितीय है। वहाँका, और विशेषकर रुद्रप्रयागका—जहाँपर प्रकृतिने अपने निर्माणमें कुछ षड्यंत्र फैलाया है—तमाशा ही दूसरा था।

इतने दिनों तक संसारके काम तो नहीं रुकते। युद्ध-कालमें भी प्रणय होता है। विवाह, मौत और अन्य रीति-रिवाज होते रहते हैं। संसारकी कोई बात रुकती नहीं। बड़े-बड़े महात्मा हुए, उनकी अमृतवाणीसे संसार तृप्त हो गया। भगवान् बुद्ध, शङ्कराचार्य और अन्य आचार्य आये ; पर संसारसे पापोंका मूलोच्छेदन न हुआ। हाँ, भलाई और बुराईके अनुपातमें भले ही अन्तर हो ; पर अनुपात कैसे लगाया जा सकता है ? रुद्रप्रयागके बाघका आतंक होनेपर भी विवाह शादी और आना जाना तो होता ही था ; पर बाघके शिकारसे इलाकेमें लोग सतर्क रहते थे। एक बार एक विवाह था। बरात लौटकर एक स्थानपर ठहरी। अगले दिन प्रातःकाल वधू गायब ! घिसटन और खूनकी धारा और कंगन-युत हाथ ही वहाँ मिला ! यह था उस विवाह—उस पाणिग्रहण-संस्कारका अन्त ! अनुकूल परिस्थितिमें जैसे बरगदका वृक्ष धीरे-धीरे बढ़ता जाता है, वैसे ही बाघकी निर्द्वन्द्वता और क्रूरता भी धीरे-धीरे बढ़ती गई। मकानोंमें घुस घुसकर बीस-बीस और चालीस-चालीसकी भीड़में से वह आदमियोंको उठाने लगा।

* *
*

ऐसे उत्पाती बाघका दुर्गम स्थानमें मारना बड़ा कठिन काम था। महीने-दो महीनेका प्रोग्राम बनाकर यदि कोई वहाँ बैठता और सैकड़ों रुपये ख़र्च करनेकी शक्ति रखता, तो वही कुछ कर सकता था। कई शिकारी बैठे ; पर बाघने सबको छकाया। एक बार एक साहसी शिकारी पेड़पर बैठनेका स्थान बनाकर रुद्रप्रयागके पुलके पास बैठा। चाँदनी रात थी, कदाचित् फागुनका महीना था। गुलाबी जाड़े पड़ रहे थे। बाघ पानीमें घुसना पसन्द नहीं करता ; इसलिए उस शिकारीका यह अनुमान था, जो सर्वथा ठीक था, कि बाघ अपने गश्तमें चन्द्रापुरीसे रुद्रप्रयागकी ओर आनेमें अलकनन्दाका पुल अवश्य पार करता होगा। बिना ऐसा किये, वह इधर आ ही नहीं सकता। शिकारीने अपने बैठनेका स्थान बनाया और सावधानीसे, चौकन्ना होकर, वह मार्गकी ओर देखता रहा।

प्रातःकाल लोगोंने वहाँ जाकर देखा, तो बन्दूक़ पड़ी हुई थी और पास ही पेड़के नीचे शिकारीकी अधखाई लाश थी। उसके होंठ भी नदारद थे और दाँत बाहर दिखाई पड़ते थे। क्या वे इस बातके प्रमाण थे कि उस साहसी शिकारीने दख़लदर-माक़ूलात की। या यह भी कोई षड्यन्त्र था ? हाँ, कदाचित् ऐसा हुआ होगा कि बाघको शिकारीका कुछ पता चल गया होगा, और उसने मखमली पंजोंसे ऊपर चढ़कर अपना घातक वार किया होगा।

* *
*

राज-शासन-रूपी अजगर आसानीसे नहीं हिलता डुलता। उसे तो भोजन चाहिए, भोजन करके वह सुषुप्तावस्थामें पड़ा रहता है ;

पर यदि उसको हिलाया-डुलाया जाय और लकड़ीकी मार दी जाय, या कुछ और हरकत की जाय, भला-बुरा कहा जाय, तो वह हिलता है। बाघके उत्पातके कारण चारों ओर आन्दोलन-सा उठ खड़ा हुआ। कौंसिलमें प्रश्न पूछे गये। सरकारको दोषी ठहराया गया। इस आन्दोलनसे एक लाभ और हुआ और वह यह कि कुछ मनचले शिकारी अपना भाग्य आज़माने आये। एक बार दो अंग्रेज़ शिकारी आये। बाघने बहुत दिनोंसे मार न की थी। साहब लोगोंने यह निश्चय किया कि रुद्रप्रयागवाले अलकनन्दाके पुलके दोनों थुमों पर उनमें से एक-एक बैठे, और यदि दोनोंमें से किसीको पहले बाघ दिखाई दे, तो रस्सी खींच दे, ताकि वे दोनों सतर्क हो जायँ। उन्होंने एक थूमेसे दूसरे थूमे तक अपने शरीरसे लगाकर रस्सी बाँध रखी थी, और दोनों थूमोंके पास सूखी नरई और पुआल डाल दिया था, जिससे बाघके उसपर पैर रखते ही शब्द हो। रायफ़ल भरी रखी थी। दोनों अंग्रेज़ोंमें से किसीको यह पता न था कि बाघ केदारकी घाटीसे रुद्रप्रयागकी ओर आवेगा या रुद्रप्रयागकी ओरसे केदारकी ओर जायगा। रुद्रप्रयागकी ओर कुछ दिनोंसे कोई मारा न गया था; इसलिए वे अंग्रेज़ अपने भाग्यकी परीक्षाके लिए वहाँ आये थे। नामी शिकारी थे। बहुत शिकार खेल चुके थे। अनाड़ी न थे; पर रुद्रप्रयागके आदमख़ोरने उन्हें भी छकाया। बाघ आया। एक अंग्रेज़ने उसको देखा। रस्सी खींची और फ़ायर हुआ; पर कदाचित् ठीक समयपर नहीं। प्रातःकाल शोर हुआ कि पुलके पास ही बाघने एक किसानको धर दबोचा और वह उसे चट कर गया! लोगोंका कहना है कि पुल पर शिकारियोंको छकानेके उपरान्त उसने उस किसानको मारा था।

उन शिकारियोंके लिए यह एक अपमानकी बात थी ; पर क्या करते ! ऐसा बाघ उन्होंने न कभी सुना था और न देखा था।

बकरे मारकर उनमें जहर डाला गया। जो कुछ किया जा सकता था, लोगोंने किया ; पर बाघका बाल भी बाँका न हुआ। क्या उसको कोई वरदान था ? हाँ, अब तक तो था ही।

* *
*

शासन-रूपी अजगर चेता और तहसीलदार, पटवारी तथा अन्य लोगोंकी देख-भालमें कैप्टन कौरबैट रुद्रप्रयागकी ओर आये। कैप्टन कौरबैट ख्यातनामा शिकारी हैं। शिकारके दाँव-पेंचके जानकार हैं, और सबसे बड़ी भारी बात यह है कि उन्हें साधन प्राप्त हैं। सीढ़ीके साधनसे पंगु भी छतपर चढ़ जाते हैं, और बिना साधनके हृष्टपुष्ट लोग ताकते रह जाते हैं। साधन-रूपी सीढ़ी संसारमें एक बड़ी चीज़ है। सम्पूर्ण साधन उन्हें प्राप्त थे। कैप्टन कौरबैटने एक योग्य जेनरलकी भाँति स्थितिका अध्ययन किया। दो-एक बार बाघने उन्हें भी छकाया ; पर बुद्धिके पुतले मनुष्यके सामने मनुष्य-भक्षककी कब तक चलती ? कैप्टन कौरबैटने एक मानवी प्रतिमा बनवाकर एक जगह स्थित कर दी और रुद्रप्रयागसे थोड़ी दूर श्रीनगरकी ओर एक आमके वृक्षके पास वे डटकर बैठ गये। पास ही एक कमरेमें लोगोंको बैठा दिया। कमरा बन्द था। लोग बातें भी कर रहे थे। निर्द्वन्द्व बाघ आया। प्रतिमाको देखकर समझा कि कोई आदमी पेशाबके लिए निकला है। झपट्टा मारा।

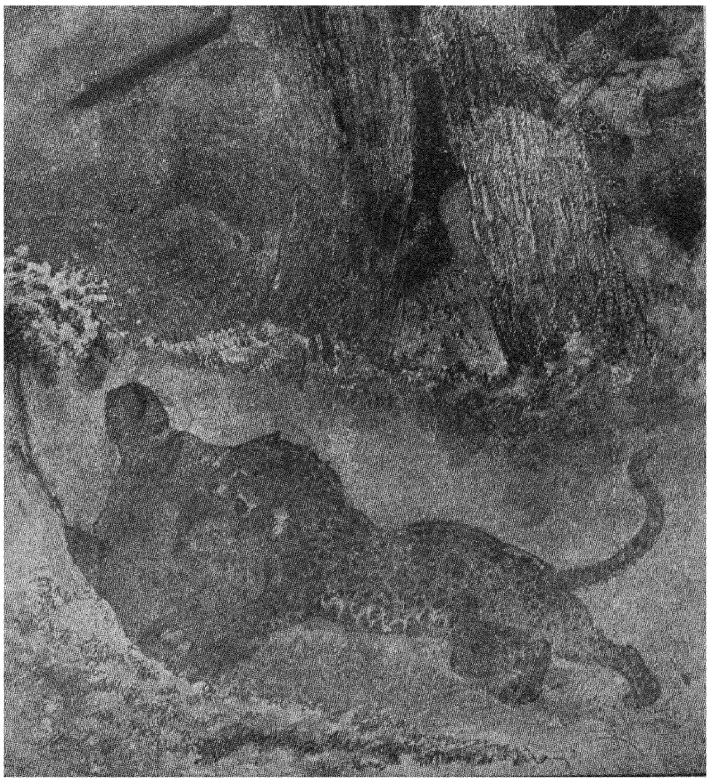

"प्रतिमाको देखकर समझा कि कोई आदमी पेशाबके लिए निकला है।"

धायँ ! फ़ायर हुआ और आदमख़ोर मरा पड़ा था ! रुद्रप्रयाग की साढ़साती उतर गई ! बरसोंका तिलस्म टूट गया !!

* *
*

उस दिनके बाद रुद्रप्रयागके समीपवर्ती लोग सुखसे सोये। कौरबैट साहबका यश चारों ओर छा गया। कौरबैटके भाग्यसे तो हमें ईर्ष्या है ; परन्तु उनकी सफलतापर उन्हें बधाई दिये बिना हम नहीं रह सकते।

सरकारी रिपोर्ट है कि रुद्रप्रयागके इस आदमख़ोर बाघने लगभग १२५ आदमियोंको खाया था ; पर जो गढवालसे परिचित हैं और वहाँके आदमियोंसे जिनका सम्बन्ध है, उनका कहना है कि रुद्रप्रयागके आदमख़ोर बाघने छह-सात सौ आदमियोंका सफ़ाया किया !

प्रेमोपहार

अफ्रीकाकी क्वैंडो और ओकवैंगो नदियोंके बीचवाला प्रदेश बडा ही सूखा है। ग्रीष्मकालमें तो वहाँ असह्य जल-कष्ट हो जाता है। धूपकी तेज़ीसे घास और छोटे पेड़ोंमें-से जान-सी निकल जाती है और सोतोंका पानी भी सूखने लगता है। इस इलाक़ेमें कुछ बुशमैन रहते हैं, जो 'भूरे (Brown) बुशमैन' कहलाते हैं। वे क़दके नाटे होते हैं, अर्थात् उनकी ऊँचाई चार फुटसे कुछ ही अधिक होती है; पर शरीर उनका सुडौल होता है। तीर चलानेमें वे बड़े दक्ष होते हैं। पैदल चलने और दौड़नेमें उनका मुक़ाबला अफ्रीकावासी मसाई या ज़ूलू लोग भले ही कर सकें। गर्मीके दिनोंमें पानीकी कमीके कारण शिकार खोजनेमें उन्हें आवश्यकता से अधिक परिश्रम करना पड़ता है, क्योंकि जंगली जानवर पानीके सहारे ही मिलते हैं।

ग्रीष्मकालमें, एक बार इसी इलाक़ेमें दो अंग्रेज़ शिकारी—फ्रेड जैक्सन और चैडविक—आए। पानीके निकट एक स्थानपर पड़ाव डालकर वे शिकार खेलने लगे। पर उनके आनेके एक सप्ताह बाद पानीका सोत सूख गया। शिकार छोड़, उन्हें पानीकी

खोज करनी पड़ी, क्योंकि बिना पानीके वे लोग वहाँ रह ही नहीं सकते थे। वे दिन-भर घूमते रहे ; पर पानी कहीं न मिला। थके-माँदे और प्याससे व्याकुल वे लौट रहे थे कि सूर्यास्तके समय उन्हें थोड़ी दूरपर धीरे-धीरे चक्कर खाता हुआ तथा ऊपरको उठता हुआ धुआँ दिखाई पड़ा। 'जहाँ धुआँ है, वहाँ आग है,' और उस स्थानमें आगके मानी थे मनुष्योंका होना, क्योंकि वहाँ दावानलकी कोई आशंका न थी। मनुष्योंके पास पानी ज़रूर होगा, अथवा उनके समीप कोई सोत होगा। इसी विचारसे पानी पानेकी उत्सुकतामें दोनों आदमी धुएँकी ओर चले।

बुशमैन पानीका पता प्रायः किसीको देते नहीं, क्योंकि पानी पर उनका और उनके शिकारका जीवन अवलम्बित है ; पर फ्रेडके अनेक बुशमैन मित्र थे, और उससे उनकी बोली भी आती थी।

बीस मिनट चलकर फ्रेड और चैडविक उस स्थानपर पहुँचे, जहाँ धुआँ निकल रहा था। लगभग आधी दर्जन झाड़ियोंमें एक भोंड़ा-सा आश्रम था। उसमें चार छोटे पुरुष (बुशमैन), छह स्त्रियाँ और कुछ बच्चे थे। दोनोंको देखते ही बुशमैनोंने, पशुबुद्धिसे प्रेरित होकर, अपने भाले और धनुष संभाल लिये। मरना और मारना उनके लिए साधारण-सी बात है। तोप और मशीनगन उनके पास नहीं, और न वे स्वार्थसिद्धिके लिए वेतन देकर दूसरोंको तोपों और मशीनगनोंका ग्रास बनाते हैं। वे स्वयं ही लड़ते हैं। बुशमैनोंकी इस तत्परताको देखकर फ्रेडने उन्हें प्रणाम किया। अभिवादन स्वीकार करके उन्होंने भाले और धनुष रख दिये, और उन दोनों अंगरेज़ोंका स्वागत किया।

वार्त्तालापसे अंग्रेज़ शिकारियोंको मालूम हुआ कि स्वयं बुशमैनों को बड़ी कठिनाई थी, क्योंकि पानीकी कमीके कारण वे जमकर एक स्थानपर नहीं रह सकते थे। उस पड़ावपर वे केवल चार दिनसे थे, सो भी एक दुर्घटनाके कारण। मीलों चलकर उन्हें पानी लाना पड़ता था। पानीकी बड़ी कमी थी ; पर उन्होंने प्रेमवश कुछ पानी—जो गदला था—फ्रेडको दिया और उनको क्वैंडोकी ओर जानेको कहा। वे स्वयं अगले दिन अपने घायल साथीको वहींसे ले जानेवाले थे। ये बातें हो ही रही थीं कि इतने ही में कराहनेकी आवाज़ आई। देखा, तो एक बुशमैन खालोंसे ढँका पड़ा था। वही रोगी था और उसीपर दुर्घटना घटी थी। उस घायल रोगीका नाम था काना।

काना तरुण था, उसके हृदयका विकास इतना हो गया था कि उसपर दाम्पत्य प्रेम-चिह्न अंकित हो सकते थे। उसका हृदय-मिलिन्द मधुमदवाले पुष्पकी खोज कर सकता था। खोजके लिए उसे दूर नहीं जाना था। अपने मुखियाकी छोटी लड़कीको वह अपना हृदय दे चुका था ; पर उसके हृदय देनेसे क्या होता था। प्रश्न तो स्वीकृतिका था। कानाके प्रेम-पथमें एक रोड़ा भी अटका हुआ था। एक दूसरा तरुण बुशमैन भी उस युवतीका पाणि-ग्रहण करना चाहता था। इस दूसरे चाहनेवालेमें एक बात और थी। वह एक दूसरे बुशमैन-दलके मुखियाका लड़का था। सिकासी—वह युवती—यह निश्चय न कर सकी कि उन दो प्रतिद्वन्द्वियोंमें से किसको अपना प्राणेश्वर बनाये। उसके प्रति दोनोंका ही प्रेम अगाध था। सिकासी-चकोरके लिए वे दोनों ही—एक-से—चन्द्रमा थे। सहारा उसे एकका ही लेना था, इसलिए उसने चुनाव करनेके लिए दोनोंसे कह

दिया कि 'इम्पाला' हिरनकी बढ़िया लाल और सफ़ेद खाल सबसे पहले जो उसे उपहारमें दे सकेगा, वही उसका पति बनेगा।

इम्पाला हिरन बड़ा ही सुन्दर और अत्यन्त चौकन्ना होता है। उस जलहीन प्रदेशमें तो कदाचित् ही कभी कोई इम्पाला नर दिखाई पड़ता हो; पर कानाको मालूम था कि उसके स्थानसे बीस मील दूर, एक नदीकी सूखी धारके निकट, नरकलोंसे आच्छादित पानीके गढ़ेके समीप, इम्पाला हिरनोंकी एक छोटी-सी टोली रहती है, जिसका नायक एक बढ़िया इम्पाला नर है। कानाका ख़याल था कि उसके प्रतिद्वन्द्वीको इस बातका पता नहीं है, इसलिए वह उस ओर गया और अपने साथियोंसे कह गया कि वे उस गढ़ेके निकट शिकारको न आएँ; आएँगे तो इम्पालाकी वह टोली वहाँसे बिदककर कहीं भाग जायगी। हाँ, वे उससे कभी-कभी मिलने आ सकते थे; पर जब तक वह अपनी प्रेयसीके लिए उपहार—इम्पाला नरकी खाल—प्राप्त न कर ले, तब तक वे उधर शिकार न खेलें। इम्पालाके चौकन्नेपन, तीव्र गति और ऊँची कुलाचें लगानेके स्वभावके कारण तीर कमानसे उसे मारना कठिन था। जालमें फँसानेकी सूरत ज़रूर थी; पर जालमें कोई दूसरा इम्पाला भी आ सकता था। अतएव इस साधनसे सफलताकी पूरी आशा न थी। फिर विरहसे व्याकुल प्रेमीके लिए यह अनिश्चित साधन कैसे ग्राह्य हो सकता था! इसलिए कानाने एक पुरानी टोपीदार बन्दूक (Muzzle loader) किसी मित्रसे उधार ली, और कुछ छर्रे तथा गोलियाँ लेकर वह अपनी भावी सहगामिनीके लिए उपहारकी खोजमें चल दिया।

एक सप्ताहमें तो काना इम्पालाकी उस टोलीका पता लगा पाया, और दो सप्ताह उसके निशाना लेनेके उचित स्थानकी तलाशमें बीत

गये। बीसों बार वह साँपकी भाँति रेंग-रेंगकर, उस अल्प झाड़ और अल्प छिपावकी भूमिमें होकर, मारकी दूरी तक पहुँचा ; पर सन्तरी मृगी या चकित शावकके सिगनलसे वह टोली भाग जाती थी, और उसे निशाना लेनेका अवसर ही न मिलता था। अनेक बार वह जलाशयके समीपवर्ती नरकलमें इस आशासे छिपा कि इम्पालाकी टोली पानी पीनेके लिए, अमुक दिशासे आयेगी, पर उसका यह अनुमान ग़लत निकला। टोली किसी दूसरी दिशासे ही आती और उसकी गन्ध पाकर तीन-तेरह हो जाती, और फिर कभी अँधेरेमें पानी पी जाती।

कानाका मनोरथ अभी सिद्ध नहीं हुआ था। उसे अभी एक भी फायर करनेका अवसर न मिला था। इतने ही में उसके मुखियाने कहला भेजा कि यदि वह अपने प्रयत्नमें शीघ्र ही फलीभूत न हुआ, तो और लोग भी उधर शिकार खेलने आयेंगे ; क्योंकि पानीकी कमीके कारण उस इलाकेमें शिकार खेलना असम्भव था। इस समाचारसे विरहाकुल कानाको और भी कष्ट हुआ, क्योंकि दूसरे लोगोंके उधर आनेसे इम्पाला नरके मारनेका कोई मौका ही नहीं रहता। उनकी पैछटसे मृग-टोली किसी दूसरे स्थानको चली जा सकती है। नरकलमें छिपा काना अपने भाग्यको कोस रहा था और कभी-कभी यह भी ख़याल करता था कि उसके प्रतिद्वन्दीने कहींसे सिकासीको वह चीज़ अवश्य ला दी होगी। ऐसा विचार आते ही उसे अपना भविष्य बड़ा ही विषादमय दिखाई पड़ता था। वह अपने आपको सिकासीके बिना हेच समझता था। सिकासीके कहनेसे वह आगमें कूद सकता था, सब-कुछ कर सकता था ; पर उसे यह गवारा न था कि सिकासी किसी औरकी होकर रहे। विचारोंकी इन तीव्र तरंगों

में सामनेसे उसे इम्पालाकी टोली दिखाई पड़ी। क्या सिकासीके प्रति उसका प्रेम उन्हें उसकी ओर खींचे ला रहा है, अथवा उसकी एक मासकी कठिन तपस्यासे देवी-देवता प्रसन्न हो गये हैं? जो हो, वह रक्त वर्ण टोली, सूर्यास्तसे कुछ पहले, पेड़ोंकी छायामें होकर नदीके सूखे नालेकी ओर आ रही थी। कुछ गज़ आगे बढ़ती थी और फिर मुँह उठाकर गन्ध लेनेको सतर्क हो जाती थी। कानाने अनुमान किया कि उसके छिपनेके स्थानसे लगभग दो-सौ गज़की दूरीपर वह टोली पानी पियेगी। और दो सौ गज़के लिए उसकी बन्दूक—वह भी ठस्सा—बेकार थी। पर हवा ठीक थी, अर्थात् इम्पाला-टोलीकी ओरसे काना की ओरको बह रही थी, इसलिए टोली उसकी गन्ध नहीं ले सकती थी। काना सौ गज़ उस स्थानकी ओर रेंगा, जहाँपर उसने पानी पीनेके लिए उस टोलीके आनेका अनुमान किया था। उसके सामने एक-एक करके इम्पाला नरकलमें पानी पीनेके लिए घुसा। बड़ा इम्पाला नर झुण्डके पीछे था, वह खुली जगहमें खड़ा हो गया। हवामें ऊँची नाक करके देखने लगा, और एक चौकन्ने सन्तरीकी तरह वह अपने अनुयायी झुण्डको तनक-सी आशंकापर सिगनल देनेको तैयार था। कानाकी ओर उसकी बग़ल थी। ढलते हुए सूर्यकी किरणें उसकी लाल खाल पर पड़ रही थीं। काना बन्दूक चलानेमें अभ्यस्त न था, इसलिए निशाना लेनेमें उसके हाथ ज़रा हिल गये। क्यों? कुछ आतुरतासे—क्योंकि उसी निशानेपर उसका और सिकासीका सम्बन्ध निर्भर था। उसकी ठस्सेदार बन्दूक गरजी। धक्केके मारे वह चारों खाने चित गिरा, और दूसरी ओर इम्पाला नर हवामें उछलकर कुलाचें मारता हुआ भाग गया। उसके पीछे उसके डरे हुए अनुयायी भी रफूचक्कर हो गये।

बन्दूक थामकर काना उस स्थानकी ओर लपका, जहाँपर हिरन पहले खड़ा था। दस गज़ आगे उसे खूनसे सनी बालू मिली और पचास गज़ आगे खोजसे मालूम हुआ कि हिरनकी पिछली टाँग घायल हो गई है। प्रसन्नतासे वह उछल पड़ा। उसने सोचा कि वह हिरन उसका हो चुका। क्या वह अपने दलका सबसे तेज़ दौड़नेवाला व्यक्ति न था? क्या उसने बिना घायल इलैंटको बीसियों बार भगा और थकाकर नहीं पकड़ा था? तब घायल इम्पाला उससे कैसे निकल सकता था, और फिर जब उस हिरनकी प्राप्तिपर उसका जीवन निर्भर था? उस हिरनपर तो वह जीवनकी बाज़ी लगा चुका था, इसलिए आँखोंको खोजपर गाड़े और कुछ झुके हुए दुल्की चालसे वह दौड़ने लगा। भोजन और पानीकी उसे कोई चिन्ता न थी। दोपहरका खाना खा चुका था और दो दिनके लिए पानी और जंगली फल काफ़ी थे। वह अभी एक घंटा ही अपनी खोजपर दौड़ा होगा कि रातने दिनके कपाट बन्द कर लिये। कानाको रुकना पड़ा; पर उसको इस बातकी चिन्ता न थी। अगले दिन उषाकालमें ही वह खोजपर चलेगा और सूरज डूबने तक अभीष्ट हिरन उसके हाथ लग जायगा—यह विचारकर कानाने आग जलाई और अपने पासवाली खालको वह देहसे लपेटकर बैठ गया। बैठा हुआ वह—ध्यानावस्थित—लौकी ओर टकटकी लगा रहा था, मानो उस प्रज्वलित प्रकाशमें सिकासीकी मधुर मुसकान देख रहा हो और कानोंसे अपने भावी बच्चोंकी हँसी सुन रहा हो।

विरहीको नींद कहाँ? काना नाममात्रको सोया और प्रातःकाल फिर खोजपर दुल्की चालसे चलने लगा। उस चालसे वह—आवश्यकता पड़नेपर—दिन-भर जा सकता

था।* दो-एक मील चलनेके बाद कानाको मालूम हुआ कि वह हिरन झुण्डसे अलग हो गया है और उस ओर गया है, जिस ओर उसके साथी पड़ाव डाले हुए थे। यह तो उसके लिए और भी अच्छा था। भगवानकी यह तो विशेष कृपा हुई। उसके मित्र उसी दिन प्रातःकाल उससे मिलने आनेवाले थे और ख़ूनकी खोज पाकर वे उसकी—कानाकी—खोजमें आयेंगे; पर यदि हिरन उसी भाँति, उसी दिशाको, चलता रहा, तो वह पड़ावके बहुत निकट पहुँच जायगा। फिर पड़ाव पर मांस ले जानेमें उसे बहुत कठिनाई भी न पड़ेगी। दूसरी बात—जिससे उसकी प्रसन्नता और बढ़ गई—थी हिरनका झुण्डको छोड़ देना। जब हिरन बहुत घायल हो जाता है, तब वह झुण्डकी गतिसे नहीं दौड़ सकता, इसलिए वह उससे हटकर अलग हो जाता है। कानाके हिरनकी भी यही बात थी, इसका प्रमाण आगे मिला। दस मील बाद कानाके कई स्थानोंपर बैठनेसे दबी और ख़ूनसे सनी हुई घास मिली। हिरन वहाँ दम लेनेके लिए बैठा था। सफलता शीघ्र ही मिलेगी और सिकासीको वह अपनी कह सकेगा—इस ख़यालसे कानाका हृदय बल्लियों उछल रहा था। उसने अपनी बन्दूक और भालेको और भी मज़बूतीसे पकड़ा। हिरनके अन्तिम बार बैठनेके स्थानसे दस मील और आगे उसे अपनी चीज़ मिली—पर मुर्दा हालतमें। उसकी प्राप्तिके साथ उसकी आशा—

---

* अर्थात् दिन-भरके १३ घंटोंमें १०० मीलके लगभग हुआ। संसारका सबसे तेज़ दौड़नेवाला फ़िनलैण्डका नुरमी है। संसारके ओलम्पिक खेलोंमें वही अव्वल आता है; पर उस संसारमें बेचारे अफ़्रीकाके वीर काले आदमी नहीं हैं। अफ़्रीकामें नुरमी-जैसे सैकड़ों ही आदमी होंगे।—लेखक

प्रणयपूरित आशा—निराशामें परिवर्त्तित हो गई और साथ ही क्रोध-ज्वाला जाग उठी।

जिसकी खालके लिए उसने देवी-देवता मनाये, जिसकी प्राप्तिके निमित्त उसने इतनी तपस्या की ; भूखा-प्यासा निर्जन वनमें पड़ा रहा और जिसकी खाल ले जाकर सिकासीको भेंट करता—वह विकृत और अधखवा पड़ा था। फटी खाल—सो भी टुकड़े—किस कामके थे ! अधखवे हिरन और उसकी लाशकी खोजसे मालूम हो गया कि कानाके साथ किसीने धूर्त्तता की है। उसके शिकारपर किसीने डाका डाला है ? डाकू सिंह था। उषाकालमें जब काना कुछ प्रकाशकी प्रतीक्षामें था, तभी उसके खोजपर चलनेसे पूर्व किसी बड़े सिंहने घायल इम्पालाको धर दबाया और कानाके करे-धरेपर पानी फेर दिया ! पर क्या उसके किये-करायेपर पानी फिर गया था ? इस विचारके आते ही उसे ख़याल आया कि उसने किसी बुशमैनको अकेले सिंहको मारते नहीं सुना। कम-से-कम उसके प्रतिद्वन्द्वीने तो कभी मारा ही नहीं। यदि वह सिंहका पीछा करके उस लुटेरेको मार डाले, तो कैसा रहे ? सिंहने भर-पेट दावत खाई है, इसलिए वह बहुत दूर न गया होगा। "यदि मैं स्वयं सिंहको मारकर उसकी खाल सिकासीके पास ले जाऊँ, तो कैसा ? क्या वह इम्पालाकी खालके बदले उसे स्वीकार न करेगी ?"—ये विचार उसके मनमें आये। साथ ही सिंहने उसके मांसको चुराया था, और जो बुशमैनके मांसको चुराता है, वह जीवित नहीं रह सकता—चाहे वह आदमी हो या सिंह। कानाकी बन्दूक़ भरी तो थी ही। बस, क्रोध और आशाकी वह छोटी-सी मूर्ति, खूँख्वारीके साथ, सिंहकी खोजपर हो ली। बड़ी सावधानीसे खोजके मार्ग में

आनेवाले घासके प्रत्येक समूह और प्रत्येक झाडीकी छानबीन करता हुआ वह तेज़ी, पर निस्तब्धतासे चलने लगा। सिंहकी खोज भी उसके साथियोंके पड़ावकी ओर थी; पर उसकी उसे अब क्या चिन्ता थी, क्योंकि मांस तो उसे उधर लादना ही न था।

दो घंटे खोजनेके बाद वह एक टीलेके पास पहुँचा, जो घनी झाड़ियोंसे आच्छादित था। उसने अपनी गतिको धीमा और नज़रको खूब सावधान कर दिया। उसे इस बातका विश्वास था कि उसका शत्रु वहाँ होगा। साँपकी भाँति रेंगकर बड़ी सावधानीसे वह उस टीले तक गया और चुपचाप उसपर चढ़कर चारों ओर देखने लगा। निगाह गड़ाकर जो देखा, तो उससे पाँच गज़की दूरीपर कुछ मटमैली खाल दिखाई दी। वह सिंह था। जैसे ही उसने अपनी बन्दूक उठाई, वैसे ही खुलती और बन्द होती हुई पीली आँखोंका एक जोड़ा उसकी ओर हुआ। उसी समय कानाने फ़ायर कर दिया।

फ़ायरकी प्रतिध्वनिके साथ गूँजनेवाली क्रोधपूर्ण गर्जना हुई और झाड़ियोंमें छटपटाहट। बिजलीकी चमककी भाँति काना एकदम मुड़ा और टीलेसे दो गज़ दूरीवाले पेड़की ओर लपका। बन्दूकको छोड़, पेड़पर कूद, वह तेज़ीसे ऊपर चढ़ने लगा। चढ़नेमें उसे पीछेसे सिंहकी झपटकी आहट सुनाई पड़ती जाती थी। कानाके पुष्ट पुट्ठे उसे छह—आठ—और दस फुट ऊँचे पेड़पर ले गये, और ज्योंही उसने और ऊपर चढ़नेको एक शाखा पकड़ी, त्योंही उसे ऐसा मालूम हुआ, मानो गरम-गरम तेज़ चाकुओंसे किसीने उसकी कमर और नितम्ब चीर दिये हों। सिंह नीचेसे उछला था और उसके अगले पंजे कानाकी कमर पर पड़े थे। चोट और पीड़ासे

कानाके हाथ पेड़की पकड़से ढीले हो गये, और वह नीचे गिरनेसे बाल-बाल बचा। उसकी कमर, नितम्ब और रान उधड़ गई थी। जैसे ही काना कुछ ऊपर—चौदह फुट ऊपर—एक शाखापर बैठा, वैसे ही उसकी पीठ और टाँगोंपर से खूनके परनाले वह निकले। नीचे सिंह उचक और कूदकर उसे पकड़नेकी वृथा चेष्टा कर रहा था। अन्तमें शेर कानाको अपनी पहुँचसे दूर पाकर गुर्राता हुआ वहीं पड़ रहा। थोड़ी देर बाद सिंहके गुर्रानेमें कराहनेकी ध्वनि भी आने लगी, जिससे कानाको ज्ञात हुआ कि सिंह भी कष्टमें है। एक—सिंह—घायल नीचे पड़ा था और दूसरा—काना—घायल दो चोटोंसे—नयन-बाण और सिंहनखसे घायल—ऊपर पेड़पर टँगा था। अपनी पीड़ाके होते हुएभी सिंहकी पीड़ासे कानाको कुछ सन्तोष और आनन्द मिला।

थोड़ी देर बाद सिंह उठा और एक पेड़की छायाकी ओर चला, जो वहाँसे बीस गज़ दूर था। अपने आसनसे कानाने सिंहकी गति देखी। सिंह धीमे चल रहा था और कभी कभी लड़खड़ाता भी था। कुछ चलकर सिंह पीछे मुड़कर कानाकी ओर देखता भी था, मानो उसने कानाके पकड़नेकी आशा अभी न छोड़ी हो; पर गोलीने सिंहके पेट और तिल्लीको भून-सा दिया था और अपनी पशुबुद्धिसे उसे भासने लगा था कि बस अब उसके आखेटके दिन समाप्त हो गये! कानाने सिंहको पेड़के नीचे गिरते देखा। इस समय उसे एक विचित्र और भीषण बात सूझी। कमज़ोरी बढ़ रही थी, और उसका सिर घूम रहा था; पर उसने पेड़से उतरकर अपने शत्रुका अन्त करना चाहा। वह जानता था कि उसके साथी उसकी खोजपर आ रहे होंगे। यदि वे आ गये और सिंहको उन्होंने मार दिया, तो

"नीचे सिंह उचक और कूदकर उसे पकड़नेकी वृथा चेष्टा कर रहा था।"

सिकारी जो समाचार सुनेगी, वह यह होगा कि काना अपने शिकारमें असफल रहा और उसके साथियोंने उसकी जान बचाई। कानाके लिए कितने अपमानकी बात होगी—यदि उसकी प्रेयसी उसके विषयमें ऐसा समाचार सुने। उसने अकेले ही सिंहको चुनौती दी थी, और अकेला ही वह उसे मारेगा या मरेगा—ऐसा उसका दृढ संकल्प था।

काना यह भी जानता था कि एक बार पेड़से उतरकर फिर वह उसपर नहीं चढ़ सकेगा, क्योंकि पेड़की छाल और चिथड़ोंसे बँधे होनेपर भी उसके घावोंसे खूनकी धार बह रही थी, और—खूनकी कमीसे—उसे गहरी नींद सी लग रही थी; पर काना उस तन्द्राको टालता हुआ इस घातमें रहा कि सिंह कब विद्युत-गति—आक्रमणके लिए अयोग्य हो। दो जीवों—जंगली पशु और दूसरा जंगली आदमी—के बीच सहनशक्तिकी परीक्षा थी। यद्यपि सिंहकी अपेक्षा कानाकी शक्ति तुच्छ थी, तथापि वीरता और चालाकीमें वह भी पुरुष-सिंह था।

सूर्य-किरणें जब तिरछी पड़ने लगीं, तब कानाने सिंहकी लम्बी कराहट सुनी। साथ ही वह अपनी बगलके बल पसर गया, कभी-कभी उसकी पिछली टाँगें छटपटा जाती थीं, मानो वह अपने पिछले पंजोंसे अपने पेटको जान बूझकर खरोंच रहा हो। कानाके क्लान्त मुखपर सुखकी एक आभा झलक गई, और वह समझ गया कि अब उचित घड़ी आ गई। सिंह वैसे भी मर जाता; पर अपनी मृत्यु-वेदनामें वह वहाँसे कहीं दूर जाकर मरा तो? जब तक कानाके होश दुरुस्त थे और उसमें अणुमात्र भी शक्ति शेष थी, तब तक वह सिंहकी मौतके बारेमें किसी प्रकारकी अनिश्चिन्तता नहीं होने देनेका।

घीमेसे पेड़पर से उतरकर कानाने अपनी बन्दूक उठाई। वह उसे भर और टोपी चढ़ाकर बडी सावधानीसे शत्रुकी ओर रेंगा। सिंहसे छह क़दमपर वह रुका और घुटनोंके बल बैठकर निशाना ठीक किया। गुर्राहटके साथ सिंह लड़खड़ाकर उठ खड़ा हुआ; पर उसके आक्रमणसे पूर्व बन्दूक दाग दी गई थी। भारी गोलीसे सिंहके हृदयके टुकड़े-टुकड़े हो गये, और सिंह-हृदय-विच्छेदसे कानाका हृदय सिकासीके हृदयसे जुड़ गया। बस, वह यही चाहता था। सिहको उसने गिरते देखा ओर बन्दूकके धक्केसे उसे भी मूर्च्छा आ गई। थोड़ी देर बाद जब मूर्च्छा जगी, तब उसने सिंहको मरा पाया। अब कानामें बैठने तककी शक्ति न थी। इस समय वह चाहता था कि किसी प्रकार सिकासी यहाँ आकर उसका पवित्र प्रेम देख सके।

अब एक और कठिनाई सामने आई। सिंहकी खाल यदि शीघ्र ही नहीं काढ़ी गई, तो सड़ने लगेगी, और सड़ी खाल सिकासीके पास कैसे ले जाई जा सकती है! कानाने कातर दृष्टिसे डूबते हुए सूर्यकी ओर देखा, और अनुपम सहिष्णुतासे चाकू निकालकर वह सिंहकी खाल खींचने लगा। खूनकी कमीसे मूर्च्छाका दौरा हो जाता था। हाथ काँप रहे थे। दो-चार इंच खाल निकालनेके बाद उसे विश्रामके लिए रुकना पड़ता था। पर सहिष्णुता और धैर्यकी भी सीमा होती है। काना घंटों पूर्व उस सीमाका उल्लंघन कर चुका था। खाल निकालनेमें एक बार उसके हाथ आवश्यकतासे अधिक हिले। प्रकृतिने अपने नियमका पालन किया, और काना काँपकर सिंहपर गिर गया।

* *
*

गोधूलीके समय कानाके साथियोंने उसे सिंहपर बेहोश पड़े पाया। उस दिन प्रातःकालसे ही वे उसकी खोजमें थे, और अधखवे इम्पालाको देखकर वे समझ गये थे कि काना सिंहके पीछे गया है। आगे बढ़कर उन्होंने वह भयानक दृश्य देखा। झटपट साथियोंने कानाके मुँहमें पानी डाला और जंगलसे जडी-बूटी तोड़कर उसकी मरहम-पट्टी की। रात-भर वहीं तीमारदारी करके प्रातःकाल वे उसे पड़ावपर ले आये।

सिकासीसे जब कहा गया कि कोई भी मूर्ख इम्पालाकी खाल प्राप्त कर सकता है, और पैसेवाला गुलाम तक उसे खरीद सकता है; पर काना-जैसा वीर पति उसे नहीं मिल सकता, तब सिकासीने कुछ उत्तर नहीं दिया, वरन् उसने अपने रसीले नयन नीचे कर लिये। कानाका वह प्रेमोपहार अवश्य स्वीकृत हुआ होगा। प्रमाण? सिकासीके दो गवाह—नयन—कानाके पक्षमें थे। काना उसकी आँखोंमें समा चुका था।

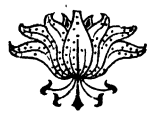

बदला

मानव-हृदय, महासागरके जलके समान, प्रत्येक देशमें समान ही है। विरोधात्मक भावनाएँ तो महासागरकी तरंगोंके समान हैं, जो आपसमें लड़-भिड़कर फिर एक हो जाती हैं। जब मानव-समाजका स्रोत एक है, तब वास्तविक गुण भी एक हुआ। हाँ, परिस्थितिके कारण सत, तम और रजके अंशोंमें भेद अवश्यम्भावी है। अवस्था अथवा स्थितिके कारण किसी गुण-विशेषका प्राधान्य हो जाता है, इसीलिए प्रत्येक समाजमें भले और बुरे दोनों प्रकारके व्यक्ति पाये जाते हैं, और इसी कारण प्रेम, द्वेष तथा सिद्धान्तके लिए मर-मिटनेकी अकांक्षा और स्त्री पुरुषका पारस्परिक प्रेम किसी समाज-विशेष अथवा देश-विशेषकी बपौती नहीं हैं, और न इनका सम्बन्ध अमीरी और ग़रीबीसे है। गोरे और काले, पीले और भूरे चमड़ोंके भीतर भगवानकी एक ही निधि—हृदय—छिपी हुई है। वे लोग बड़ी भूल करते हैं, जो मानव-समाजके मूल स्रोतको भूलाकर बाह्य आडम्बरको ऊँच नीचकी कसौटी बनाते हैं।

* *
*

दक्षिण-पश्चिमी अफ़्रीकाके उतरी भागमें, ज़म्बज़ी नदीके निकट-वर्ती प्रदेशमें, मसूबिया नामक एक अफ़्रीकन जाति रहती है। यह जाति अपनी भीरुताके लिए बदनाम है; पर असभ्य और कायर कही गई मसूबिया-जातिके लोग अपने भरण-पोषणके लिए खंजर और भाले चलानेमें प्रवीण हैं और शायद सभ्य लोगोंसे कहीं अधिक

ईमानदार हैं। जंगलमें जैसे हिरन, बाघ और बन्दर विहार करते हैं, वैसे ही वे भी वहाँ स्वच्छन्दतापूर्वक विचरते हैं। परमात्माकी एक सृष्टि है। हाँ, उन्हें यह नहीं आता कि वे अपने प्रदेशको छोड़कर दूसरोंकी रोटी छीनें, अथवा अपने रीति-रिवाजको दूसरोंसे मनवावें। यह काम तो आजकल सभ्य कहलानेवाली जातियोंका ही है!

अबसे आठ नौ वर्ष पूर्वकी बात है। प्रसिद्ध अंग्रेज शिकारी चैडविक मसूबिया-जातिके लोगोंके एक गाँवके समीप जाकर ठहरे। चैडविक महाशय अपने शिकारकी मुहिमपर थे। सायंकालको वे अपने तम्बूमें बैठे थे कि गाँवके समीपसे आतंक-जन्य कोलाहल सुनाई पड़ा। तम्बूसे बाहर आये, तो देखा कि गाँवकी स्त्रियाँ झीलके पनघटसे बिलखती, चिल्लाती और डरी हुई गाँवकी ओर भागी आ रही हैं। उनकी चिल्लाहट सुनकर गाँवके आदमी पनघटकी ओर बढे। चैडविक महाशय भी कौतूहलवश उधर गये। जाकर देखा, तो मालूम हुआ कि एक नवयुवतीको एक मगर पकड़ ले गया। घाटपर ज्योंही वह जलपात्र भरने झुकी—अभी घड़ने पानीको छुआ ही था—कि सामनेसे पानी फटा और मुँह फाड़कर एक मगर उसपर लपका। युवतीकी एक चीख़ निकली, और 'फच्च' शब्दके साथ मगर उसको लेकर गहरे पानीमें बैठ गया। उसका घड़ भी वहीं डूब गया, मानो उस मानिनीके बिना वह अपना मुँह दिखाना लज्जास्पद समझता था।

वह युवती हालमें ही विवाह सूत्रमें बँधकर मुतशिवी नामक व्यक्तिके यहाँ आई थी। अभी उसे अपने सुहाग-जीवनका कुछ विशेष अनुभव नहीं हुआ था। पेड़का सहारा पाकर जिस प्रकार बल्लरी दिन दूनी और रात चौगुनी बढ़ती है, उसी प्रकार अपने नवीन सहारे

मुतशिवीको पाकर उस युवतीके नवीन जीवनमें कोंपलें निकली थीं ; पर मुतशिवीके घरकी वह जगमगाती ज्योति मनहूस मगरने बुझा दी ! मुतशिवीको जब यह समाचार मिला कि मगर उसकी प्रियतमाको ले गया, तब वह एकदम विवेकशून्य-सा हो गया, और दोनों हाथोंसे अपना सिर पकड़कर सिसक-सिसककर रोने लगा। इस विपत्ति-वज्रपातकी उसे स्वप्नमें भी आशंका न थी। अकस्मात् उसकी जीवन-नौका डूब गई। इस समय वह अपने-आपको मुर्देसे भी अधिक तुच्छ समझ रहा था। आखिर ध्येयहीन तथा सुखहीन जीवनसे क्या लाभ ? इसी मर्मस्पर्शी संकटकी चोटसे वह कुछ देर बेसुध-सा बैठा रहा। थोडी देर बाद उसकी आकृति बदली। झुका हुआ सिर ऊपरको उठा। हाथोंको उसने घुटनोंपर रखा। उसकी आँखें अध-निकले आँसुओंको निगलने लगीं। मेघवर्ण ललाटके नीचे अंकित आँखोंमें बिजली चमकी, और खड़े होकर वह गरजा—"वह मगर मूर्ख है ! उसने मेरी स्त्री—नेमातुशा—को मारा है, और अब मैं—मुतशिवी—उसे मारूँगा ! वह कल मरेगा !"

मुतशिवीकी ऐसी प्रतिज्ञा तो उचित थी। पर चैडविक महाशयकी समझमें यह न आया कि वह उसे पूरा कैसे करेगा, इसलिए उसने कहा—"देखो मुतशिवी, वह मगर—जैसा कि तुम कहते हो—अवश्य मरेगा ; पर तुम एक फन्दा लगाओ, मैं उसे तुम्हारे लिए मार दूँगा।"

मुतशिवी—"नहीं मालिक, यह नहीं हो सकता। फन्दा लगाऊँगा और मैं स्वयं ही उसे मारूँगा। मगरने मेरी कुटियाका दीपक बुझा दिया है, उसे ज्योतिहीन कर दिया है, अब

मैं अपने हाथसे उसका जीवन-प्रदीप बुझाऊँगा। या तो यह होकर रहेगा, या फिर मैं नेमातुशाका अनुगामी हूँगा।"

मुतशिवीके दृढ़ निश्चयको सुनकर चैडविकके आश्चर्यकी सीमा न रही। उन्होंने पूछा—"आखिर तुम बदला कैसे लोगे? उसकी योजना क्या है?"

मुतशिवी—"सूर्योदय और सूर्यास्तके समय प्रतिदिन पानीके किनारे कुत्ता बाँधूँगा और पास ही छिपकर बैठ जाऊँगा। इस तरकीबको मैं तब तक काममें लाऊँगा, जब तक मगर उसे पकड़ने न आवे। कुत्तेको पकड़कर मगर जैसे ही पानीमें जायगा, मैं भी उसीके पीछे कूद पड़गा और अपने खंजरसे उसे मार डालूँगा।

चैडविकने मुतशिवीको बहुत-कुछ समझाया कि खंजरकी अपेक्षा गोली कहीं अधिक कारगर है। गोलीसे मारनेमें अपनी जानका भी कोई खतरा नहीं है। खंजरकी चोट पड़ी-न-पड़ी, और फिर पानीमें मगरकी शक्तिका क्या ठिकाना! यदि मगरको तनक भी चोट लग गई, तो रूकमें उसे कुत्तेके साथ आदमीका मांस और मिलेगा। चैडविकने मगर मारनेके लिए मुतशिवीको अपनी रायफल तक देनेका आग्रह किया; पर वह टस-से-मस न हुआ और उत्तेजित होकर उसने कहा—"यदि मैंने उसके गोली मारी और गोली खाकर कहीं वह डूब गया, तो मुझे यह कैसे मालूम होगा कि मैंने उसे मार दिया? हाँ, यदि मेरे खंजरपर उसका खून लग जायगा, और यदि मैं उसके पेटको सम्पूर्णतया चीर सकूँगा, तो मुझे ज्ञात हो जायगा कि मैंने उसका बध कर डाला।"

मुतशिवीका खंजर चौड़े फलवाला था। उसकी धार इतनी पैनी थी कि उससे मगरके पेटको फाड़ना कुछ कठिन बात न थी; पर मगरके

पेटके नीचे पहुँचनेकी समस्या थी। चूहे यदि बिल्लीके गलेमें घंटी बाँध दें, तो धोखाधड़ीसे बिल्ली चूहोंको नहीं पकड सकती। पर म्याऊँका मुँह पकड़ना बड़ा कठिन है। अमुक बात होनेसे अमुक बात होगी—ऐसी कोरी बातें करनेसे कुछ नहीं होता। पानीमें मगरके पीछे कूद और उसके पेटके नीचे पहुँचकर उसे फाड़ देना कुछ असम्भव-सा था। शेरको उसकी माँदमें जाकर रस्सेमें बाँधनेके समान था। हाँ, एक बात तो थी। मुँहमें कुत्ता पकड़ हुए मगर उसे तब तक नहीं काटेगा, जब तक कि खंजर उसके न भोंकी जाय। प्रशान्त महासागर-स्थित साउथ-सी टापूके निवासी शार्कको तो इसी प्रकार मारते हैं; पर मगर तो शार्क नहीं है और न मुतशिवी वहाँका निवासी। बहुत-कुछ समझाये जानेपर भी मुतशिवी अपने निर्णयपर अटल बना रहा। उसके हृदयमें स्वयं बदला लेनेकी भावना और उसके फलको निश्चित रूपसे जान लेनेकी प्रबल इच्छा हिमालयके समान अचल और विशाल थी। वह अपने पथसे विचलित होनेवाला न था, इसलिए सायंकालको दर्शक-के रूपमें चैडविक भी उसके साथ छिपकर पानीके किनारे बैठ गये।

* *
*

उस सायंकालको और अगले दिन प्रातःकाल तक कोई विशेष बात न हुई। ज़म्बज़ीकी सहायक क्वैंडो नदी द्वारा बनाई गई उस झीलके किनारे मुतशिवी छिपा बैठा था। उसके आगे पानी-के बिल्कुल समीप कुत्ता बँधा था। मुतशिवीकी आँखें उन आँखोंकी खोजमें थीं, जिनकी ज्योतिको वह बुझाना चाहता था। बगला और

ढेंक किनारेपर आते थे। कुछ अपना चुगा खोजकर और कुछ पाकर उड़ जाते थे। कुत्तेने वहाँसे छूटकर भाग जानेके लिए अनेक प्रयत्न किये। खिंचकर, सिकुड़कर, अपने बंधनको दाँतसे काटकर और काँय-काँय करके वह थक गया; पर उसके बूते वे बंधन न खुले। दस-बारह मिनटके लिए कुत्ता चुप हो जाता और जीभ बाहर निकाले कातर-दृष्टिसे इधर-उधर देखता; पर उसे मुक्ति न मिलती। बलि-पशुकी मुक्ति जीवनसे मुक्त होनेपर भले ही हो, फिर वह तो नक्रदेव द्वारा बलि होनेके लिए ही बाँधा गया था। मुतशिवीकी साध तो तभी पूरी होती, जब उस झीलका आततायी उस कुत्तेको लेकर जलमग्न हो जाता।

प्रतीक्षा और सहिष्णुताका फल प्रायः मिलता ही है। सायंकाल को नरकलमें मुतशिवी जाकर बैठा ही था कि कुत्तेका भौं-भौं भौंकना एकदम कष्टपूर्ण काँय-काँयमें बदल गया। मगर कुत्तेके मुँहमें दबाकर गहरे पानीमें कूदा। उसकी बड़ी, काली और भयानक पूँछसे पानीका वह भाग मथ-सा गया और झीलमें झाग ही झाग दिखाई देने लगे। मगरके साथ-ही-साथ बिजलीकी भाँति एक दूसरा जीव भी पानीमें गिरा। वह मुतशिवी था। कितना विकट साहस! कितना दृढ़ संकल्प! उसके प्रेम और बदलेकी भावनाको कोई नाप सकता था! चैडविकको उसके निर्णयपर कुछ सन्देह था। उनका ख़याल था कि आवेशमें आकर मुतशिवीने लम्बी चौड़ी बातें बघार दी हैं। मगरकी विकराल आकृति देखकर वह सहम जायगा और पानीमें न कूदेगा। पर उसके पानीमें कूद पड़ने पर चैडविकने चुपचाप उससे अपनी भूलके लिए मानसिक क्षमा-याचना की।

मुतशिवी मगरको मारनेके लिए कूद पड़ा। प्रेमीके लिए जान देना कुछ कठिन बात नहीं है ; पर चैडविकके सम्मुख प्रश्न था कि मुतशिवी अपनी स्त्रीका अनुगामी बनेगा या उसके शिकारीका शिकार करेगा। वह इसी उधेड़बुनमें थे कि थोड़ी देरमें ही मगरकी थूथड़ी पानीके बाहर निकली। उसके मुँहमें कुत्ता था। मगरने झीलके दूसरे किनारेकी ओर जानेकी कोशिश की ; पर उसकी यह गति तो ग्राह-स्वभावके विपरीत थी, क्योंकि मगर अपने शिकारको पकड़कर उसको डुबानेकी खातिर नीचे पानीमें बैठ जाता है। अपने शिकारको लेकर पानीमें डूबकर तुरन्त ही किनारेकी ओर जलसे बाहर जानेका अर्थ था कि कोई अवांछनीय वस्तु उसके नैसर्गिक दुर्ग—गहरे पानी—में थी, जिससे विचलित होकर वह खुश्कीकी ओर जानेकी चेष्टा कर रहा था। घरमें जब आग लगती है, तब बाहरको ही तो भागते हैं। कभी-कभी मनुष्य तकके लिए उसके जातिवाले वन-पशुओंसे भी अधिक क्रूर हो जाते हैं। ऐसी दशामें मनुष्य उनकी सूरत तक देखना पसन्द नहीं करता। फिर वह तो मगर था। कुछ गड़बड़ हुई होगी। मुतशिवीने अपने पैने खंजरको रक्तदान कराया होगा। मगर चाहता तो वह मुतशिवीको उसकी प्रियतमाके पास पहुँचाकर उसीके स्थानपर दफ़ना सकता था ; पर उसके मुँहमें तो रसगुल्ला—कुत्ता—रखा था। अपने स्वादिष्ट भोजनको उसने न छोड़ा। बहुतसे लोगोंको जानकी अपेक्षा जीविका अधिक प्यारी होती है। तिसपर मगरको यह समझ थोड़े ही थी कि उसकी जानका गाहक कोई वहाँ गया था। कुत्ता और बकरा वह पकड़ा ही करता था। एक दिन एक स्त्री पकड़ ली, तो क्या हुआ।

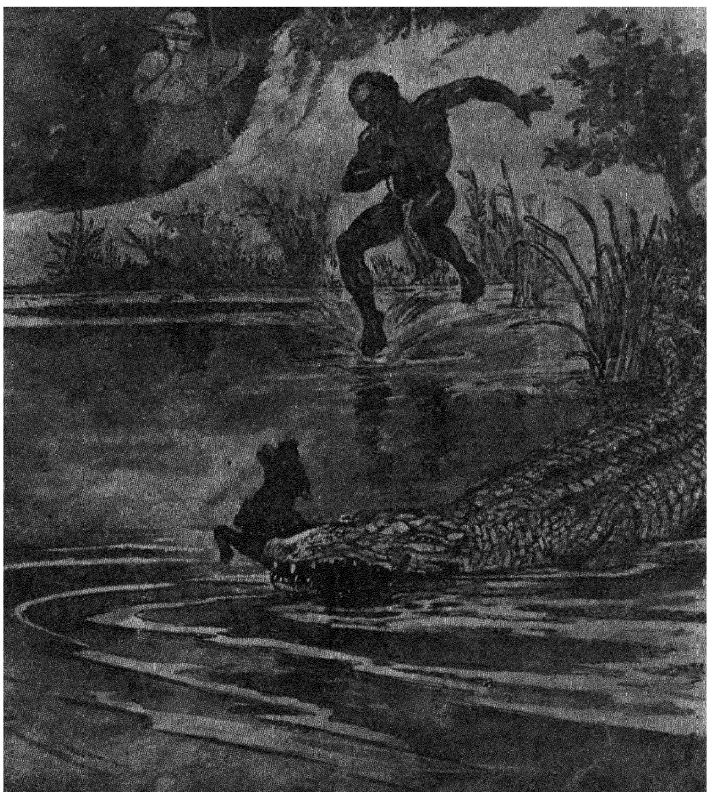

"मुताशिवी मगरको मारनेके लिए कूद पड़ा।"

कुत्तेको मुँहमें पकड़े ज्योंही मगर पानीके धरातलपर आया और दूसरी ओर किनारेकी ओर चलने लगा, त्योंही एक गोलाकार काली सी चीज़ पानीपर उछली। वह मुतशिवी था। एक निमेषके लिए वह बाहर निकला और फिर डूब गया। एक क्षण बीतने पर फिर मगर ऊपरको तड़पा और पानीके धरातलसे आधा उठ गया, और अपने कठोर जबड़ोंसे कुत्तेको छोड़ दिया। मगरके आसपास चारो ओरका पानी रक्त-वर्ण था, मानो खूनके नल खोल दिये हों। मगरकी बगलमें मुतशिवी-भी दिखाई पड़ा। मगरने ज्यों ही कुत्तेको छोड़ा, मुतशिवी एकदम मुड़ा और किनारेपर बाहर आनेके लिए प्राणपणसे कोशिश करने लगा। अब उसे अपनी जानके लाले पड़े हुए थे कि कहीं मगर उसपर वार न कर बैठे; पर उसके किनारेपर आनेसे पूर्व ही मगर विलीयमान हो चुका था।

* *

"मुतशिवी, क्या तुम मगर तक पहुँच सके थे?" चैडविकने पूछा।

मुतशिवी—"मेरी खंजरकी धार देखो। मगरके मांसके छीछड़े अब तक इसपर चिपटे हुए हैं, और तनक झीलके पानीपर दृष्टि डालो कि वह कितना लाल है!"

चैडविक—"तो क्या मगर मर जायगा?"

आवेशमें आकर मुतशिवीने कहा—"वह तो मर चुका मालिक, कल इसी समय हम लोग उसकी खाल निकालेंगे।"

* *

अगले दिन सूर्यास्तसे दो घंटे पूर्व मगर उलटा—पीठके बल—झीलमें तैर रहा था। मुतशिवीके खंजरने उसकी स्त्रीकी जीवित कब्रको चीर डाला। डोंगियोंके सहारे मुर्दा मगर किनारेपर लाया

गया। नापा तो पन्द्रह फुट लम्बा निकला, और इस हिसाबसे आयुमें शायद सौ वर्षका होगा! पन्द्रह फुटका मगर साधारण मगर नहीं होता, और छिपकलीके-से थुथनीवाले (Snubnosed) मगरके लिए यह खासी अच्छी लम्बाई है। इतने बड़े और भयंकर मगरको गहरे पानीमें जाकर मारना साधारण बात नहीं है। और न इससे यह ख्याल करना चाहिए कि हरएक इस प्रकार मगरको मार सकता है, या मनुष्यभक्षक मगरका मारना इतना सरल है।

मगरका पेट फाड़ा गया। भीतरसे और चीज़ोंके साथ स्त्रीके गहने, अधगली टाँगें और केश निकले। उनको पहचाननेवाला भी वहीं था। उन्हें देखकर मुतशिवी फूट-फूटकर रोने लगा। विकृत तथा अधगले शरीरने मुतशिवीके सम्मुख उसके सुखमय गार्हस्थ्य-जीवनका चित्र खींच दिया। उसके हृदयका ज्वालामुखी धधकने लगा, और इस ज्वालामुखीके दो मुँहों (Crater) से आँसू लावाके रूपमें निकलने लगे। हिचकियोंसे उसका शरीर काँप रहा था और अश्रु-धारा बह रही थी।

* *
*

उन आँसुओंसे उसने अपनी स्त्रीको अश्रु-अंजलि दी; पर विरह का ज्वालामुखी उसके हृदयमें जलता ही रहा, और वह उसके जीवन-भर जाग्रत रहेगा। उसे केवल एक सन्तोष और अभिमान है कि उसने अपनी प्यारीके खूनका 'बदला' खूनसे लिया। वह बदला था या नहीं—यह कहना कठिन है; पर मुतशिवीको उस बदलेसे कुछ सान्त्वना जरूर मिली और उसका स्नेह अपनी मृत पत्नीके प्रति और भी गाढ़ा हो गया।

चट कर गई थी, इसलिए जो कुछ चारा बचा था, उसकी खासी रखवाली करनी पड़ती थी। सिंचाईके लिए प्रातःकालसे सायंकाल तक बैल और आदमी लगे रहते थे, और तड़के ही खेतोंमें से चारा लाकर और कूटकर तब कुआँपर लोग जाते थे। ध्रुवकी भाँति यह नियम गाँवमें अटल है। प्रतिदिनकी भाँति बल्टीगढ़ गाँव का एक जवान आदमी अपने खेतमें चारा काटने गया; पर ज्योंही वह खेतमें घुसना चाहता था कि दूसरी ओर मेंड़के किनारे उसे कोई घोड़ा-सा जानवर बैठा दिखाई दिया। उसे देखकर युवा किसान बहुत चिढ़ा और ख़याल किया कि घोड़ा खेत खाकर धूपमें आनन्दसे बैठा है। खेतमें से ३-४ पत्थरके टुकड़े उठाकर और गालियोंकी बौछार करता हुआ—जिसमें किसान बड़े प्रवीण होते हैं—वह उस कल्पित घोड़ेकी ओर गया और कुछ दूर जाकर एक पत्थर फेंककर मारा और लगा देने गालियाँ। पत्थर उस जानवरको लगा नहीं; पर उसके पास जाकर गिरा।

जानवर उठा और गुर्राया। "अरे जि चरखा ऐ कै (अथवा) लिरिया (भेड़िया) ऐ!" कहकर किसान कुछ सहमा और फिर "जाती ना बितै" (उधर जाता नहीं) कहकर एक पत्थर तानकर मारा, जो उस "चरखा या लिरिया"के लगा। फिर क्या था। बिजली सी चमकी। तीन कुलाचोंमें शेर आ गया।

* *
*

किसानकी लाश पड़ी थी और उसके चारों ओर आदमी जमा थे। उसकी स्त्रीका वैधव्य-रुदन हृदयमें धक्के मारकर आँसुओंके फाटक खोले देता था।

लाशमें तीन-चार गहरे छुरेके से घाव थे और कमर टूटकर भुर्ता हो गई थी। एक आँख बाहर निकल आई थी। कौन-से जानवरने इसे मारा है? किसीकी समझमें न आता था। सूअरकी चोट थी नहीं, क्योंकि बराह भगवानसे तो लोग अनभिज्ञ न थे; पर शेरका उन्हें स्वप्न भी न था। पर, सत्य बात कभी-कभी गल्पसे भी अधिक आश्चर्यपूर्ण होती है।

* *

*

अगले रोज़ कुछ दिन चढ़े लोगोंको मालूम हुआ कि एक दूसरे गाँवके पास जुआरके झुओं (जुआरकी पुलियोंका पुंज) के निकट शेर बैठा है। चारों ओरके गाँवोंमें हू-हल्ला मचा और आदमी शेरको देखने आने लगे।

संसारके बड़े-बड़े कार्य प्रायः हृदय कराता है। एक प्रकारसे संसार भावनाओंका पुंज—समूह है। भावनाएँ ही संसारको क़ायम रखे हुए हैं। मस्तिष्क से भी कार्य होते हैं। पर, वीरता, साहस, दूसरों के लिए बलि चढ़ जाना ये सब हृदयकी हिलोर और इकके बाह्य रूप हैं। संसारकी कविताका सोत मन नहीं, हृदय है।

इसी प्रकार अज्ञान भी मनुष्यसे ऐसे काम करा बैठता है, जिन्हें कोई समझदार आदमी नहीं कर सकता। ज्ञानका उद्गम भी तो मस्तिष्क ही है। इसीलिए तो अज्ञानी, प्रेमी और कविको शेक्सपियरने एक ही कोटिमें रखा है:—

The lunatic, the lover and the poet,
Are of imagination all compact.

मुझसे कोई कहता कि शेरको जाकर मार दीजिये, तो मैं किसी पेड़पर चढ़कर फ़ायर करता। किसी गुप्त स्थानसे शेरकी नज़र बचाकर फ़ायर करता। क्यों? इसीलिए कि अब शिकारका अनुभव है। शेरकी शक्तिका पता है। बालक अज्ञानवश साँपको पकड़नेके लिए हाथ बढ़ा सकता है; पर बड़ी उमरवाला नहीं। इसीलिए लोधे-लोग शेरको योंही मारनेको तैयार हो गये। और वह शेर क्या कुत्ता था, जो योंही बैठा रहा! शेर डटा बैठा था। लोग उसके मारनेकी तैयारी कर रहे थे। आखिर एक ठस्सा बन्दूक आई और बन्दूकवालेके साथ उसकी सेना भालों तथा गड़ासोंसे सुसज्जित थी। शेर साहब बैठे थे—"ज़मीं जुम्मद न जुम्मद गुलमहम्मद।"

लोग शेरके ३० गज़के लगभग पहुँच गये। बन्दूकवाला कभी दायें घुटनेपर बैठता और कभी बायेंपर। "हाँ, चलावतूं। हुसियार हैजैओ भैया! ऐ तो लेउ।" धाँय। भाग्यहीन शेर इस नाटकको देखता ही रहा। समझता होगा कि यहाँ भी सरकस है। लोग उसे देखने आये हैं। पर गोली नाकमें लगी। बिल्लीके भागसे छीका टूटा। लोहागढी-ठस्सा-बन्दूककी गोली लगी; पर उसने शेरकी नाक ही तोड़ी। गहरी न गई; पर फिर-भी थी तो गोली। शेर तड़पकर गर्जा और उछला, और उछलकर जुआरके झुओंमें फँस गया। इतनेमें तो 'तू चल' और 'मैं चल' मच गई। "हाँ, निकलने न पावे। मार, औ धर्मजीता। मार—रे के। और बतसियाके भानजे मार...रे के, गड़सा ही गड़सा।" थोड़ी देरमें शेरका सारा शरीर भालोंके घावोंसे छलनी हो गया।

अब उस बन्दूक चलानेवालेका मिजाज सातवें आसमानसे भी ऊपर था। उसने तो अपने आपको अर्जुन ही समझ लिया।

* *
*

लट्ठों भालों और गड़ासोंसे दुर्गति-प्राप्त शेर लौरीपर लाद कर कलक्टर साहबके पास ले जाया गया। भाग्यसे कलक्टर मिले नहीं। गाँवोंमें शोर मच गया कि इनाममें बन्दूक और जागीर मिलेगी ; मानो युद्धमें उन लोगोंने ब्रिटिश-राज्यको बचाया हो!

लौटकर आये, तब तक खाल सड़ने लगी। दुर्गन्धसे उसके पास तक न खड़ा हुआ जाता था। अन्तमें कुल्हाड़ियोंसे उसका सिर काटा गया और एक पेड़से लटका दिया गया। 'न दें कलक्टर साहब इनाम ; पर नाहर तो हमने मार ही लिया।'—सन्तोषके लिए वह बन्दूक चलानेवाला लोगोंसे यह कह दिया करता था।

* *
*

असलमें बात यह थी कि किसी सरकसका शेर छूट गया होगा। सरकससे निकल भागनेके पश्चात् बन्दी शेर पहले मनमाना चला होगा। फिर किसी प्रकार पेट भरता हुआ वहाँ आ निकला। छोटेपनसे कटहरेमें बन्द रहनेके कारण उसे बहुत चलनेका अभ्यास न था, और न उसे आदमियोंसे झिझक थी। आदमियोंकी भीड़ देखनेका अभ्यस्त था, इसलिए जब आदमी एकत्र होने लगे, तब उसे कोई नवीन बात नहीं मालूम हुई। जंगली शेर और बाघ तो आदमीकी आहटसे दूर हो जाते हैं—आदमीकी गन्धके पास होकर नहीं निकलते। उन्हें तनक भी पता चले कि आदमी आ रहा है,

तो हटकर दूर हो जावेंगे, या छिप जावेंगे। चोट खाने या छेड़खानी करनेपर तो हज़ारोंमें हमला करेंगे, और इसी बातके तो शेर हैं। आदमख़ोर शेर, बाघको छोड़कर, बिना छेड़ख़ानीके किसी अदमीके पास नहीं फटकेगा। योंही अकस्मात् मिलनेपर, बच्चेवाली शेरनी या बाघिनको छोड़कर, कोई शेर या बाघ आदमीसे नहीं बोलेगा।

* *
*

पर उन लोधोंसे कोई कहे कि वह शेर पालतू था, तो वे थोडे ही माननेवाले हैं। और, क्यों मानें ? फिर कभी शेरसे उनका मुकाबिला थोड़ा ही होगा। उनसे यह कहना कि शेर या बाघके शिकारमें जान जोखममें होती है, मूर्खता है।

* *
*

मुझे एक बातका दुःख है—वह यह कि शेरकी मौत बड़ी अपमानजनक हुई। इसलिए नहीं कि वह बेचारे ग़रीब किसानोंको न मार सका ; वरन् इसलिए कि एक वीरके लिए इस प्रकार अपमानजनक मौत मरना शोभा नहीं देता !

शैतानी समूह

पिल्ला बैठा योंही खुजा रहा था कि पाससे उड़नेवाली मक्खीपर उसने झपट्टा मारा। भाग्यसे वह ख़ाली गया। अच्छा ही हुआ, क्योंकि पिल्लेने जिसे मक्खी समझा था, वह मक्खी न थी, वरन् राज-बर्र थी—जिसके डंकके मारे आदमीका हाथ कई दिनों तक बेकार हो जाता है। पिल्ला बहुत ही बेचैन था और खेलनेके लिए किसी चीज़को चाहता था।

उसके समीप चारों ओर भिन्न-भिन्न उमरके अनेक कुत्ते जंगलकी बेगरी छायामें सो रहे थे। मध्य-भारतके जंगलोंमें, झाड़ियों और घने पत्तोंके पेड़ोंकी कमी नहीं; किन्तु ग्रीष्ममें पेड़ोंकी पत्तियाँ गिरने लगती हैं, सो इस समय पत्तियाँ तपी पृथ्वीपर टप-टप करके गिर रही थीं। पेड़ोंकी छाया कम होती देख वे कुत्ते सरक-सरककर झाड़ियोंके नीचे आ रहे थे। कुत्तोंके कान खड़े थे। उनकी पूँछ काली थी, और बग़लें तथा पीठ लाल और पेट कुछ पीलापन लिए हुए।

चढ़ती जवानीके जोशको रोकना कठिन है। इसलिए डेढ महीनेका पिल्ला, झुलसानेवाली सूर्य-किरणोंमें बैठा हुआ, खेलनेके लिए किसी साथीकी तलाशमें था। पर उसका कोई भाई-बहन खेलनेको राज़ी न हुआ। वह बैठा हुआ जीवनकी अकर्मण्यतापर कुछ सोच रहा था कि उसकी नज़र एक चलती परछाईंपर पड़ी। सूखी घासपर एक विचित्र जीव जा रहा था। वह आकारका भौंडा था। उसकी पीठपर कुब्ब था। भूरी और काली धारियाँ

उसकी बग़लमें थीं और रीढ़की हड्डीपर खड़े हुए बाल थे। उसकी मुखाकृति भयंकर थी, और उसके आतंकपूर्ण दाँतोंसे उसके मुँहपर गुर्राहटके चिह्न चिर अंकित थे। वह चरख (Hyena) था; भेड़ियाके बराबर बड़ा था—शेरसे अधिक दृढ़ जबड़ोंवाला, पर चूहेसे भी अधिक कायर।

डरावनी चाल-ढालसे उसने सोते कुत्तोंकी ओर देखा और चला गया। ज्योंही उसकी नज़र पिल्लेपर पड़ी, उसकी आँखोंमें क्रूर ज्योति आ गई। पिल्ला भी उठा। पर वह यह निश्चय नहीं कर पाया कि उसे उसपर गुर्राना चाहिए या उस अजनबीके पास जाकर खेलनेकी प्रार्थना करनी चाहिए। चरख भूका था और अनजान पिल्ला, जिसने मैत्री-संकेतसे पूँछ हिलाई, उसके लिए स्वादिष्ट ग्रास होता। पर चरखने उसके सोते हुए साथियोंकी ओर एक बार फिर देखा और अपने स्वभावके विपरीत इस नतीजे पर आया कि सोते कुत्तोंसे छेड़खानी अच्छी नहीं। चरख नहीं चाहता था कि पिल्लेको छेड़कर वह पूरे झुण्डका शिकार बने।

चरखने बुद्धिमत्ता की। उससे कहीं अधिक वीर जानवर जो एक चट्टानकी छायासे पिल्लेको देख रहा था, उसी नतीजेपर पहुँचा था। वह बाघ—तेन्दुआ—था, जो अति साहसी और वीर होता है, साथ ही कुत्ता खानेका शौकिन भी। पर बाघ अपनी शक्ति-सीमा समझता था, और वह कोई मूर्ख बाघ नहीं था। खुली लड़ाईमें वे छोटे जानवर, जो झाड़ियोंमें पड़े सो रहे थे, और गीदड़से छोटे ही होते हैं, बाघके सामने १०-२० होनेपर भी नहीं ठहर सकते थे। पर वह एक ही साथ ६ ७ दर्जनोंसे नहीं लड़ना चाहता था। और बाघको जो दिखाई पड़ रहे थे, वे तो जंगली कुत्तोंके दलका एक भाग ही थे।

जंगली कुत्ते भारतीय जंगलोंके सबसे अधिक भयानक और सब-से अधिक संहारक जीव होते हैं। यहाँ तक कि शेर भी उनसे भागता है, और यह उसका भाग्य ही समझना चाहिए, जो उनसे उसका पिण्ड छूटे।

यदि ये कुत्ते शेरको मारना चाहें, तो निःसन्देह वे उसे मार ही डालेंगे। वे उसका पीछा करेंगे, बिना एक सैकिंडके रुके हुए और बड़ी क्रूरताके साथ, दिनमें और रातमें भी, तपी भूमिपर, झुलसानेवाली धूपमें भी वे उसके पीछे लगे रहेंगे। वे उसको आराम नहीं लेने देंगे, सोने नहीं देंगे—यहाँ तक कि इतना भी अवकाश न देंगे कि वह किसी पासके सोतेमें एक बार जीभ भी मार ले। शैतानकी भाँति वे उसके निकट, आगे, पीछे, बग़लमें और उसके चारों ओर रहेंगे—और ठीक इतनी दूर पर कि उसकी मार या पकड़से बचे रह सकें। आखिर शेर थककर, प्याससे व्याकुल होकर, घबराकर डगमगाने लगता है, और कुत्तोंको वह अवसर देता है, जिसके लिए वे प्रतीक्षा करते रहते हैं—अर्थात् जब वे उसपर झपट्टा मार सकें और वह झपट्टा तलवारके घावसे कड़ा घाव करता है, जिससे उसका पेट फट जाता है, और वह अपनी अँतड़ियोंमें उलझता हुआ गिर पड़ता है।

अनमने पिल्लेको यह पता न था कि वंश-परम्परासे वह इतना भयंकर है। यद्यपि इस बातको चट्टानवाला बाघ जानता था। चरख जब उससे नहीं खेला, तो वह फिर बैठ गया। पिल्ला करता ही क्या? अपने सभ्य भाईकी भाँति उसके पास साधन नहीं थे। चबानेके लिये बूट नहीं थे। अपने भाग्यकी परीक्षाके लिए वहाँपर सड़कें भी न थीं, जिनपर पड़कर वह भोंपू बजवा लेता।

वह पिल्ला जंगली कुत्तेका पिल्ला था। भारतवर्षमें जंगलीके मानी असभ्य है ; पर यह पिल्ला तो बड़ा ही सरल था। अन्तमें वह उठा और पासकी झाड़ीमें घुसकर अपने साथी पिल्लेके साथ खेलनेका प्रयत्न करने लगा। पर वह पिल्ला गुर्राया। वह वास्तवमें जंगली था, जो अकारण उस पिल्लेपर गुर्राया। जब कभी जगली पिल्ला दंगली पिल्लेको देखता, तभी वह इसपर गुर्राता। जबसे जंगली और दगलीने आँखें खोलीं, तभीसे जंगली दगलीसे डाह रखता था। पर, दंगली बड़ा नेक था। जंगली झुण्डके किसी भी पिल्लेसे न खेलता था। दंगलीको खेलनेके लिए अपनी ओर आते देख जंगली ओठ सिकोड़कर, दाँत निकालकर, उसपर झपटा। दंगली स्वभावका नेक था। पर कायर न था। दोनोंमें कुश्तम कुश्ता हो गई। काटने, भँभोड़ने और लड़नेके शब्दसे झाड़ियोंकी शान्ति भंग हो गई। झुण्डके बड़े बूढ़ोंने आँख खोलकर देखा। एक बड़ा कुत्ता उठा और उन दोनों को अलग-अलग कर दिया। जंगलीको जब अलग किया गया, तब भी वह गुर्राता रहा। पर दंगली पूँछ हिलाता हुआ और पिल्लों-के साथ खेलने चला गया।

सायंकालको कुत्तोंका समूह आगे बढ़ा। वे जंगलके पशुओं-का इतना संहार करते हैं कि जंगलके एक भागमें बहुत दिनों तक नहीं रह सकते। प्रायः रातमें शिकार करते हैं, और जहाँ होकर निकलते हैं, वहाँ दावानलकी भाँति स्वाहा करते जाते हैं। बचे-खुचे जानवर भयभीत होकर भाग जाते हैं। उस बच्चेवाली बेचारी चीतल या साँभरकी कष्ट कथाका कौन वर्णन कर सकता है, जिसका वे पीछा करें। घबराई हुई मा पहले तो बच्चेको

था। हाँ, उसकी ईर्ष्या कम न हुई थी। जब कभी किसी मादाके ऊपर उनमें अनबन हो जाती, तो जगलीको लेनेके देने पड़ जाते।

प्रति वर्ष दलमें कुछ परिवर्त्तन होता रहता था। पुराने कुत्ते छूटते जाते थे। बुढ़ापे या बीमारीके कारण और विशेषकर भूकके कारण उनकी दुर्गति होती थी। दल आगे बढ जाता था और वे पीछे रह जाते थे। फिर वे घसिटकर झाड़ियोंमें घुस जाते और लम्बी घासमें मरनेके लिए झिप रहते, जिससे उनपर गृद्ध-दृष्टि न पड़ने पावे। पर यह सब प्रयत्न व्यर्थ रहता। आकाशमें एक काला बिन्दु धीरे-धीरे बढ़ता और झप-झप करता नीचे उतरता। उसको नीचे आते देख चारों ओरसे गिद्ध टूट पड़ते। तब ये यम-सहोदर, मरते हुए कुत्तेके पास जाते, और जब कुत्तेकी टिमटिमाती हुई जीवन-ज्योति बुझनेको होती और वह बेचारा ज़ोर लगाकर गुर्राता, तो वे पीछेको फुदक आते। फिर जब कुत्तेका सिर नीचे गिर पड़ता, तब वे एक दम टूट पड़ते और कीकी-खीखी शब्द करते हुए लाशको ढँक लेते और लड़ते-झगड़ते, पख फटफटाते हुए अपनी चोंचोंसे मांस नोच खाते।

अपने दलके बूढ़ों और अपाहिजोंका कुछ ख़याल न करके वे जगली कुत्ते आगे बढते जाते। शेर और बाघ उनको तरह ही देते थे।

पर प्रत्येक नियमका अपवाद होता है। एक घनी घाटीमें, जहाँसे एक नाला तापतीकी ओर जाता है, अपनी शक्तिके मदमें चूर एक जवान शेर रहता था, जो अपनेको विशाल भुजदण्डोंके बल पर, आसपासके जंगलका राजा समझता था। जंगलमें इस शेरके समान और कोई तेजस्वी तथा बलवान न था। जंगली हाथी और

गैंडा, जिसके लिए शेरको मार्ग छोड़ना पड़ता है, मध्यप्रान्तके जगलोंमें नहीं हैं, इसलिए, यह शेर अपने-आपको निरंकुश और सब-कुछ समझता था।

यद्यपि जंगली कुत्तोंका गश्त लम्बा-चौड़ा होता है, तो भी उस शेरको उनके देखनेका अवसर न मिला था। एक दिनकी बात है कि शेरने एक हिरनको पानी पीतेमें धर दबोचा, और अपना पेट भरकर तथा शेष अंश फिरके लिए वहाँ छोड़कर वह घनीछायामें सुखकी नींद सो गया। थोडी देर बाद उसकी नींद विचित्र प्रकारकी ध्वनि—हू-हू-हू-ही-ही-ही—से, जिसको उसने कभी नहीं सुना था, भंग हो गई, और आँख खोलकर जो देखा, तो १०-१२ विचित्र प्रकारके छोटे गीदड़—उसने उन्हें गीदड़ ही समझा—उसके भोजनको खा रहे हैं। वायु लाशकी ओरसे शेरकी ओरको चल रही थी, इसलिए कुत्तोको शेरका कुछ पता न चला। सन्देह दूर करनेके लिए हरी पत्तियोंमें से उसने सिर उठाकर अच्छी तरह देखा और दंग रह गया। शेरका भोजन गीदड़ खावें—और वह भी उससे छीनकर। इस अभियोगका दण्ड केवल एक था—मौत!

चुपचाप बिना आहटके मदमाता शेर उठा और ज़मीनपर अपनी मखमली गद्दियाँ रखता हुआ आगे बढा और आड़ ही आड़ कुत्तोंसे १० गज़ दूरीपर आ गया। पत्तियोंके हरे पर्देसे उसने चोरोंको देखा। बिना आवाज़की गुर्राहटमें उसने अपने ओठ पीछे सकोड़े—उसकी शक्तिका प्रदर्शन हुआ—उसकी मूँछें टेकुए-सी खड़ी हो गईं—और फिर एकदम वह जंगलका क़ानून तोड़नेवालोंपर टूट पड़ा। दो तो एकदम ही कराहकर ठण्डे हो गये। दोको उसने दश-बीस गज़ दूर पटककर चकनाचूर कर दिया। दो-एक घायल हुए और

शेष १०–१२ विचित्र चीखसे भागने लगे। शेर उनके पीछे भी पड़ा ; पर एक-दो छलाँगके बाद तवे सी तचती धरती आ गई। वह रुक गया। क्योंकि शेर धूप पसन्द नहीं करता। बचे खुचे कुत्ते नालेके ऊपर चढ़ गये। शेर गुर्राता हुआ अपने भोजनके पास लेट गया। लेटते ही मरे कुत्तेकी गन्ध उसकी नाकमें आई। पंजे से उसने उसे अपनी ओर खींचा और ज़रा चखा। बड़ा मज़ा आया। वह कुत्तेको खाने लगा। एक हड्डी उसके मुँहमें लगी थी कि नालेके चारों ओरसे भाँय-भाँय और हू-हूकी ध्वनि उसकी ओर आने लगी। उसको उन्हीं चोर-उचक्कोंका भान हुआ, जो उसके भोजनपर आये थे। जरा रुककर सुना, तो मानो नालेपर किसीने हल्ला बोल दिया हो। चारों ओर से चक्रव्यूह तंग सा होता आता था। भाँय-भाँय हू-हू उसके पास ही आने लगी। जंगली कुत्ते भोंकते नहीं, यह तो उनके सभ्य भाइयोंका ही गुण है। उनकी आवाज़ें भय-उत्पादक थीं। पर, शेर जानता था कि उससे छेड़खानी करनेकी किसकी मजाल। पर कुत्ते उसके चारों ओर आ गये। यह उसकी शानके खिलाफ़ था कि वह उन तुच्छ जन्तुओंको अपने ध्यानमें भी लाता ; पर उसका यह कम अपमान न था कि वे उसके चारों ओर खड़े थे! अन्तमें शेर रक्त नेत्रोंसे मुँह फाड़े उठा और आवेशमें आकर उनपर गुर्राया। कुत्ते आगे बढ़नेसे तो रुके ; पर भयभीत होकर भागे नहीं, जैसी कि वह आशा करता था। प्रति-उत्तरमें वे भी गर्दनके बाल फुलाये शेर पर गुर्राने लगे, और अपनी थुथडी आगे करके दाँत निकाल, उस पर अपना रोष प्रकट कर रहे थे। शेर को बड़ा आश्चर्य था। उसके भाई-बिरादरी तो उससे ऐसा कर सकते थे ; पर ये तुच्छ

प्राणी उसके मुक़ाबलेका साहस करते हैं! वह आक्रमण-आसनपर बैठा। उसके सामनेवाले कुत्ते कुछ पीछे हटे। इतने ही में बग़ल की झाड़ीसे एक कुत्तेने झपट्टा मारा और उसकी बग़लपर वार किया। विद्युत गतिसे शेर मुड़ा और पीछेसे किये गये वारसे उसने रक्षा की, क्योंकि शेरके लिए सबसे बड़ा अपमान पीछेसे घाव कराना है। शेर बड़ी विकट दहाड़के साथ अपने आक्रमणकारीपर टूटा। पर शेरके अन्धाधुन्ध आक्रमणने उसे एक काँटेदार झाड़ीसे टकरा दिया, जिसमें होकर उसका शत्रु भाग गया। ज्योंही वह काँटोंसे उलझा, त्योंही उसको अपनी पूँछमें पीड़ा मालूम हुई और ज्योंही वह पूँछ की ओर मुड़ा, तो देखता क्या है कि एक कुत्ता उसकी पूँछको छोड़कर दूर भाग गया है।

इस घोर अपमानसे तो शेर आग-बबूला हो गया और प्रत्येक समूहपर अन्धाधुन्ध टूटा। वह किसीको पकड़ पाता नहीं था और शीघ्र ही पीछेके हमलेके बचावके लिए उसे मुड़ना पड़ता था। अन्तमें जब इस नट-नृत्यसे उसकी नाकमें दम आ गया, तब वह नाले की खुली जगहमें खड़ा हो गया और अपने शत्रुओंके निकट-आगमन की प्रतीक्षा करने लगा।

पर, कुत्ते मूर्ख नहीं थे। वे जानते थे, अभी अथक तथा विकट शत्रुसे इस प्रकार पेश नहीं जावेगी। वे उसके चारों ओर चक्कर लगाने लगे और कभी कभी उसकी ओरको आते प्रतीत होते थे, ताकि शेर यह समझे कि वे आक्रमण कर रहे हैं। पागल बनानेवाली कुत्तोंकी ये हरकतें उसके लिए असह्य थीं। लज्जा और क्रोधसे शेर नालेमें चलने लगा। यह ख़याल करके कि उसकी हार हुई और रणक्षेत्र उसे छोड़ना पड़ा, शेरको बड़ा क्रोध आ रहा

था। पर ऐसे शत्रुओंसे कैसे पार पाता? इसलिए वह अपना भोजन छोड़कर मैदानसे हटा।

पर, यह जानकर वह बड़ा आश्चर्यान्वित हुआ कि लुटेरे लूटके सामानसे ही सन्तुष्ट न थे। उसने यह बात महसूस नहीं की कि खूनका बदला खून है, और लड़ाईकी लूटसे उन्हें सन्तोष न होगा। कुछ कच्ची उमरके कुत्ते लाशकी ओर गये और उसे खाने लगे; पर शेष कुत्ते शेरके साथ थे। साथ क्या, कुछ उसके आगे-आगे भागते थे, कुछ बग़लमें दुलकी चालसे चलते थे, कुछ पीछे भी थे। वे बहुत समीप रहते थे; पर उसकी पहुँचसे दूर। कभी-कभी कुछ बहादुर कुत्ते उसकी बग़लपर झपट्टा मारनेका प्रयत्न करते थे।

एक कुत्ता उसके सिरके निकट आगे रहता और मुड़-मुड़कर उसके पुट्टेकी ओर देखता था। यह कुत्ता, जो पहले कभी पिल्ला था, दंगली था। वह अब कुत्तोंके इस दलका नायक था, और जंगली और दो-एक उसीकी प्रकृति-जैसोंको छोड़, सबने उसका नेतृत्व स्वीकार किया था। इस समय जंगली भी था; पर पीछे। इस लड़ाईका सेहरा दंगली और उसके स्वामिभक्त साथियोंपर ही था।

दंगलीको इस समय केवल एक ध्यान था; केवल एक, जो जंगली कुत्तोंमें विशेष रूपसे पाया जाता है—अपने साथियोंके हत्यारेसे बदला लेना। शेरको अपने पीछेके शत्रुओंपर ही क्रोध आ रहा था और मुड़-मुड़कर वह उन्हींपर गुर्राता जाता था। उसको यह पता न था कि आगेवाले—आगेवालोंमें अति समीपवाले—कुत्तेके वास्ते मानी हैं मौत।

अन्तमें क्रोध और झुंझलाहटसे शेर रुका। वे भी रुक गये। वे अब नालेके खुले भागमें पहुँच गये थे। वहाँपर झाड़ियाँ न थीं

और नालेके किनारे ऊँचे समकोण थे। शेर गुर्राहटके साथ किनारे की ओर बढा और पहाड़से पीठ लगाकर बैठ गया। कुत्ते भी उसके चारों ओर अर्धचन्द्राकार पिछले पैरोंपर बैठ गये। शेरने अपने धूर्त्त शत्रुओंके खुले मुँह और लटकती हुई जीभें देखीं। क्या ऐसे तुच्छ, नाचीज़ प्राणी जंगलके राजाकी कुछ हानि कर सकते थे? शेरको स्वयम् इस बातपर विश्वास न था। दम लेकर वह उनको घृणाकी दृष्टिसे देखता हुआ चला; पर उसकी बग़लकी आकस्मिक पीड़ाने उसे पीछे देखनेको मोड़ा। देखा तो उसकी बग़लके घावसे खून बह रहा था, और एक तेज़ कुत्ता मुँह मारकर सट-से एक ओर निकल भागा है। पीड़ा और क्रोधसे पागल होकर वह आक्रमण-कारीपर टूटा—पर हाथ कुछ न आया।

तब तो शेरके हृदयमें पहली बार डर घुसा। ये हाथ न आने-वाले शत्रु बडे भयानक थे। तो भी, उसने सोचा, वह यदि उन्हें मार नहीं सकता, तो उनसे पिण्ड तो छुड़ा सकता है। इसलिए नालेमें एक ओर खुला स्थान पाकर, वह ऊपरको छलांग मारकर चढ़ा और ऊपर मैदानमें आकर तीव्र गतिसे, सूखी घास और कटीली झाड़ियोंके मैदानमें होकर, भागा। धूप बहुत तेज़ थी और मृगराजको महसूस भी बहुत हुई। पर क्या करता। समय ही ऐसा था।

लम्बी दौड़ प्रारम्भ हुई। तपे हुए मैदानमें शेरने पीछेको देखा। शत्रुओंसे वह पिण्ड न छुड़ा सका और दंगली उसके आगे ही था। और कुत्ते इधर-उधर, बग़लसे पीछे और पीछेसे बग़लमें आते जाते थे। साथ ही जब-तब शेरके मुँह मार जाते और खूनकी धारें बरसा देते थे; पर दंगली एक ही नेम और एक ही व्रतसे अपनी ड्यूटी

पर जमा था। वह अपनी और शेरके बीचकी दूरीको उतनी ही बनाये हुए था। उसकी मारका समय अभी नहीं आया था। कभी धीमी गति और कभी-कभी सरपट चालसे मध्याह्न तक शेर चलता ही रहा। तब उसको लम्बे पेड़ोंकी टेढ़ी क़तार दिखाई पड़ी। वह उसी ओरको बढ़ा, क्योंकि वह जानता था कि वहाँ नदी है। कदाचित् वहाँ उसे शरण मिले। नदीके गहरे जलमें उसके अथक शत्रु उसका पिण्ड छोड़ें। वह वहाँ पहुँचा और नदीमें घुस पड़ा; पर कुत्ते उसके उतने ही समीप थे। पहले तो शेर कमर तक पानीमें रुका और एकदम सिर पानीमें डुबो दिया। फिर तीन-चार बार लप-लप की; और एक समतल चट्टानपर चढ़कर बैठ गया। डूबते हुए सूरजकी किरणें शक्ति-स्वरूप शेरके पुट्ठोंपर पड़ रही थीं और कुत्ते उसके चारों ओर चट्टानपर बैठे हुए थे। उनकी टकटकी उसीपर लगी हुई थी। शेर अब भयभीत हो गया था। पर कुत्ते भी कूद और तैरकर नदी पार कर गये और जब शेर किनारेपर खड़ा हुआ था और जब उसके शरीरसे बूँदें टपक रही थीं, कुत्ते भी उसके आगे, पीछे और बगलमें खड़े थे।

तब शेरने अपनी गति कुछ तेज़ कर दी। गोधूली तक दौड़ होती रही। शेर दो-चार बार रुका; पर उसके शत्रु उसके निकट ही आते गये और वह भी चलता ही गया। समतल भूमिमें, ऊपर, नीचे और फिर ऊपर और झाड़ियोंमें शिकार और शिकारी रातमें दौड़ते ही रहे।

अन्तमें चन्द्रमा निकला और उनका मार्ग प्रकाशमय हो गया। श्रम और नींदके अभावसे थककर शेर एक चट्टानके नीचे रुका और उसने अपनी पूँछ एक ऊँचे पत्थरके सहारे रख ली, जिससे पीछेके आक्रमणसे रक्षा हो। कुत्ते हाँपते हुए उसके आसपास पड़े थे।

उस आसनपर जैसा और जो-कुछ आराम उसे मिला, उसने लिया। सोनेका वह साहस कर नहीं सकता था, क्योंकि ज़रा आँख झपकी, तभी कोई-न-कोई कुत्ता उसपर हमला कर देता था। आखिर उसे थोड़ा-सा बदला मिला, क्योंकि उसने दो कुत्तोंको पकड़ लिया और एक चपेटमें ही उनका भुर्ता बनाकर फेंक दिया। वे अनुभवहीन नये कुत्ते थे।

कुत्ते तो बारी-बारीसे सो सकते थे ; पर शेर सोनेका साहस न कर सकता था। प्रातःकाल होते ही शेर फिर चला। कुत्ते उसके साथ थे। वह अन्धाधुन्ध भागा जाता था। नीचे ज़मीनकी जलन और ऊपर सूरजकी गरमी। शेरका बुरा हाल था। ठीक दोपहरके समय भागते-भागते वह हालके जले जङ्गलकी ओर हो लिया, जिसमें कई इंच गहरी राख थी और जो वायु-वेगसे उड़-उड़कर उसकी नाक और आँखोंको भर रही थी।

बस, अब अन्त आ गया था। शेर इन यातनाओंको अधिक न सह सका। खाँसते, खखारते और छींकते हुए वह रुका। काँपा। और फिर चलनेका प्रयत्न करते ही लड़खड़ाया।

एक ख़ूँख्वार जवान कुत्ता उसकी पिछली सीधी टाँगपर टूटा और छुरे जैसे पैने दाँत नसों और जोड़ोंमें गाड़ दिये। एक दूसरे ने बाईं टाँगके मांस और पुट्ठेमें दाँत घुसाकर हड्डीपर हमला किया। दीर्घकाय पीला जानवर—शेर—मानो तातोंसे जकड़ा हो।

और तब दंगलीने वार किया। उसका अवसर अब आया-था। शेरके मुँहपर उछलकर, बुलडौगकी भाँति, उसने शेरकी नाक पकड़ ली और उसके सिरको नीचे गिराकर उसे नितान्त असहाय कर दिया। तब कुत्ते उसकी टाँगों, गर्दन, पेट, नितम्ब,

चलती हुई बग़लों आदिपर चारों ओर चिपट गये और एकने नीचे घुसकर उसके पेटको फाड़ दिया।

शेर सिरके बल आगेको गिरा कि कुत्तोंने उसको ऐसे ढँक लिया, जैसे गिद्ध किसी मरे जानवरको ढँक लेते हैं। घोर पीड़ामें शेरने दंगलीको हिलाकर फेंकनेका प्रयत्न किया। इधरसे उधर छटपटाया। टाँगें पीटीं; पर बहादुर दंगली इधर-उधर पटके जानेपर भी नाकसे लगा रहा—अपनी पकड़ नहीं छोड़ी। शेर अन्तिम वेदनामें पड़ा तड़प रहा था।

इतनेमें वे कुत्ते भी आ पहुँचे, जो इस शिकारमें फिसड्डी रहते थे। उनमें सबसे आगे जंगली था। उसने शेरके सिरपर वार करना चाहा। पर ज्योंही वह शेर पर टूटा, त्योंही उसे दंगलीकी खुली गर्दन दिखाई पड़ी; क्योंकि दङ्गलीके दाँत शेरकी नाकसे जकड़े हुए थे।

जङ्गलीने दङ्गलीकी गर्दनपर अपने दाँत गाड़ दिये, और उसका मुँह पुराने शत्रुके खूनसे भरने लगा। मरता हुआ शेर एक बार और छटपटाया और दङ्गलीको पंजेसे हटानेके प्रयत्नसे अन्तिम वार किया। पर, उसका पंजा जङ्गलीपर पड़ा, जो दङ्गलीकी गर्दनसे लटका हुआ था। थापकी मारसे जङ्गलीकी कमर चकनाचूर हो गई और वह दङ्गलीको कराहता हुआ छोड़कर एक ओर जा पड़ा।

जब शेरकी रग-रगमेंसे जान निकल गई, तब दङ्गलीने अपनी पकड़ छोड़ी और अपने घावको चाटता हुआ वह चला गया। जङ्गली, दङ्गलीको जाता हुआ देखकरू, पड़ा-पड़ा गुर्राया और समाप्त हो गया!

यमदूतसे साक्षात्

राजनीतिक जीवनका तत्त्व है स्वातंत्र्य-युद्धमें मोरचा लेना। मनुष्यत्वका सार है दुःखी और पीड़ितोंकी निष्काम सेवा करना। और वीरता तथा साहसकी कसौटी है औसान रखते हुए आतंकमयी परिस्थितिका मुक़ाबिला करना। जो स्वतंत्रताकी कोरी बातें करते हैं और लड़ाईसे दूर भागते हैं, जो अपनी सेवाकी डींग हाँकते हैं और मरने तथा विरोध करनेसे हिचकिचाते हैं, वे हैं कायर और ढोंगी—बेपेंदीके लोटे, जो तनक-सी विरोध-लहर, कठिनाई और दचोकेसे ग़ायब हो जाते हैं। चट्टानपर खड़े पौधेकी भाँति, जो बरसातके बाद सूर्य-तापकी थोड़ी-सी चोटोंके कारण ही सूखकर निर्मूल हो जाता है।

सायंकालको बाबू शरत्कुमार घोष अपने बँगलेके बरामदेमें बैठे हुए थे, जब उनका नौकर रामसिंह छुट्टी माँगने आया। रामसिंहकी वृद्धा माँ क़रीबके गाँवमें बीमार थी, इसलिए वह एक रातकी छुट्टी चाहता था। उसने बड़ी दयनीय आकृतिसे कहा—"हुज़ूर! वैसे तो आपको अकेला छोड़कर जानेको मेरी तबियत नहीं करती; पर मेरी माँका रोग असाध्य है। वह बचेगी नहीं, इसलिए मैं आज जाना चाहता हूँ।" रामसिंहकी प्रार्थना इतनी युक्ति-युक्त थी कि घोष बाबूसे इनकार करते न बना। किसीकी माँ मरणासन्न हो, तो कौन भला आदमी अपने नौकरको छुट्टी न देगा? पर घोष बाबूको अपने नौकरको छुट्टी देनेके कारण काफ़ी तकलीफ़ उठानेकी सम्भावना थी। बात यह थी कि घोष बाबूका बँगला आबादीसे दो-तीन मील दूर था, और उनके अन्य नौकर शाम होते ही अपने

घरोंको—कई मील दूर—चले जाते थे, और उस बँगलेमें घोष बाबू और उनका नौकर रामसिंह ही अकेले रातको रहते थे।

बँगला एक बड़े खेतके बीचोबीच था, और खेतके चारों ओर जंगल था, जिससे लोग भयभीत थे।

घोष बाबू गर्मीके कारण बँगलेके किवाड़ खुले छोड़कर सोया करते थे। पर अपनी माँके पास जानेसे पूर्व रामसिंहने घोष बाबू से आग्रह किया था कि बँगलेके किवाड़ रातमें खुले न छोड़े जायँ, क्योंकि जंगलमें 'फ़ाऊ'-शब्द उसी दिन सुना गया था। 'फ़ाऊ' शब्दसे लोगोंके हृदयोंमें कँपकँपी हो जाती थी।

'फ़ाऊ' एक छोटे जानवरको कहते हैं, जो बिल्लीके बराबर बड़ा होता हैं, और उसका नाम उसकी बोली 'फ़ाऊ'के कारण रख गया है। लोगोंका विश्वास है कि 'फ़ाऊ' मनुष्यभक्षी शेर या बघेरेके आगमनका सूचक है—एक प्रकारकी लेन डोरी-सी। 'फ़ाऊ' शेरके साथ क्यों रहता है, सो तो कहना कठिन है; पर देहातके लोगोंके लिए 'फ़ाऊ' एक दैवी सूचना है, जिससे लोग शेरके उत्पातोंसे कुछ सचेत हो जाते हैं।*

---

* 'फ़ाऊ' या 'फ़ियाउली' गीदड़को छोड़कर और कोई दूसरा जानवर नहीं है। ब्रजके देहातमें फ़ियाउली एक विचित्र जानवरको कहते हैं, जो किसीके मरनेसे पूर्व गाँवोंमें बोलता है—'फेकत्ति है' (देहाती बोलीमें) शेर या बघेरेको देखकर डरसे गीदड़ फाउ या हाव शब्द करता है, और उसे ही लोग फ़ाऊ या फ़ियाउली कहते हैं। साधारणतया गीदड़ हू-हू हुएँ-हुएँ करता है; पर डरकर वह फ़ाऊ या हाव शब्द करता है। इन पंक्तियोंके लेखकने इसकी ख़ासी जाँच की है।—लेखक

'फ़ाऊ'के विषयमें कुछ संदिग्ध होनेपर भी घोष बाबूने रामसिंहको आश्वासन दिलाया कि वह उनकी तनक भी चिंता न करे, क्योंकि उनकी बंदूककी गोली किसी भी शेरके स्वागतके लिए काफ़ी थी, और इसीलिए उन्होंने रामसिंहको आदेश दिया कि जानेसे पूर्व वह उनकी बंदूक और कुछ गोलीके कारतूसोंको उनकी चारपाईके निकटवाली अलमारीकी दराज़में रख दे।

घोष बाबूका सोनेका कमरा कुछ छोटा-सा था। उसमें दो द्वार थे। एक तो बरामदेकी ओर और दूसरा भोजनके कमरेकी तरफ़। उनका पलँग बरामदेवाले दरवाज़ेके सामनेके कोनेमें था। पलँगका सिरहाना और उसका भीतरी भाग दोनों दीवारोंसे लगभग एक फ़ुटकी दूरीपर थे। पलंगसे सठी शृंगार-मेज़ थी, इसलिए पलँगके चारों ओर—उसके बाहरी भागको छोड़कर—सुकड़-सुकड़ाकर ही जाया जा सकता था। पलँगकी खुली ओरको—कोनेकी दीवारोंसे लगे पलँगकी ओरके दूसरी ओरको—चार फ़ुटकी दूरीपर घोष बाबूकी दराज़ोंवाली अलमारी (Chest of drawers) रखी थी, जिसके सबसे नीचेवाले ख़ानेमें रामसिंहने बंदूक रख दी थी। अलमारीके बगलसे लगा बरामदेवाला दरवाज़ा था।

पलँग काफ़ी भारी था। उसके पाये ६ इंच व्यासके होंगे। पाटियों तथा सेरौंकी मुटाई भी इतनेसे कम न थी। इस प्रकार पलँग सात वर्गफ़ुटका रहा होगा; पर वह बहुत ऊँचा न था। हाँ, उसके नीचे कोई भी आदमी रेंगकर इधर-उधर जा सकता था। पायोंसे लगे डंडे थे, जिनके ऊपर कोनोंसे मसहरीके चारों कोने बँधे थे।

घोष बाबू बरामदेके किवाड़ बंद करके अपने पलँगपर जा लेटे और लगे निद्रादेवीका आह्वान करने। पर अपनी सौत गर्मीके कारण वह न आई। रूठी रानीको घोष बाबूने बहुत मनाया, मिन्नतें कीं, गिड़गिड़ाए भी और कई घंटे तक उसके विरहमें तड़पे, करवटें बदलीं; पर सब बेकार। मोहक गंध पाकर भौंरे फूलोंकी स्तुतिके लिए भागे चले आते हैं, और मंद समीरके झकोरोंसे निद्रादेवी थके-माँदोंके आलिंगनको दौड़ी आती है और आँखोंपर जादू फेरकर लोगोंको मंत्र-मुग्ध कर लेती है। पर घोष बाबूके कमरेमें गर्मीका साम्राज्य था। निद्रादेवी कैसे आती? अंतमें परेशान होकर और किसी भयकी आशंका न करके उन्होंने बरामदेका दरवाज़ा खोल दिया, और पलँगपर लेट गए। शीतल वायुके झकोरोंने नींदरानीको गुदगुदाया। गर्मी कमरेसे भागी, और घोष बाबू सुख-निद्राके अधीन हो गए।

कितनी देर तक वह सोए, सो तो कहना कठिन है; पर घबराहट और किसी भयंकर दुर्घटनाकी आशंकाकी भावनासे चौंककर जग गए। कमरेमें कुछ दम घुटानेवाला वातावरण था। हवा गरम और दुर्गन्धमयी थी, मानो कोई दूसरा बड़ा जीव भी वहाँ हो। कुछ मिनटोंके लिए घोष बाबू उनींदे-से, तंद्रावस्थामें रहे, और उन्होंने अपने शरीरको ज़रा भी हिलाया-डुलाया नहीं। उनकी अधखुली आँखें ऊपरको थीं। उनकी इच्छा थी कि तनक उठकर या करवट लेकर देखें कि आखिर कमरेमें है क्या? पर दम घुटानेवाली हवाने उनकी तंद्राको भंग ही न होने दिया। उनकी अर्ध मूर्च्छित अवस्था अभी ज्योंकी त्यों थी कि उन्हें ऐसा भान हुआ, मानो उन्होंने अपने पलंगके निकट एक गहरी और कर्ण-कटु साँस सुनी हो। आखिर

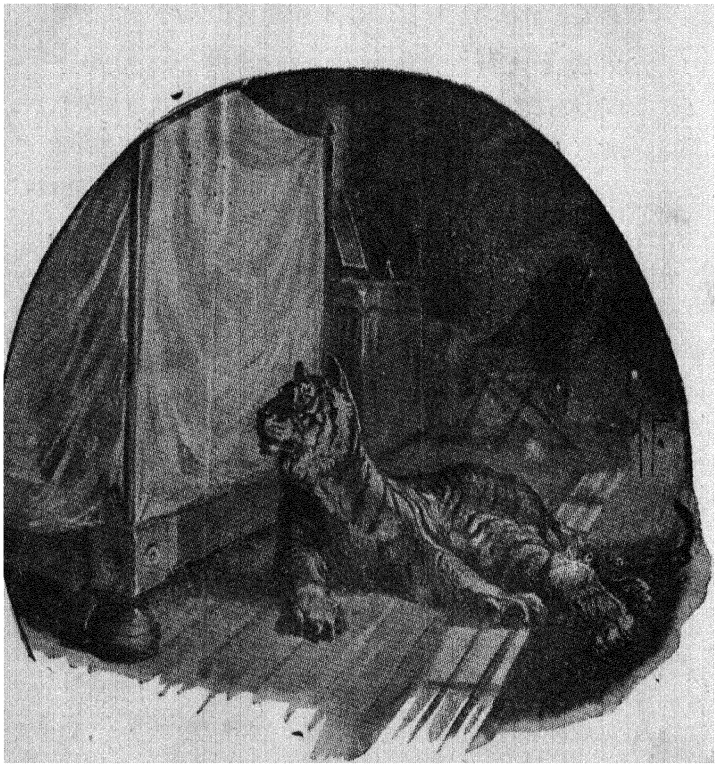

"घोष बाबूने देखा, उनके पलँग और अलमारीके बीच एक भीमकाय शेर बैठा है।"

वह ध्वनि क्या थी ? कम होनेके बजाय वह प्रतिक्षण अधिक गम्भीर और कड़ी होती जाती थी। वह डरावनी ध्वनि इतनी कंपोत्पादक और मोहक थी कि करवट लेने तकका साहस न होता था। तनक-सी असावधानी, कुछ गड़बड़ और शोरोगुलसे न-मालूम कौन-सी मुसीबत आ जाय, इसी विचारसे घोष बाबू मृतप्राय पड़े रहे। उस रहस्यपूर्ण और विचित्र साँस लेनेकी-सी आवाज़से बचनेका सरल उपाय यही था कि औसान ख़ता न होने पाएँ और हिला-डुला न जाय। पर यह जानना भी आवश्यक था कि वह विचित्र आतंक-पूर्ण आवाज़ थी क्या ? उसका एक ही ढंग था, और वह यह कि सिर धीरे-धीरे उधर फेरा जाय, जिधरसे—पलंगके बाहरकी ओरसे—आवाज़ आ रही थी। धीरे-धीरे, शरीरको बिना हिलाए, अस्पष्ट-सी गति और अधखुले नेत्रोंसे घोष बाबूने अपना सिर घुमाया। आँखोंकी संपूर्ण ज्योति उस आवाज़के मार्गपर जा रही थी, जैसे कोई अंधा व्यक्ति परिचित मार्गपर बिना किसी ग़लतीके चला जाता हो। कई मिनटोंमें जैसे ही आधा सिर उस ओर घूमा, वैसे ही घोष बाबूकी अधखुली आँखोंपर बिजली सी गिरी—

कफ़सके सामने बिजली कुछ इस तरह चमकी
नज़रमें फिर गई तसवीर आशियानेकी

घोष बाबूने देखा, उनके पलंग और अलमारीके बीच एक भीमकाय शेर बैठा है। उसका सिर घोष बाबूकी ओर था, कान खड़े हुए और आँखें—वे जादू-भरी आँखें—घोष बाबूपर केंद्रित थीं। चंद्रमाकी धुँधली रोशनीमें शेरकी विकरालता और भी बढ़ गई थी। कुछ देरके लिए घोष बाबू संज्ञाहीन हो गए। साक्षात् यमराज, शेरके रूपमें, बिना किसी नोटिसके, समीप ही विराजमान

थे। घोष बाबूको भान हुआ कि उनके जीवनकी कुछ ही घड़ियाँ शेष हैं।

थोड़ी देरके लिए तो उनके शरीरमें रक्त-संचार रुक-सा गया—लकवा-सा मार गया उन्हें। दो मील तक उनकी आवाज़को भी सुननेवाला कोई न था, इसलिए चीख़ना फ़ज़ूल था। और बंदूक? बंदूकको उन्होंने कितना सँभालकर दराजवाली अलमारीमें रखा था, वक्त ज़रूरतके लिए। पर यमदूत रामने पहलेसे ही प्रबन्ध कर रखा था। अलमारी तक हाथ कैसे पहुँचता, उसके तथा पलगके बीच ही तो शार्दूल डटा था। प्रबंध सब ठीक था। बस, अपने जबड़ेकी हथकड़ीमें पकड़ने-भरकी देर थी, या फिर एक ही चपतमें घोष बाबूकी अक्ल दुरुस्त करनी थी। एक ही क्षणमें घोष बाबूकी सारी जीवन-चर्या उनके दिमाग़में चक्कर काट गई। पर शेरने उन्हें अब तक छोड़ क्यों रखा था? उसे तो उन्हें सोतेमें ही उठा लेना चाहिए था। इतनी देर क्यों हुई? यदि किसी प्रकार उसके आक्रमण करनेका कारण मालूम हो जाता, तो शायद उसके उपयोगसे घोष बाबूकी जान बच सकती थी। घोष बाबूके पक्षमें एक विशेष बात यह थी कि यमराजके प्रथम दर्शनकी प्रतिक्रियाके उपरांत उन्होंने हवास ठीक रखे। और होश-हवासकी ढालपर ही वह शेरसे भुगत सकते थे। पर निहत्थे आदमीके शेरसे मुकाबिला करनेके मानी हैं भुनगेका हाथीसे भिड़ना। क्या मसहरी देखकर शेर शंकित हो गया था? शायद मसहरीके भीतर निस्तब्ध व्यक्तिको पड़ा देखकर शेरने मसहरी-युक्त, पलंगको अपने फँसावके लिए जाल समझा हो। आदमीका आकार बनाकर जालके भीतर कोई चीज़ रख दी हो और उसपर आक्रमण करते ही शेर किसी दाँव या

मृत्युपाशमें न फँस जाय, इसी डरसे वह प्रतीक्षा कर रहा था ; क्योंकि मसहरीके भीतर यदि कोई जीवित प्राणी होता, तो कुछ हिलता-डुलता ज़रूर। घोष बाबूने भी समझ लिया कि उनके बचनेका केवल एक ही उपाय है, और वह यह कि चुपचाप पड़ा रहा जाय, टससे मस न हुआ जाय, ताकि शेरको यह शंका बनी रहे कि उसके पकड़ने और मारनेके लिए धोकाधड़ी की गई है।

घोष बाबू इसीलिए गुमसुम, एक ही करवट, पड़े रहे। एक-एक क्षण पहाड़ सा प्रतीत होने लगा साधारण स्थितिमें, अपनी इच्छासे, एक आसनपर कोई घटो पड़ा रहे ; पर मन मसोसकर, मूर्त्तिवत् होकर और सो भी मौतके निकट अचल पड़ा रहना टेढ़ी खीर है। पर मौतका डर स्नायुओं और पुट्ठों तकको स्टील-सा बना देता है। मौतके डरसे मरधिल्ले लोग भी विकट साहस दिखाते हैं। पर छींक, खाँसी और खुजलाहट भी वे बलाएँ हैं कि खुजलानेको उँगलियाँ बरबस चली जाती हैं, चाहे कोई कितनी ही भयावनी स्थिति क्यों न हो। खाँसी और छींकसे भुगतना तो और भी कठिन है। गलेमें सरसराहट होती है। हाथसे गला दबाने और मुँह बंद करनेपर भी भीतरसे बारूद फिकती है और खुल्ल तथा ठुल्ल हो ही जाती है। और नाकको दबाते-दबाते छींककी टीं भी निकल पड़ती है। नाकको कहीं बुरी तरह पकड़ भी लो, तो छींक आँखों और खोपड़ेसे निकलनेकी कोशिश करती है। घोष बाबूपर भी खाँसीने—गला साफ़ करनेकी प्रवृत्तिने—हमला-सा कर दिया, और बहुत गला घोटनेपर भी तनक ठुल्ल-सी ध्वनि निकल ही गई। उधर शेरकी शंका-समाधि भग हुई। वह फौरन् खड़ा हो गया, और घूरकर उसने घोष बाबूकी ओर देखा तथा अपना सिर धीरे-

धीरे उधरको बढाया। अभी तक उसे कुछ शंका बनी रही, इसीलिए उसने एकदम आक्रमण नहीं किया। पर उसका भारी सिर मसहरीको दबाता हुआ आगेकी ओर बढा, मानो वह घोष बाबूके सिरका क़रीबसे निरीक्षण करना चाहता हो। घोष बाबूने शेरकी भयंकर साँस महसूस की; पर टससे मस होनेका उनका साहस न हुआ। इतने-ही में मसहरीकी रस्सी चटसे टूट गई, और मसहरी झपसे घोष बाबूके ऊपर आ गिरी। बिजूका हट गया। मोह-पाश कट गया, और शेरके लिए अब मैदान साफ़ था। पर जैसे ही मसहरी गिरी, शेर कुछ चौकन्ना हुआ, और उसी क्षण विद्युत्-गतिसे घोष बाबू मसहरीसे सरककर दीवारके सहारे फ़र्शपर जा बैठे। मसहरी गिरते ही, एक-दो सेकंड बाद ही, शेर कंपोत्पादक गुर्राहटके साथ पलँगपर कूद पड़ा, यह समझकर कि उसकी खूराक वहीं पड़ी होगी। शेरको शकोशुभा तो रहा ही न था। अपना शिकार पलँगपर न पाकर उसने पलँगको चीरना-फाड़ना शुरू किया। पलँगपर वह फट ही तो पड़ा, मानो वही उसकी रखी-रखाई खूराक निगल गया हो। क्रोधकी मूर्त्ति शेरने कुछ देर तक पलँगको नोचा खोंचा, और फिर अलमारीके क़रीब कूद पड़ा। उसकी पूँछ इधर-उधर तड़प रही थी, और क्रोधसे भन्नाते हुए होठोंको पीछे खींचे हुए वह अपने शिकारको इधर-उधर देख रहा था। ज़रा देरमें ही उसने अपने शिकारको पलँगके नीचे, दीवार की ओर गठरी सा बना, देखा, और एक भयानक दहाड़के साथ उसने अपना सिर पलँगके नीचे घुसाया। पर पलँगकी पाटीसे वह टकराया। क्रोधोन्मत्त शेरने सिर भीतर करनेके लिए ठोकर मारी। सिरके एक धक्के और फिर दूसरे तथा तीसरे धक्केसे पलँग तो बुरी

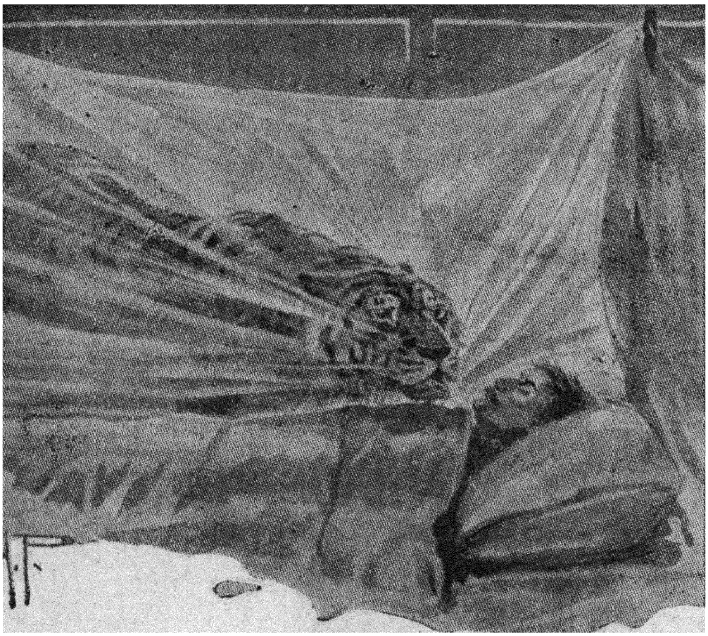

"घोष बाबूने शेरकी भयंकर साँस महसूस की।"

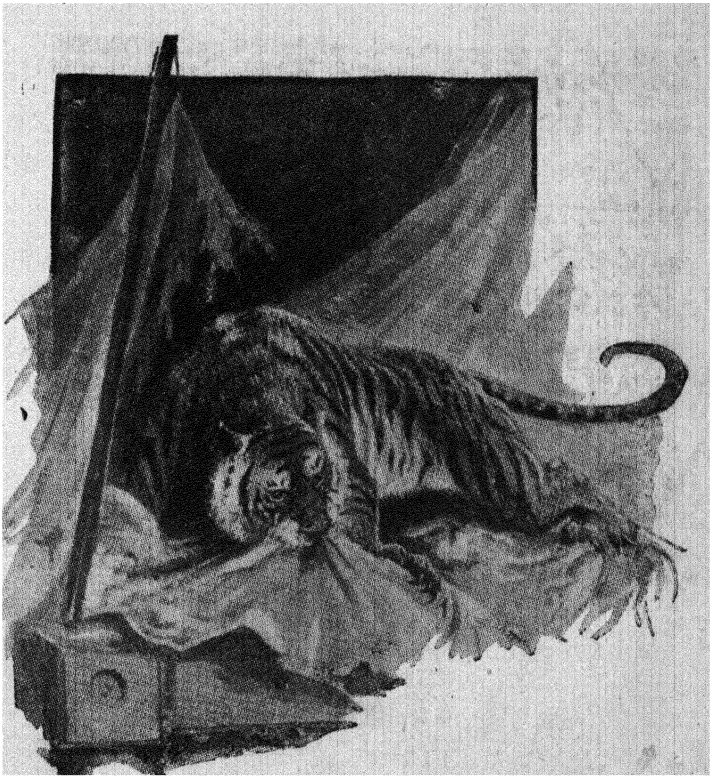

"शेर कम्पोत्पादक गुर्राहटके साथ पलँगपर कूद पड़ा।"

तरह हिला ; पर उसका सिर भीतर न जा सका। तब शेरने और भी ज़ोरसे आक्रमण किया, भीतर घुसनेको, और उसका सिर पलँगके नीचे आ ही गया। उसके माथेकी खाल छिल गई थी और खून तेज़ीसे बह रहा था। पलँगकी पाटीके किनारोंसे शेरके सिरमें आघात पहुँचा था। उसने पलँगके नीचे घुसनेके लिए फिर ज़ोर लगाया ; पर संकीर्ण पलँग और अलमारीके बीच उसका भारी शरीर कमान-सा बन गया। भीतर घुसनेके लिए, शरीरको उधर बढ़ानेके लिए, पीछे गुंजायश ही न थी।

शिकार और शिकारी आमने-सामने पड़े थे। घोष बाबूने अपने शरीरको सिकोड़कर दीवारसे लगा रखा था, मानो उसे फोड़ कर उसमें घुसना चाहते हों। शेरकी खूनी और मशाल-सी जलती आँखोंका सामना उनसे न होता था। शेरके कीले तो मानो बाबू साहबके शरीरको फाड़ ही रहे थे। शेरकी आँखों, दाँतों और आकृतिने मोहिनी-सी फेर दी थी। उन्हें नशा-सा आने लगा। घोष बाबू चूहेकी भाँति शेरके शिकंजेसे बचनेका उपाय कर रहे थे। कुछ मिनट तक दोनों उसी आसनपर डटे रहे। वे मिनट युगके समान बीते। रौरव नरककी यातनाएँ भोग रहे थे घोष बाबू। तेज़ और रुकी हुई गुर्राहट शेरके भयानक जबड़ोंसे आ रही थी। वह गुर्राहट केवल क्रोधकी ही न थी, वरन् पीड़ाकी भी थी। पीड़ा खुरसट और चोटकी नहीं थी, वरन् पाटीका तेज किनारा उसकी गर्दनको भी काट रहा था। जल गर्दनकी पीड़ा उसके क्रोधसे भी बढ़ गई, तब शेरने सोचा, लानत है इस प्रकारके शिकारसे। सिर निकालकर शिकारको किसी दूसरे ढंगसे पकड़ना चाहिए, इसलिए उसने अपना सिर बाहर खींचनेका प्रयत्न किया।

सिर बाहर निकालनेको उसने ज़ोर लगाया। घोष बाबूके सामने आशाकी एक किरण-सी दिखाई पड़ी। शेरका सिर बाहर निकलता ही न था। वह फँस गया था। शेरने निकलनेके लिए क्रोध-पूर्ण ज़ोर लगाया। पलँग डगमगाने लगा। शेरके ज़ोर लग रहे थे गाउ-खाउ, पलँग कर रहा था खटर-खटर और घोष बाबूका दिल धड़क रहा था धक-धक। डर इस बातका था कि शेरके कशमकशसे कहीं पलँग न पलट जाय। पलँग पलटते ही घोष बाबूके भाग्यका तख्ता भी निस्संदेह पलट जाता, इसलिए घोष बाबूने अपनी ओरकी पाटी जोरसे पकड़ ली, ताकि पलँगका बोझ कुछ और बढ़ जाय। शेर ज़ोर लगा रहा था निकलनेको, और घोष बाबू पाटी नीचे खींच रहे थे। पर घोष बाबूका प्रयास कुछ नहींके बराबर था। पलँगकी धमा-चौकड़ी, ऊपर और नीचेकी गति, झूलेकी-सी जारी थी। शेरका प्रत्येक झटका प्रबल होता जाता था। पलँग बहुत जोरोंसे हिलने लगा, मानो घबराकर वह कहीं भाग जानेका प्रयत्न कर रहा हो। सारे शरीरकी ताक़त इकट्ठीकर और जानकी बाजी लगाकर घोष बाबू एकदम पलँगपर आ गए, ताकि वज़न ठीक हो जाय और पलँग न पलटे। कुछ देरके लिए पलँगकी तौल ठीक हो गई। पर प्रश्न यह था कि उस प्रकारकी स्थिति कब तक चलेगी? किसीन किसी झटकेमें शेर अपना सिर निकाल सका, तो एक क्षणमें ही घोष बाबूकी चटनी बना देगा। यदि कहीं बंदूक़ हाथ लग जाती, तो शेरको जहन्नुम-रसीद कर दिया जाता। पर बंदूक तो दराज़में बंद थी, और शेरके पिछले भागने दराजको और भी कड़ा कर दिया था। उसका हाथ आना असंभव था।

शेरने भी भाँप लिया था कि उसका शिकार आँखोंसे ओझल हो

"दोनों हाथोंसे चाकूकी मूँठ थामकर वार करनेकी कोशिश की।"

कर उसकी खोपड़ीपर—पलँगपर—सवार था, इसलिए, अपनी मुक्तिके लिए और भी ज़ोरके झटके लगा रहा था।

हथियार कोई था नहीं। हाँ, चौकेमें एक बड़ा शिकारी चाकू ज़रूर था; पर वहाँ तक जाना आसान न था। पलँगसे उठते ही कहीं शेर न निकल पड़े। घोष बाबूकी स्नायुओंकी शक्ति भी क्षीण हो रही थी। उनके दमका भी दम निकल रहा था। ईश्वरका नाम लेकर घोष बाबू चुपचाप उठे, सिरहानेकी ओरसे दबे पाँव फुरतीसे गए और चौकेसे बड़ा शिकारी चाकू ले आए।

दोनों हाथोंसे चाकू की मूँठ थामकर वार करनेकी कोशिश की; पर हिचकिचाहट-सी हुई, कहीं ओछा वार हुआ और चाकूका फल हृदय तक न पहुँचा, तो शेर और भी उत्तेजित हो जायगा, भन्नाकर, पलँगको उलटकर घोष बाबूका ख़ात्मा कर देगा। पर मरता क्या न करता, और साहसी व्यक्ति आती मौतसे भिड़ता ही तो है। हाँ, एक बात साफ़ थी। घोष बाबूकी ओरसे एक ही वार हो सकता था।

शेरकी अगली टाँगें झटका मारनेके बाद जैसे ही रुकीं, वैसे ही पीठमें, गर्दनसे कुछ हट कर, चाकूका नौ इंची फल खचाकसे घुस गया, और वह सीधा दिलमें जा बैठा।

ज़मीनको हिलानेवाली गर्जना हुई, फिर एक तड़प और उसके साथ धड़ामका शब्द और उसीके साथ बेहोशीका आलम छा गया!

अगले दिन प्रातःकाल रामसिंहने उल्टे हुए पलँगके निकट खूनमें लथपत शेरको मरा और घोष बाबूको, बड़ी तलाशके बाद, दीवारसे सटे बिस्तरेमें ढँका अचेत पाया। बात यह हुई थी

कि चाकूके भोंकनेसे शेरने वह उछाल ली कि पलँगका सारा टाट-कमंडल उछलकर पलट गया, और घोष बाबू भी गेंदकी भाँति पलँगकी भीतरी ओरको गिरे। तथा दीवारसे टकरा गए। ऊपरसे बिस्तरेने संपूर्ण दृश्यपर परदा-सा डाल दिया।

उस घटनाके आतंकसे घोष बाबूने पंद्रह दिन तक खटिया गोड़ी और जीवन तथा मृत्युकी तरंगोंपर प्रवाहित होकर भले-चंगे हो गए।

जंगलकी दुलहिन

घरों और मार्गोंसे दूर, वनके बीच, खिले सौरभमय सुमनोंका आनन्द थोड़े ही व्यक्ति लेते हैं। उँगलियोंपर गिने जानेवाले प्रकृति-प्रेमियोंकी ही वहाँ तक पहुँच होती है। ऐसे लोग उस दिव्यसुरा-रूपी गन्धका पान भले ही कर लें, नहीं तो वे कमनीय फूल महक कर योंही मुरझा जाते हैं। हाँ, गन्धहीन, दिखावटी पुष्पोंके सौन्दर्यपर कवियोंकी कोमल-सी कल्पनाएँ ज़रूर जौहर दिखाया करती हैं। जिस प्रकार एकान्तवासी पौदोंपर खिले सुमनोंकी सुरभिका कोई मज़ा नहीं लेता, उनपर कोई विरला ही लिखता है, उसी प्रकार सीधे-सादे देहातियोंके शौर्य, अद्‌भुत प्रेम और त्याग-सम्बन्धी बातोंका लोगोंको पता तक नहीं चलता। उनकी बातें प्रकाशनके चौंधसे परे होती हैं। जंगली फूलोंकी महकके समान उनके साहसपूर्ण कार्योंकी प्रशंसा आसपास ही फैलकर लुप्त हो जाती है।

* *
*

गया ज़िलेमें एक मनुष्यभक्षी बाघके मारनेवालेको तीन सौ रुपयेके पुरस्कारकी घोषणा सरकारकी ओरसे की गई। बघेरा कुछ बच्चोंको उठा ले गया था, और एक युवा पुरुषको भी उसने मार डाला था। वह इतना चालाक था कि बहुत प्रयत्न करनेपर भी किसीके हाथ न आया। अन्तमें मानभूमि ज़िलेमें चला गया, और एक छोटे जमींदारके इलाकेमें उसने अपना अड्डा जमाया।

बूढ़े जमींदारके गाँवसे बघेरा एक पाँच-छह वर्षीय बालकको उठा ले गया, और कुछ ही दिन बाद, पड़ोसके गाँवसे, एक दुधमुँहे बच्चेको माँकी गोदसे छीन ले गया।

बूढ़ा जमींदार स्वयं एक नामी शिकारी था ; पर नामी शिकारी होना किसी जमींदारका कोई गुण-विशेष नहीं है। जमींदारको किसानवत्सल होना चाहिए, किसानोंको अपनी भुजा समझनी चाहिए और जो कुछ वे जमींदारको देते हैं, उसका कुछ-न-कुछ भाग, किसी-न-किसी रूपमें, किसानोंको मिलना चाहिए। वह जमींदार भी ऐसा ही करता था—किसी नीतिके खयालसे नहीं, वरन् अपना धर्म समझकर। अपने इलाकेके लोगोंको अपने हाथसे मुफ्त ओषधि बाँटता और दूरके रोगियोंको अपने यहाँ ठहराकर भोजन तक देता। उनके सुख-दुखमें हाथ बँटाता, और जादू टोना तक उसीके हाथसे होता। उसके इलाकेके आदमी भी आधे जगली थे। मानभूमि ज़िलेमें रहनेवाले जंगली कहे जानेवाले लोगोंमें विवाहकी प्रथा यह है कि कोई भी युवक किसी युवतीसे (अपने कुलके बाहर) अपने इच्छानुसार विवाह कर सकता है। हाँ, उस युवतीके पिताकी स्वीकृति अवश्य लेनी पड़ती है। ऐसे लोकप्रिय जमींदारका, जो अपने इलाकेके लोगोंको सिद्धान्त और व्यवहारसे अपने घरका ही आदमी समझे, कितना प्रभाव हो सकता है, इस बातकी कल्पना सहज ही में की जा सकती है।

* *

*

बघेरेका उत्पात बढ़ता ही गया। उसके मारनेका पुरस्कार भी तीन सौसे बढ़ाकर छह सौ कर दिया गया। बूढ़े जमींदारने भी—

रुपयोंके लालचसे नहीं, वरन् आतंक-निवारणके लिए—उस बघेरेको मारनेकी ठानी। ऐसे अवसरोंपर वह अपने सभी गाँवोंसे प्रसिद्ध शिकारियोंको बुलाया करता और शिकारको जानेसे पूर्व चाँदमारी (Target shooting) भी करता था। बूढ़े जमींदारके प्रति लोगोंकी इतनी श्रद्धा थी कि वे उसकी बातपर जान तक दे सकते थे। उसका शिकार उन बड़े आदमियोंके शिकारके समान न था, जो अपने आमोद-प्रमोदके लिए भूखे-प्यासे किसानोंको हाँकेके लिए बेगारमें बुला भेजते हैं। न आनेपर उन्हें सताते हैं, और घंटोंके हाँकेके बाद उन्हें कुछ खाने तक को नहीं देते। बूढ़ेका जीवन तो अपने लोगोंके लिए ही था। ख़बर पाकर सब लोग तीर कमान लेकर आ गये। उन आनेवाले नामी शिकारियोंमें एक हृष्ट-पुष्ट जद्दू नाम का युवक भी था। एक प्रकारसे वह सब शिकारियोंका अगुआ था। तीर-कमानके निशानेमें वह अपना सानी न रखता था। इसके अतिरिक्त वह एक कलाविद शिकारी भी था।

चाँदमारीकी तैयारी हुई। जमींदारने विजेताके पीनेके लिए आसव भी लाकर रख दिया। जद्दू अपने निशानेमें इतना प्रवीण था कि पचास क़दमपर खड़ी रखी हुई दियासलाईके सिरेको अपने तीरसे बेध देता था ; पर उस दिनकी चाँदमारीमें जद्दूका एक भी निशान ठीक न पड़ा! जब-जब उसकी बारी आती, तभी तब उसका निशान खाली जाता। उस दिन वह बड़ा ही व्यथित प्रतीत होता था। उसका ध्यान ही कहीं और था। लेनेको तो वह निशान लेता था ; पर उसका मन उसके साथ न था। उसकी आकृति मानो कहती थी—"इस चाँदमारीमें विजेता होने और बाघ मारनेसे तेरा क्या बनेगा ? तेरे शौर्यका इतना भी तो आदर नहीं,

जो तेरी मनःकामना पूरी हो सके। तुझसे तो वे ही अधिक भाग्यशाली हैं, जो न तो अच्छे निशानची हैं और न बलशाली ही।"

बात यह थी कि जद्दू एक युवतीसे विवाह करना चाहता था। वह युवती उस इलाक़ेकी परम सुन्दरी थी ; पर जद्दूके कुटुम्ब और उस युवतीके कुटुम्बमें पुरानी दुश्मनी चली आ रही थी, इसलिए उसके माता-पिता जद्दूसे विवाह करनेमें अपनी स्वीकृति न देते थे। जद्दूने बीसों बार बूढ़े ज़मींदारसे अनुनय-विनय की कि वह बीचमें पड़ कर उसका विवाह करा दे। जद्दू और उस युवती—लूती—ने जो प्रेम-बेलि बोई थी, वह बढ़ती ही गई ; पर उनका मिलन न हुआ। दिन बीतनेके साथ-साथ ही विरह और निराशाजन्य प्रेममें गुरुता और उत्पीड़नकी मात्रा बढ़ती जाती थी। उस दिन चाँदमारीके अवसर पर तो जद्दूका हृदय पुष्पधन्वाके तीरोंसे बिंधा पड़ा था। प्रतीक्षा की सीमाका उल्लंघन हो चुका था। निराशाके अतिरिक्त और कुछ उसे दिखाई ही न पड़ता था। निशाना किससे लिया जाता ? वह स्वयं ही निशाना बना हुआ था।

चाँदमारी हो चुकनेपर जद्दूने ज़मींदारसे फिर प्रार्थना की कि वह उसके विवाहके मामलेमें लूतीके पितासे पुराने कौटुम्बिक वैरके भुलानेका आग्रह करे और उसको तथा लूतीको विवाह-सूत्रमें बँधा दे। ज़मींदारने जद्दूको वचन दिया कि यदि जद्दू, लोगोंकी रक्षाकी ख़ातिर, उस बघेरेके मारनेमें सफल हो सकेगा, तो वह उसके मनोवांछित विवाहमें सहायक होगा। जद्दूने सबके सम्मुख शपथ खाई कि वह उस मनुष्यभक्षी बघेरेका अवश्य ही वध करेगा। ज़मींदारने वह विशेष आसव जद्दूको ही पीनेके लिए दिया। जद्दूने अभिमान और हर्षके साथ उसका पान किया, और प्रसन्नवदन वह अपने गाँवको

चला गया। जद्दू निराशा-निशामें आया था ; पर गया एक विजयी की भाँति, और सो भी आशा-प्रभाकी ज्योतिमें। ज़मींदारकी वचन-ज्योत्स्नामें उसकी प्रेयसी लूती, लताकी भाँति, उसकी ओर लहलहा रही थी, मानो प्रेमीसे मिलनेके लिए उसने अपनी लावण्यमयी भुजाएँ बढाई हों। जद्दू अपने घरकी ओर जा रहा था ; पर प्रसन्नताके कारण उसके पैर जमीनपर न पड़ते थे। तबीयत करती थी कि गाँवके कोनेपर कहीं लूती मिल जाय, तो वह उसे अपनी चाल ढालसे बता दे कि ज़मींदारके वचनसे अब वह कौटुम्बिक वैरकी उस खाईको पाट देगा, जो उसके और लूतीके बीच मुँह फाड़े खड़ी है।

* *
*

अगले दिन मध्याह्नको कई आदमी जद्दूके गाँवसे जमींदारके पास आये, और बड़ी उत्तेजनाके साथ उन्होंने कहा—"कमल-जैसी सुन्दर लड़की—लूती—को, जिसके रूप-लावण्यपर जद्दू निछावर हो चुका था, आज प्रातःकाल बघेरा उठा ले गया। लूती अन्य लड़कियोंकी भाँति पनघटपर गगरी भरने गई थी कि एकदम बघेरा टूट पड़ा और उसे मुँहमें दबाकर चम्पत हुआ। इतना बड़ा बघेरा हम लोगोंने अब तक कभी न देखा था। देखो, लूतीकी ओढ़नीका यह एक टुकड़ा है, जो झाड़ीमें उलझकर और फटकर वहीं रह गया था। लूतीके माता-पिता इस घटनासे इतने दुखी हैं और ऐसे हक्केबक्के हो गये हैं कि समझमें नहीं आता, उनको सान्त्वना कैसे दी जाय। जद्दू भी तभीसे गायब है। कमान और तर्कश ले कर वह बघेरेके पीछे गया है, और अपनी प्रेयसीकी ख़ातिर बाघसे बदला लिए बिना उसे खाना-पीना हराम रहेगा।"

जमींदारने वीरोंका एक दल तैयार किया। उनके साथ उसने तीन दिन-रात जगलोंकी खोज की; पर कुछ सफलता न मिली। बड़े आश्चर्यकी बात तो यह थी कि कहीं भी घसीटन, जद्दोजहद और रक्तके चिह्न दिखाई नहीं दिये। यदि पनघटपर, जहाँ लूती पानी भरने गई थी, बड़े बघेरेके पंजोंके खोज न होते—जो लूतीके माता-पिताको उस दुर्घटनाके प्रमाणके लिए यथेष्ट थे—तो सबका, विशेष-कर जमींदारका, यह ख़याल होता कि शौर्यकी प्रतिमा जद्दू ही लूतीको हर ले गया।

* *
*

एक पक्ष बीत गया। जद्दूका कोई समाचार न मिला। इस अवधिमें बघेरेने दो आक्रमण और किये। एक बच्चेको ले-कर तो वह चम्पत ही हो गया, साथ ही एक स्त्रीको भी घायल कर गया। इस उत्पातसे तंग आकर लोगोंने एक सप्ताह तक बघेरेके पीछे लगे रहनेकी ठानी। नियत समयपर जमींदार अपने वीरोंके साथ मुहिम पर निकला। जमींदारका दल जैसे ही कुछ दूर गया, वैसे ही उसे एक छोटी पहाड़ीपर एक गाड़ी चरचराती हुई अपनी ओर आती दिखाई दी। गाडी पत्तों और शाखाओंसे ऊपर तक भरी हुई थी। जमींदारके वीरोंने निस्तब्ध होकर उस ओर देखा, और वे खुशीके मारे 'अहा हा!' कहकर शोर करने लगे, क्योंकि उस गाड़ीका गाड़ीवान जद्दू था। दौड़कर लोगोंने जद्दूको घेर लिया। बडी कठिनाईसे, भीड़को पार करके, जमींदार जद्दू तक पहुँच सका। गाड़ीके भीतर एक बड़ा बघेरा मरा पड़ा था। सबने खींचकर उसे बाहर निकाला। जद्दूने ही उसे मारा था, क्योंकि जद्दूके

निशानेके अतिप्रिय स्थान—हृदय—में टूटा हुआ तीर अब भी बिंधा था।

जद्दूको सरकारी इनाम मिला, क्योंकि उसने वही मनुष्यभक्षी बघेरा मारा था, जिसके लिए सरकारने इनाम रखा था। पर लोगोंको एक बड़ा आश्चर्य था, अपनी प्रेयसीके लिए—जिसकी प्राप्तिके लिए उसने सभी देवी-देवता मना डाले थे, ज़मींदारकी अनुनय-विनय की थी और जिसकी विरहाग्निमें उसने अपना कलेजा जलाया था—जद्दू शोकातुर और चिन्तामग्न प्रतीत न होता था। बघेरा उसने मार ही लिया था, और यदि लूती गाँवमें होती, तो बूढ़े जमींदारकी बातको उसके पिता टालते थोड़े ही। सब काम हो जानेपर लूती जद्दूको न मिलती, तो प्रेमके उस पुराने रोगीको चैन कैसे पड़ता? ऐसी अवस्थामें विरही आँसुओंके जलसे प्रेमस्मृति-बेलको सींचता है, सूखकर काँटा हो जाता है; पर जद्दूके रोम-रोमसे विजय-मिश्रित आनन्द स्रवित हो रहा था। उसके आनन्दमें क्या रहस्य था—कुछ समझमें न आता था। शायद प्रेमके शुद्ध रूप त्याग और भक्तिकी भावना उसके हृदयमें जाग्रत हो गई हो; पर उमड़ते हुए समुद्रकी भाँति चढ़ती जवानीमें प्रेमकी वह पवित्र दिशा—त्याग—नहीं होती। युवावस्थाकी तरंगें तो आसक्तिकी खाड़ीकी ओर ही हुँकारती हुई आती हैं। तब जद्दूके हर्षमें क्या कोई रहस्य था? शायद।

* *
*

कुछ समय पश्चात् चारों ओर ख़बर फैल गई कि जद्दूके गाँवके निकट जंगलमें—उस स्थानपर, जहाँ लूतीको बघेरेने पकड़ा था—बड़ी रहस्यपूर्ण घटना घट रही है। जद्दूके मकानके निकट एक

विशाल कटहलका पेड़ था, जो इस प्रकार छाये हुए था, मानो उसने धूपसे रक्षा करनेके लिए मकानको गोदमें बैठा रखा हो। उसी वृक्षसे रात्रिके समय लूतीका शब्द सुनाई पड़ता। वह अपने वीर प्रेमीका वहाँसे आह्वान करती। जद्दू भी उस शब्दको सुनकर अपनी प्यारी लूतीकी प्रेतात्माके पास चला जाता। उनकी कानाफूँसी, दबी हुई लजीली हँसी और कदाचित् लूतीकी मधुर मुसकानकी आभा भी आमोंके बौरसे सुरक्षित और चन्द्रिकाकी कोमल किरणोंपर आरूढ़ होकर जंगलके प्राणियोंको मुग्ध कर लेती, और गाँवके बाहर शीतल मंद सुगंध समीरके झकोरोंमें सोनेवाले स्त्री पुरुषोंसे अटखेलियाँ करके उन्हें जगा देती। आश्चर्यचकित लोगोंने उस दिव्य प्रेतात्माको देखा भी, और किस वेषमें ?

रुपहले डोरों—किरणों—की सुहावनी साड़ी और स्फटिक माला पहने हुए ! नीरव निशामें जब समीर सुप्त प्राणियोंको गुदगुदाता हुआ चारों ओर दौड़ता, तब उस छप्परपर, जिसके नीचे लूती पार्थिव रूपमें प्रकट हुई थी, सफ़ेद लत्तेसे लिपटा एक तीर आकर लगता। वह लूतीके माता-पिताके लिए बुलावा था। उस सिगनलके पाते ही लूतीके माता-पिता उस वृक्षके निकट जाते। पिता तो नतमस्तक, पर निस्तब्ध, पेड़के पास खड़ा रहता ; किन्तु उसकी माताके कोमल हृदयमें बाढ़-सी आ जाती और वह सिसककर कह उठती—"मेरी प्यारी बेटी लूती ! तू देवताओंके साथ शान्तिसे रह। बेटी लूती, हमारे दोषोंको क्षमा कर।"

यह सुनकर जद्दू पेड़से कूद पड़ता और लूतीके माता-पिताको गाँव लिवा जाता। गाँवकी स्त्रियाँ, बच्चे और पुरुष—सभी इस बातको देखते ! तदुपरान्त जद्दू उस पेड़की ओर आता और

लूतीको पुकारता। गाँववाले लूतीकी प्रेतात्माको मानवी आकारमें पेड़से उतरते देखते और उन दोनोंको—जद्दू तथा उसकी प्रेतात्मा वधूको—हिरन और हिरनीके जोड़ेके समान जगलमें जाते निहारते। फिर वे जंगलमें छिटकी चाँदनीमें विलीयमान हो जाते।

तीन मास तक प्रत्येक शुक्ल पक्षमें यह अभिनय-सा होता रहा। अन्तमें लूतीके दुखी माता-पिताने अपने कृपालु ज़मींदारसे प्रेतबाधा-निवारणार्थ याचना की। उसने उन्हें कष्ट-निवारणके लिए आसव पीनेको दिया, और जद्दू तथा लूतीकी प्रेतात्माका विवाह कर देनेकी सलाह दी। प्रेतात्मासे विवाहकी तिथि निश्चित हो गई। बूढ़े जमींदारको तो विवाहमें आना ही था। एक प्रकारसे वह उभय पक्षोंका पुरोहित था। जमींदारने अपने एक प्रतिष्ठित अंगरेज़ मित्रको भी विवाह-संस्कारमें आमन्त्रित किया।

जद्दूका गाँव दो पहाड़ियोंके बीच एक गहरी घाटीमें था। जंगलकी करधनी पहने, लगभग बीस झोंपड़े ही उस गाँवमें थे। अंगरेज़के लिए आमके पेड़के नीचे एक चारपाई बिछा दी गई। घाटी लोगोंके नाच और ढोलके निनादसे गूँज रही थी। जमींदार, जो उन लोगोंका वैद्य और ज्योतिषी भी था, अपने काममें लग गया। उसने शीघ्र ही एक आसव तैयार किया। मंत्रोंके प्रयोगसे एक विशेष पेय बनाया गया। उस पेयका प्रभाव यह बताया गया कि लूतीका सूक्ष्म शरीर पार्थिव रूपमें परिवर्त्तित हो जायगा।

वृत्ताकार घेरेमें विवाह मंडप बना था; बीचमें कुल-देवत की प्रतिमा थी, उसीके समीप लकड़ीके दो मूढ़े थे। एकपर कमान और तर्कश लिये जद्दू बैठा था, और दूसरा मूढ़ा खाली था; उस पर जंगली फूल चुनकर रख दिये गये थे। जद्दूकी दाईं भुजा

खाली मूढ़ेकी ओर इस प्रकार फैली हुई थी, मानो वह किसीका आलिंगन कर रहा हो।

बूढ़े ज़मींदार—उस समयके पुरोहित—ने धीमे स्वरमें कहा—"यह प्यारी लूतीका सूक्ष्म शरीर है। जब हमारी स्त्रियाँ प्रेयसी कहीं जाती हैं, तब उनके सूक्ष्म शरीर हमारे साथ ही तो रहते हैं। सूक्ष्म शरीर एक ही समयमें दो स्थानोंमें रह सकता है। वे लोग, जिनका मस्तिष्क अधिक विकसित होता है, और जिनकी पहुँच अन्नमय कोषसे परे होती है, किसी-न-किसी रूपमें अपने अनुपस्थित प्रियजनोंकी उपस्थितिके लिए प्रार्थना किया करते हैं। जिनमें श्रद्धा और भक्ति असाधारण रूपमें है, वे अपनी स्त्री अथवा प्रेयसीको साक्षात् रूपमें देख सकते हैं, और उसका अनुभव पति अथवा प्रेमी ही कर सकता है। प्रेम एक विचित्र शक्ति है, जिसको न तो ये पहाड़ ही और न जंगली जन्तु ही नष्ट कर सकते हैं।"

चार युवक ताल-स्वरसे मंडपमें प्रतिष्ठित प्रतिमा दूल्हा और सूक्ष्म शरीरमें विद्यमान दुलहिनके चारों ओर नाचने लगे। गानेकी समाप्तिपर दुलहिनके माता-पिता फूलोंकी मालाएँ लेकर उठे। उन्होंने एक माला तो जद्दूके गलेमें डाल दी और दूसरी खाली मूढ़ेपर रख दी। फिर उन्होंने हाथ जोड़कर शुभ कामना की—"महादेव! महादेव! तुम इस पाणिग्रहणके साक्षी हो।" इन शब्दोंके उच्चारण होते ही बीसों स्वरोंसे ये ही शब्द दोहराये गये।

पौ फटी, और दुलहिनके माता-पिता चले गये। मंडपके पाससे दर्शकोंकी भीड़ भी कम होने लगी। उस संस्कारके एक विख्यात दर्शक—चन्द्रमा—की मद-भरी आँखें कुछ मिचने-सी लगीं, और दिवाकरकी रक्तवर्ण भृकुटीका आभास हुआ। जद्दू अभी

तक अपने आसनपर डटा था। सूर्यके तनक सिर उठानेपर वह भी उठा, और प्रतिमाको साष्टांग प्रणामकर उसने उस विशेष आसवका पान किया। खाली मूढ़ेके निकट भी वह प्रणाम-स्वरूप झुका और अपनी प्यारी लूतीके हारोंको लेकर, उसके सूक्ष्म शरीरका आलिंगन करता हुआ चुपचाप जंगलमें चला गया।

चार मास बाद उसी इलाक़ेमें एक और मनुष्यभक्षी बघेरा आया। अठारह मासके भीतर यह तीसरा बघेरा था। पहले दो मनुष्यभक्षी बघेरोंको तो जद्दू मार चुका था। अगस्तका महीना था। मूसलधार मेह बरस रहा था। ऐसे समयमें ज़मींदार अपने प्रतिष्ठित अंगरेज मित्रके पास पहुँचा, और मनुष्यभक्षी बघेरेके शिकारमें साथ चलनेको कहा। लगभग दस दिनसे उस बघेरेकी खबर मिली थी, तभीसे जद्दू अनुपस्थित था, इसीलिए उसकी सहायता दुष्प्राप्य थी।

बघेरा असाधारणतया चालाक था। अपनी रक्षाके विचारसे लोग पाँच-पाँच छह-छहकी टोलीमें ही निकला करते। बघेरा धोखाधड़ीसे उनपर आक्रमण किया करता। वह कभी खुले मैदानमें न आता, वरन् किसी आड़से एकदम गुर्राकर दहाड़ा करता और इस प्रकार टोलीको डराकर भगाया करता। ऐसी दशामें कोई-न-कोई भयभीत स्त्री अपनी ओढ़नी या सिरपर बाँधनेका कपड़ा गिरा जाया करती। बघेरा उस कपड़ेको उठा ले जाता और किसी झाड़ीके किनारे उसे छोड़कर वहीं घात लगाकर बैठ जाता। ऐसा करनेकी उसकी बान पड़ गई थी, क्योंकि उसने न-जाने यह कैसे मालूम कर लिया था कि कपड़ेकी तलाशमें जंगल-निवासी स्त्रियाँ अवश्य लौटेंगी। यद्यपि स्त्रियोंको काफ़ी

सचेत कर दिया गया था, फिर भी कोई-न-कोई स्त्री इस खयालसे दो-चार घंटे बाद ज़रूर लौटती कि गिरे हुए कपड़ेको उठा लानेमें हर्ज ही क्या ? उन्हें इस बातपर विश्वास ही न होता था कि बघेरेने उन्हें पकड़नेके लिए वहीं जाल रच रखा है। बघेरा इस प्रकार स्त्रियोंको मारा करता।

ज़मींदारके अंगरेज़ मित्रके बँगलेसे दस मीलकी दूरीपर दो नंगे पहाड़ोंके बीच एक प्रसिद्ध घाटी थी, उसीमें बघेरा देखा गया था। अंगरेज़ने अपनी बारह नम्बर बन्दूक तो ज़मींदारको दे दी, और स्वयं एक बड़ी बोरकी रायफ़ल लेकर वे दोनों उस ओर चले। उनके साथ तीन आदमी और थे, जिन्हें यह बात मालूम थी कि बघेरेने एक स्त्रीके कपड़ेको ले जाकर कहाँ छिपाया है। उस घाटीके मार्गसे होकर स्त्री-पुरुषोंकी एक टोली जा रही थी, और बघेरेने अपने वही हथकण्डे वहाँ भी दिखाये ! अकस्मात् गर्जन और गुर्राहटसे घबराकर लोग जो भागे, तो एक स्त्रीकी ओढ़नी गिर गई, और बघेरा उसे उठा ले गया।

जमींदार और अंगरेज घाटीमें खोज करके बाईं ओरको चढ़ गये। वहाँसे पानीका नाला नीचे दिखाई पड़ा। नालेके पथरीले धरातलसे सटी हुई एक गुफा भी दिखाई पड़ी। गुफाके मुँह पर घनी बेलें छाई हुई थीं, और उनपर से बूँद-बूँद पानी टपक रहा था। भीगा और मिट्टीसे सना एक कपड़ा भी दिखाई पड़ा। कपड़ा फैलाकर ऐसी चालाकीसे रखा था कि वह एक झटकेमें ही वहाँसे खींचा जा सकता था। उसका एक छोर तो एक छोटी झाड़ीके ऊपर था, जो पानीके नालेकी ऊँची दीवारके किनारे थी, और दूसरा बड़ा छोर चट्टानकी ढलवाँ दीवारपर फैला हुआ था। पथ-

रीली जमीन होनेके कारण बघेरेका खोज लेना फ़जूल था ; पर घाटीसे नीचे नालेके मार्गमें पत्थर और कंकर गुफासे ऊपरको हटे हुए थे, और इस बातके प्रमाण थे कि बघेरा उसी गुफामें है ।

जमींदार और अंगरेज़ पानीके नालेकी बाईं ओर एक ऊँची चट्टानपर नाकेकी जगहपर बैठ गये । उनके चारों ओर आड़ भी थी । अपने साथके तीन आदमियोंको उन्होंने नीचेकी घाटीके मुँहपर भेज दिया, जिससे बघेरा उधरसे न निकलने पाये ।

जमींदार और अंगरेज एक घटे तक प्रतीक्षा करते रहे । इस बीच बूँदा-बाँदीकी कोमल टप-टप ध्वनि होती रही ; पर एकदम धीमी-सी 'उगा ३'की ध्वनि सुनाई पड़ी, मानो किसीने लम्बी जम्हाई ली हो ।' वही ध्वनि—पर अधिक स्पष्ट—फिर सुनाई पड़ी । कहाँसे ? उसी गुफासे । सम्भवतः भयानक मनुष्यभक्षी मध्याह्नका निद्रासे जगा है और अब निकलने ही वाला है—इस ख़यालसे जमींदार तथा अंगरेज और भी चौकन्ने होकर बैठ गये । किसी भी क्षण आतंकरूप वह बघेरा निकल सकता था, इसीलिए उनकी आँखें गुफा और कपड़ेपर लगी हुई थीं ; पर उनके विस्मयकी सीमा न रही, जब उन्होंने झाड़ीके ऊपर कपड़ेको हिलते देखा । उसके बाद झाड़ीकी ऊपरवाली शाखाएँ सरसरकर हिलने लगीं, जिससे चट्टानकी दीवारकी ओरका कपड़ा भी फरफराने लगा । वायुमें तनक भी गति न थी, इसीलिए झाड़ीका हिलना और कपड़ेका फरफराना एक विस्मयके अतिरिक्त और क्या हो सकता था ! थोड़ी देर उपरान्त झाड़ीके पीछे, पत्थरोंके टुकड़ोंपर असावधानीसे रखे पैरोंकी आहट भी सुनाई पड़ी । इससे यह स्पष्ट था कि वहाँपर कोई चीज़ या कोई व्यक्ति छिपा अवश्य है । जो भी हो, पर यह

बात निश्चित थी कि वह जीव वहाँपर घाटीके नीचेसे बड़ी सावधानीसे आया था, क्योंकि उसका आना न तो दिखाई ही पड़ा था और न उसके आनेकी आहट ही हुई थी।

इस बातकी बड़ी आशंका थी कि कहीं उस झाड़ीके निकट वह कपड़ेवाली स्त्री चुपचाप अपना कपड़ा लेने न आई हो; पर बूढ़े ज़मींदारने सिर हिलाकर कहा—"प्रेमपाशमें फँसी स्त्रीको छोड़कर और कोई स्त्री इतना विकट साहस करके मनुष्यभक्षी बघेरेकी उपेक्षा नहीं कर सकती।" उसी समय कपड़ा फिर हिला, मानो जान-बूझ कर बघेरेको लुभाया और तरसाया जा रहा हो। उस दृश्यको देख कर जमींदार और अंगरेज चित्रवत् रह गये, और बघेरेका तो उन्हें खयाल ही न रहा। उसी आश्चर्य-मुद्रामें एक स्वप्न चित्र-सा उनके सामने खिंच गया। स्वप्नावस्थामें जैसे कुत्तेकी दुम बढ़कर पचासों गज लम्बा साँप बन जाती है, आदमीके पंख लग जाते हैं, और वह उड़ना भी महसूस करता है, ठीक उसी प्रकार जाग्रत अवस्थामें झाड़ीके निकट दोनों शिकारियोंको एक बहुत बड़ा बघेरा दिखाई दिया। थोड़ी देर बाद वह बघेरा निर्द्वन्द्व होकर चपटी चट्टानपर बैठ गया, और उसकी पूँछकी इधर-से-उधर होनेकी ध्वनि स्पष्ट सुनाई पड़ने लगी।

चौड़े कन्धेको फैलाये, बड़े सिरको ऊपर उठाये, कनौती किये हुए अविचल दृष्टिसे बघेरा झाड़ीको घूर रहा था, जहाँ कपड़ा टँगा था।

एकदम बघेरा तड़पा, मानो वह झाड़ीके दूसरी ओरवाली चीज़ पर आक्रमण कर रहा हो। झाड़ीके पीछे किसी आदमी या स्त्रीके होनेकी सम्भावनासे गोली चलाना भयावह था; फिर भी अंगरेज

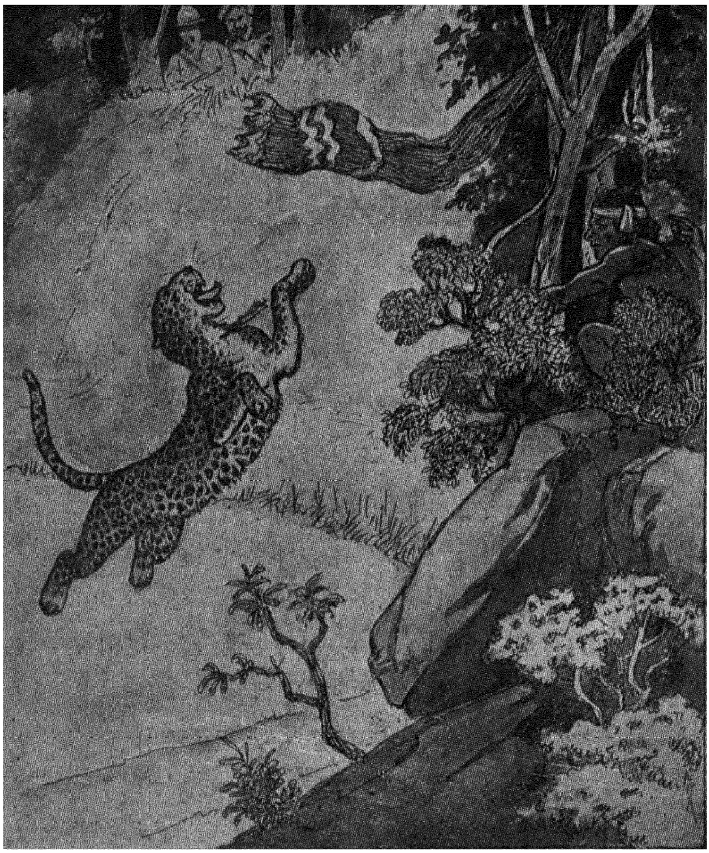

"दैत्य बघेरा पिछले पैरोंपर पीछेको हुआ, और उसकी गर्दनमें एक तीर विंधागया।"

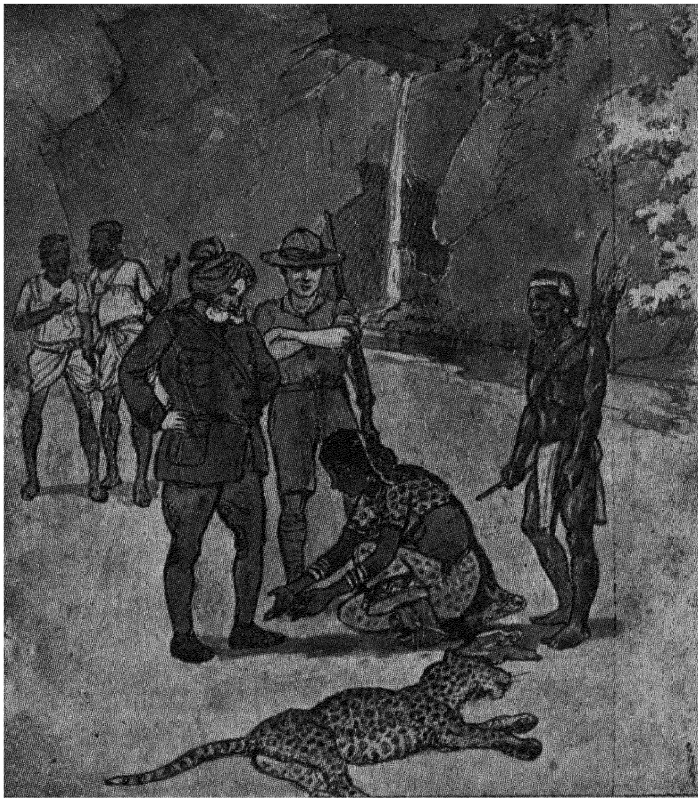

"जमींदार पहले तो अवाक् रह गया ; पर जब उसने लूतीको बुलाया,
तब वह उस ओर आई, और जमींदारके उसने पर छुए।"

महाशयने अपनी रायफ़ल उठा ली, और उसी समय 'भिज'की ध्वनि हुई। दैत्य बघेरा पिछले पैरोंपर पिछेको हुआ, और उसकी गर्दनमें एक तीर बिंध गया।

दहलानेवाली गर्जन हुई। इतनेमें 'भिज'की दूसरी ध्वनि हुई और एक दूसरा तीर बघेरेके कन्धेमें प्रवेश कर गया। वह प्राण-घातक निशाना था। क्रोधपूर्ण गर्जन हुई, और जमींदार तथा अंगरेजकी ओर कुछ भगदड़ मची। एक तीसरा तीर भी उनकी ओर भन्नाता हुआ निकला, और वे जमीनपर लेट गये, ताकि बघेरा उनको न देख सके और उस ओरसे आनेवाले तीरसे भी वे बच सकें। शीघ्र ही घाटीकी दाईं ओरको, तीस-चालीस क़दमपर, किसीके गिरनेका धमाका हुआ, और भयंकर बघेरेकी मृत्यु-वेदना सुनाई पड़ने लगी। इतनेमें नालेके दूसरी ओरसे बादल-कणोंसे अच्छादित तथा घटाटोप वायुमंडलको चीरती हुई आमोद-भरी आवाज़ गूँजी—"लूती! प्यारी लूती!"

उस आवाजके साथ ही बाँसुरीकी मीठी तान कानोंमें पड़ी। प्रत्युत्तरमें एक बीसवर्षीया मृगनयनी युवती झाड़ीकी आड़से निकली। वह काले और लाल रंगके कपड़ेसे अपनी काया ढँके हुए थी। उसके भौंरे-जैसे काले, लम्बे और चमकते हुए बाल बाईं ओरको पड़े थे। छोटे-छोटे सफ़ेद जंगली फूलोंसे वह विभूषित थी। इस वेशमें लूतीकी छवि अति कमनीय प्रतीत होती थी।

जमींदार पहले तो अवाक् रह गया; पर जब उसने लूतीको बुलाया, तब वह उस ओर आई, और जमींदारके उसने पैर छुये। जमींदारको इस बातपर पूरा विश्वास हो गया कि लूतीके सूक्ष्म शरीरने मानव-रूप धारण कर लिया है, क्योंकि जंगली कहलानेवाली जातियोंको

अपने देवताओंमें अटल विश्वास होता है। जमींदारका खयाल था कि शिवजी उस विवाह-संस्कारके साक्षी थे, अतएव उन्हींकी कृपासे लूतीको पुनः पार्थिव शरीर प्राप्त हो गया।

जब तक जद्दू हँसता और बाँसुरी बजाता हुआ आया, तब तक सब लोग मरे हुए बघेरेके पास पहुँच गये थे। जमींदारने अब लूती और जद्दूको आदेश दिया—"जाओ, अपने माता-पिताको प्रणाम करो, और अपने आदमियोंके साथ आज रातको नाचो-गाओ।"

* *
*

अंगरेजको लूतीके पार्थिव शरीरमें लौट आनेकी बातपर तो विश्वास न हुआ; पर उसके अदम्य साहसपर—झाड़ीके पीछेसे मनुष्यभक्षी बघेरेको ललचानेपर—वह स्तम्भित था। जद्दू, जमींदार और अंगरेजके आनेसे एक घंटा बाद आया था, और इस सावधानीसे आया था कि ज़मींदारके खड़े किये हुये एक तीन सन्तरियोंकी उसपर नज़र तक नहीं पड़ी। लूती—जंगली जाति-वालोंके शब्दोंमें लूतीकी प्रेतात्मा—भी उसी समय आई होगी, यह खयाल करके कि कहीं अँधेरा न हो जाय, उसने कपड़ा हिलाकर बघेरेको चकमा दिया था।

जद्दूने यह बात स्वीकार की कि वह दस दिनसे गैरहाज़िर था, और उसी दिन प्रातःकाल आया था। उसको यह बात मालूम हो गई थी कि आतंकरूप बघेरा उस घाटीमें देखा गया है।

लौटती बार अंगरेजने अपने जमींदार मित्रसे लड़कीकी वीरता—झाड़ीके क़रीब सरककर जाने और झाड़ीके पास छिपने, उस

झाड़ीके पास, जो मनुष्यभक्षी बघेरेकी गुफाके पास थी—की चर्चा की। Romance का इससे अधिक ज्वलन्त उदाहरण और क्या होगा? जमींदारने गम्भीरतासे उत्तर दिया—"सूक्ष्म शरीर भय-रहित होता है, और यह भी मान लिया जाय कि स्वयं लूती मानवी रूपमें वहाँ आकर छिप गई थी, तो भी उसके लिए कोई भयकी बात न थी, क्योंकि उसको अपने पतिके अचूक निशानेमें पूर्ण विश्वास था। स्त्रियाँ जब किसीसे प्रेम करती हैं, तब उसे अपना दिल दे बैठती हैं, और ऐसा ही व्यवहार करती हैं।" अन्तिम वाक्य कहते में बूढ़े जमींदारके ओठोंपर मुस्कान आ गई। उससे अंगरेजको सहमत होना पड़ा, और आश्चर्यमें डूबा वह अपने बँगलेपर चला गया।

* *
*

एक क्लबमें बैठे कई अंगरेज जंगली जातियोंके विषयमें बातचीत कर रहे थे। उनमें जमींदारका मित्र भी था। उससे एक व्यक्तिने आसामसे कुलियोंकी भर्तीके लिए आये हुए एक अंगरेज प्लान्टरका परिचय कराया। बातचीतके दौरानमें प्लान्टरने कहा—"आठ-नौ महीने हुए, जद्दू नामका एक आदमी मेरे बगीचेपर आया था। वह आपके ही जिलेका था। वह अपने साथमें एक रूपवती युवतीको भी लाया था। युवतीको बघेरेने कंधेपर घायल किया था। वह आदमी बड़ा ही सुदृढ़ और अचूक निशानची था। उस युवतीको वह हमारे यहाँ छोड़ गया था। अस्पतालमें उसका इलाज हुआ, और वह अच्छी हो गई।"

प्लान्टर और जमींदारके मित्र अंगरेजने तारीखें मिलाईं, तो

जद्दू अन्तिम बार अगस्तमें आसामके बग़ीचेमें गया था और लूतीको लिवा लाया था।

सूक्ष्म शरीरके पार्थिव शरीरमें परिवर्त्तित होनेमें और उस विवाह-संस्कार और अपने जमींदारके चमत्कारपूर्ण आसवमें जद्दूका उतना ही दृढ़ विश्वास था, जितना अन्य लोगोंका। यदि विश्वास—अन्ध-विश्वास—की भित्तिपर उसकी सादगी और प्रीति आधारित न होती, तो साहस उसका साथ कभी न देता। यह ठीक है कि जद्दूने लूती की प्राप्तिमें अपनी सम्पूर्ण शक्तियाँ लगा दी थीं, और लूतीको घायल करनेवाले बघेरेको मारनेके पश्चात् कौटुम्बिक वैरके कारण उसके हृदयमें यह आशंका बनी रही थी कि कहीं जमींदारका वचन भी खाली न जाय, इसीलिए उसने प्रणयका नवीन मार्ग निकाला। आखिर प्रेमके पन्थ निराले ही होते हैं। जद्दू और लूती उसमें फलीभूत हुए, इसमे आश्चर्य ही क्या? वे तो बधाईके पात्र हैं, और उनकी लीला काव्यमयी है। हाँ, यह भेद अब तक नहीं खुला कि जद्दूने उस बघेरेको, जो लूतीको उठा ले गया, दस दिन बाद कैसे मारा। संसारकी अनेक बातें रहस्यमयी हैं। जद्दूकी वह घटना भी किसीको न मालूम हुई, तो क्या?

* *
*

लूतीकी आसाम जाने और आनेकी बात जद्दूके भाई-बन्धोंको नहीं मालूम हुई, और न उस अंगरेजने ही किसीसे कही। उनकी विश्वास-सरिता समयके धरातलपर अब भी अविरत गतिसे बह रही है।

———

जंगलका डाकू

जीवन प्रगतिशील होना चाहिए और प्रगतिशीलताके अर्थ होने चाहिएँ आध्यात्मिक और मानसिक क्षितिजको बढ़ाते रहना ; पर, अधिकांश लोगोंके साथ, अमली जीवनमें, हो यह जाता है कि जीवनकी कुछ समस्याओंको समझनेमें तो वे उदारता दिखाते हैं, और किन्हीं गुत्थियोंके विषयमें वे कट्टरपन्थी हो जाते हैं। भौतिक विज्ञानपर समाजकी नींव रखनेवाले आध्यात्मिक प्रवृत्तिके लोगोंको प्रतिक्रियावादी कहते हैं, और स्वयम् किसी सत्यको न समझनेकी उनकी प्रवृत्ति कठमुल्लेपनमें आती है। असंप्रज्ञात समाधि उनके लिए ठीक वैसे है, जैसे नासमझ सवर्ण हिन्दुओंके लिए हरिजनोंका मन्दिर-प्रवेश।

और कठमुल्लापन—आप उसे कट्टरता, रूढ़िवाद, प्रतिक्रियावाद कह सकते हैं—मनकी वह अवस्था है, जब मनुष्य यह समझने लगता है कि संसारकी तीन-चौथाई अक्ल उसमें है, और शेष एक-चौथाई संसारमें बँटी है। इसी कारण अपनी संकीर्णतामें, बुद्धिके सीमित होनेके कारण, हम लोग निष्पक्ष भावसे कभी-कभी साधारण बातों तकको न मानने अथवा न समझनेकी ज़िद करते हैं। उदाहरणके लिए, जंगली जानवरोंके स्वभावकी बात लीजिए। शहरों और गाँवोंके कोनोंपर, गलियोंके मोड़ोंपर कुत्ते क्यों पेशाब करते हैं? क्या योंही? नहीं। यदि किसीसे कहो कि कुत्तोंकी इस प्रकारकी

आदतमें उनकी Sex-प्रेरणा निहित है, तो वह उसपर सहसा विश्वास नहीं करता। किसीसे यदि यह कहा जाय कि शेर और बघेरे अपनी शिकार-प्राप्तिके लिए अन्य जानवरोंकी बोलियोंकी नक़ल तक कर बैठते हैं, कभी-कभी तो बहुत-से कठमुल्ले इसे चंडूख़ानेकी गप कहेंगे। उनके लिए रामराज्य अथवा साम्राज्यकी स्थापना सम्भव है; पर शेर और बघेरेका दूसरे जानवरोंकी बोलियोंकी नक़ल करना असम्भव है।

असलमें बात यह है कि मनुष्यकी बुद्धि बहुत सीमित है, और अपनी बुद्धिके परेकी बातको वह अनहोनी कह देता है।

* *
*

मईके महीनेमें, हिमालयकी तराईके जंगलोंमें, एक नदीके किनारे दो अंगरेज़—नौलेज़ और रौकबी—खेमे लगाये पड़े थे। रात थी चाँदनी और चन्द्रिकाकी श्वेत चादर पेड़ोंपर पड़ी थी। दूरके पहाड़ सुषुप्तावस्थामें, कुछ ऊँघते-से दिखाई पड़ते थे। कभी-कभी समीर जो अठखेलियाँ करने, गुदगुदाने आता, तो मानो प्रकृति-परी खिलखिलाकर हँस पड़ती। जंगलकी राजनीतिके दाँव-पेच भी चल रहे थे; पर खेमोंके पास तो एक स्वप्निल चित्र-सा खिंचा था, और दोनों अंगरेज़ जंगलकी चाँदनी रातके मदसे शराबोर आराम-कुर्सियोंपर लेटे-से थे। रातके दो बजे होंगे। खेमे स्फटिक-से पड़े प्रतीत होते थे; और दोनों अंगरेज़ोंकी आँखोंमें नींदके स्थानमें चन्द्रिका बैठ गई थी। निद्रा-प्रवेशके वे दो द्वार—नयन—खुले थे। सिगरेटका धुआँ चक्कर काटता हुआ, कुहासेकी भाँति, धीरे-धीरे उठता था। योंही गप-शप हो रही थी कि अकस्मात् एक बूढ़ा मुसलमान गाड़ीवान उनके सामने आया, मानो उस अर्धरात्रिमें कोई प्रेत सामने आ गया हो।

लम्बी दाढ़ी और विनीत मुखाकृतिसे उसकी आन्तरिक वेदनाकी गुरुता और भी बढ़ी हुई मालूम देती थी। गाड़ीवानके पीछे फ़ौरेस्ट-गार्ड था और दोनों अंगरेज़ोंके नौकर भी जागकर वहाँ आ खड़े हुए।

"अब्दुल्ला कैसे आये? इस वक्त तक तो तुम्हें अपने चिरानपर पहुँच जाना चाहिए। तुम्हारे मालिक क्या कहेंगे?"—रौकबीने पूछा?

बूढ़े गाडीवानने—जिसका सम्पूर्ण जीवन जंगलमें ही बीता था और जिसके साथ अनेक रोमांचकारी घटनाएँ घटी थीं, और जो न जंगली हाथीसे डरता था और न शेरसे; और जिसके साथ केवल दो बैल थे—कहा, "हुजूर, मैंने जंगलके ठेकेदारों और साहब लोगोंकी नौकरी इन्हीं जंगलोंमें अब तक की है। रात हो या दिन, मैं आप लोगोंका सामान ढोनेसे नहीं हिचका हूँ। पर मैंने ऐसा निडर और हिम्मतवर (साहसी) शेर नहीं देखा, जो सामानसे लदी और जुती हुई गाड़ीपर आ बैठे—बिना छेड़ख़ानी किये मेरी गाड़ीमें बैठनेकी ज़िद करे।"

बूढ़े गाड़ीवानकी बात सुनकर दोनों अंगरेज़ हँस पड़े, और गाड़ीवानने अपनी मुद्रा गम्भीर करके कहा—"आप यक़ीन करें या न करें, पर मेरा कहना ठीक है। मैं आठ मील चलकर आया हूँ; सो भी अपने बचे हुए बैलके सहारे। नहीं तो .मटक-धूंधरी उजियालीमें मैं नदी-तटसे नीचे खड्डमें गिरकर मर गया होता। बैलने मुझे रास्ता दिखाया। रास्ता भूलकर मैं ढलवाँ चट्टानपर जा पहुँचा और बैल आगे न बढ़ा, अड़ गया और मुझे लौटना पड़ा।"

"तो क्या तुम्हारे बैलको शेरने मार डाला?"—रौकबीने पूछा।

"हाँ, हुजूर!"—ठंडी साँस खींचकर बूढ़ा बोला।

"पर यह तो साफ़-साफ़ बताओ कि आख़िर हुआ क्या ? क्या और गाड़ियाँ तुम्हारे साथ न थीं ?—"रौकबीने पूछा।

"हाँ, थीं। पर वे सब ठीक हैं। अल्लाह उन गाड़ीवानोंको ग़ारत करे, जिन्होंने मुझे अकेला छोड़ दिया।"—अब्दुल्लाने आवेशमें आकर कहा।

"कैसे अकेला छोड़ दिया"?—आतुर रौकबी साहबने पूछा।

"बात यह थी कि मेरी गाड़ी औरोंकी बनिस्बत ज्यादा लदी थी। लाज़िमी तौरसे वह पीछे रह गई। मेरे प्यारे बच्चे—बैल—रास्तेपर खिचड़ते रहे और झूलेकी तरह हिलने-डुलनेसे मुझे नींद आ गई। थोड़ी देर बाद मैंने सपना देखा कि डाकू मुझपर हमला कर रहे हैं, और मैं अपने पैनेसे ही अपने मालिकोंके सामानकी हिफ़ाज़त कर रहा हूँ। फिर मुझे ऐसा ख़याल हुआ कि कुछ डाकू गाड़ीके पीछे चढ़ आये, और उलार होनेसे गाड़ी ऊपरको उठ गई, जुआकी ओरसे और बाँसके काबुकसे बतखों और मुर्ग़ोंने ऐसा शोर मचाया कि मैं बबककर जाग गया, और जो मैंने देखा, तो मेरी बोलती बन्द हो गई। एक खौफ़नाक शेरकी थाप मेरी गर्दनपर रखी थी, और मैं नथा-सा पड़ा था। मैं फ़ौरन समझ गया कि इस घाटीका शैतान शेर है, जिसने अब तक सब शिकारियोंको छका रखा है। और कोई शेर इतना ढीठ और साहसी नहीं हो सकता। शेर जान-बूझकर मेरे पास आया और गुर्राहटसे मुझे चुपचाप पड़े रहनेकी चेतावनी दी। मुझे उसके हुक्मकी तामील करनी पड़ी, क्योंकि उस दैत्यके लिए मैं भुनगेके बराबर था, और मैं असहाय चुप पड़ा रहा।"—बूढ़ेने दम लेते हुए कहा।

"पर क्या तुम्हें विश्वास है कि वह शेर ही था ?"—रौकबीने शक किया।

"शेर !"—अब्दुल्लाने विस्मयसे कहा।

"हाँ, शेर ! क्या तुम्हारी गर्दनपर उसका कोई नख-चिह्न हैं ?"—रौकबीने पूछा।

"हुजूर, यह तो आप जानते हैं कि बिल्लीकी जाति चलतेमें आहट नहीं करती—मखमली थाप रखकर चलती है, और खुदाने उन्हें ऐसा बनाया है कि उनके चलनेमें आहट नहीं होती। और मेरी गर्दनपर वह अपने जुर्मका क्या चिन्ह छोड़ जाता। क्रोधमें वह अपना नख निकालकर रखता, तो नखका चिन्ह तो क्या मेरी लाश ही वहीं रह जाती। और फिर मैंने तो उसकी साँसकी गरम भाप भी सूँघी थी। ऐसा मालूम होता था, मेरे मुँहके सामने, मानो पतीलीसे गरम-गरम बदबूदार भाप निकल रही हो, और फिर सबसे बड़ी बात यह थी कि उसने गुर्राहटसे चेतावनी दी थी।"—बूढ़ेने अधिकारी-मुद्रामें कहा।

"अच्छा ख़ैर, बताओ, फिर क्या हुआ ?"—रौकबीने कहा।

बूढ़ा बोला, "जब शेरके बोझसे गाड़ी जुआकी ओरसे ऊपर उठ गई, तब मेरे बैल गाड़ीमें से खुल गये ; और खुलकर वे कुछ क़दम आगे बढ़े और खड़े हो गये। तब शेर गाड़ीकी पिछाड़ीसे मेरी ओरको बढ़ा, और गाड़ीका अगला भाग, जुआके ज़मीनसे लगते ही धड़ामसे नीचा हो गया। मैंने समझा था कि शेर ऐसा होते ही उतर जायगा ; पर नहीं। वह तो गाड़ीवानकी बैठनेकी जगहपर चारों पंजोंके बल बैठ गया और मेरे भयभीत बैलोंको सड़कपर भागता हुआ देखता रहा, वहींसेबैठे बैठे।"

"इस घटनाकी सचाईपर मुझे विश्वास नहीं होता।"—नौलेज़ने कहा।

"जंगलोंके अपने विचित्र अनुभवसे मैं किसी भी बातको अनहोनी नहीं कहता।"—रौकबीने उत्तर दिया। "हाँ, फिर क्या हुआ (बूढ़ेकी ओर संकेत करते हुए) उसकी बात तो पूरी होने दो।"—रौकबीने विश्वासकी भावनासे कहा।

बूढ़े गाड़ीवानने फिर ताँता बाँधा, "जब मेरे बैल भाग गये, तब भी शैतान शेरने उनका पीछा नहीं किया, और मैंने सोचा कि यह घूमकर मेरा ख़ातमा करेगा। पर मेरे ताज्जुबकी हद न रही, जब मैंने देखा कि बिल्लीकी भाँति वह धीरेसे गाड़ीसे उतरा और मस्त चालसे धीरे-धीरे रास्तेपर चला। उस समय उसकी आकृति चाँदनीमें स्पष्ट और बड़ी भयङ्कर मालूम देती थी—ख़ास तौरसे उस समय, जब वह मेरी ओरको आड़ा हुआ। थोड़ी देरमें वह फिर घने जंगलमें घुस गया। दम घुटानेवाली ख़ामोशी-सी थी उस समय। मुझे अपनी साँस खुद सुनाई पड़ती थी। पर मैं तो अपने बैलोंकी खोज-पर जानेको उतारू था, और गाड़ीसे नीचे उतरने ही वाला था कि मैंने भागते बैलोंकी आहट सुनी। रँभाते हुए वे शीघ्र ही मेरे निकट आ गये। पुचकारकर मैं उन्हें धीरज बँधानेवाला ही था कि इतने ही में मुझे बैलोंके पीछे शेरकी सूरत दिखाई पड़ी। पर यह सूरत पहलेके शेरसे कुछ छोटी थी। मैंने सोचा, रोशनीके कारण धोका होगा; पर फ़ौरन ही जंगलके एक किनारेसे वही शैतान शेर फिर आ गया और मेरे एक बैलको उसने दबोच डाला! धीमेसे मेरा बैल रँभाया और धड़ामसे नीचे गिर गया। मेरा दूसरा बैल डरके मारे गाड़ीके चारों ओर भागने लगा। उसे पकड़नेके लिए मैं

उसके पीछे हुआ और जैसेतैसे करके उसीके सहारे यहाँ आ पाया हूँ।"

"शेरनीने शिकारको शेरकी ओर हाँका! जाड़ेके दिनोंमें—प्रणयके दिनोंमें—शेर और बघेरोंकी यह साधारण आदत होती है कि मादा नरकी ओर शिकारको घेरकर कर देती है।"—रौकबीने मुसकराते हुए कहा।

"पर शेर बैलोंको गाड़ीसे ढिलानेके लिए गाड़ी ऊँची कर दे—यह बात समझमें नहीं आती।"—विस्मयसे नौलेज़ने पूछा।

रौकबीने कहा, "मेरा अपना निजी अनुभव यह है कि जंगली जानवरोंके बारेमें हमें अपना मन खुला रखना चाहिए—अविश्वासकी भावनासे कोई बात नहीं सुननी चाहिए। यह ठीक है कि देहाती लोग बातको बढ़ाकर कहते हैं; पर गाड़ीवानकी बात सम्भव है। जगली जानवरोंके साथ होता यह है कि यदि उन्हें कोई अनुभव किसी दुर्घटनासे या किसी और प्रकारसे प्राप्त होता है तो उस अनुभवसे उनकी पशु-बुद्धि (Instinct) प्रखर हो जाती है, और वह पशु-बुद्धि विकसित होकर तर्क-बुद्धिकी सीमा तक पहुँच जाती है। अकस्मात् मुठभेड़ होनेसे शेर कभी-कभी आक्रमण कर देता है और आदमीको भुनगेकी भाँति कुचल डालता है। फलस्वरूप उसे मनुष्यकी कमज़ोरीका पता चल जाता है, और ऐसी साधारण बातसे वह मनुष्यभक्षी बन जाता है। यह शेर बुड्ढा और काहिल प्रतीत होता है। शेर या बघेरे जैसे-जैसे बूढ़े होते जाते हैं, वैसे वे मक्कार और निडर होते जाते हैं। खुशीकी बात तो यह है कि आस-पासके जंगल शिकारसे भरे पड़े हैं, नहीं तो आदमख़ोर शेर या बघेरे हमारे खेमोंपर भी धावा बोल देते। मुझे पहले भी ख़बर

मिली है कि गाड़ीके मार्गपर एक बड़ा शेर बहुत उत्पात मचा रहा है। यह शेर वही शैतान है।"

फ़ौरेस्ट—गार्ड और बूढ़े गाड़ीवानकी बातोंसे मालूम हुआ कि शेरने पहली बार ही ऐसी हरकत न की थी, वरन् ऐसा करनेकी उसकी आदत पड़ गई थी, क्योंकि बैलोंको नहे-नहाये मारनेसे शेरको उनकी गर्दनपर वार करनेमें कठिनाई होती थी, और किसी प्रकार जुते हुए बैलोंको मार डाला, तो गाड़ीके नीचेसे खींचनेमें बड़ी दिक्कत होती थी।

"बस, बस, ठीक है। मैं समझ गया। बुढ़ापे या कमज़ोरीने उसे यह चाल सिखा दी, तो कोई आश्चर्य नहीं।"—रौकबीने कहा।

"हुज़ूर! चलिये साथ अभी गाड़ीमें बैठकर। अभी तो काफी रात है; और बातकी सचाईको जाँच लीजिए। मैं गाड़ी हाँकूगा, आप बैठे रहें और देखें कि शेर गाड़ीमें पीछे बैठकर गाड़ीको कैसे उठा देता है।"—उत्तेजित गाड़ीवान बोला।

"जीवनमें ऐसा अवसर फिर कहाँ मिलेगा!"—कुर्सीसे उछल कर रौकबी साहब कहने लगे।

* *
*

चाय पीकर नौलेज़ और रौकबी बैलगाड़ीमें चले। अब्दुल्ला गाड़ीवानके बैलको एक चपरासी थामकर कुछ दूर चला। पड़ावसे कई सौ गजकी दूरी तक गाड़ी गई होगी कि अब्दुल्लाका बैल पगहा तुड़ाकर भागा और गाड़ीकी ओर आया; घेर-घारकर बैलको क़ाबूमें किया और यह प्रबन्ध करके कि बैल फिर उधम मचाकर न भाग सकेगा, दोनों अंगरेज़ आरामसे बैलगाड़ीमें बैठ गये। उनकी रायफलें

पास ही तैयार रखी थीं। गाड़ी कुछ ही आगे बढ़ी होगी कि पड़ावकी ओरके जंगलसे धीमी रँभानेकी आवाज़ अकस्मात् सुनाई पड़ी।

रँभानेकी आवाज़ सुनते ही अब्दुल्ला गाड़ीसे कूद पड़ा और उत्तेजित होकर कहने लगा, "शेर द्वारा मारे गये बैलकी प्रेतात्मा बुला रही है।" अब्दुल्लाके बैलने भी ऊधम मचाना शुरू कर दिया। पगहा तुड़ानेके लिए वह ज़ोर मारने लगा और घबराकर आदमियों पर हमला भी करने लगा। बैलकी विचित्र दशा देखकर अब्दुल्लाने कहा, "मेरे बच्चेको जाने दो, ताकि वह अपने भाईको ढूँढ ले।" अब्दुल्ला भावावेशमें था और अन्य नौकर-चाकर मंत्र-मुग्ध-से हो गये थे, और रातकी निस्तब्धताको चीरता हुआ रँभानेका शब्द पहले धीरे और फिर ज़ोरसे आ रहा था। अब्दुल्लाने अपने बैलको पकड़ा और पुचकारा ; पर वह जंगलकी ओर भागना चाहता था—जिधरसे रँभानेकी आवाज़ आ रही थी।

यह आश्वासन दिलाये जानेपर कि दोनों अंगरेज़ उसके साथ रँभानेकी आवाज़की ओर चलेंगे, अब्दुल्लाको सान्त्वना मिली।

*

* *

परिस्थितिके अनुसार एक नई योजना बनी। एक नए आदमीको गाड़ीवान बनाया गया और उसको आज्ञा दे दी गई कि वह गाड़ीको नदीकी तलहटीमें ले जाय और वहाँपर हाँकने और चलानेसे यह बहाना करे, मानो गाड़ी कहीं फँस गई हो। अब्दुल्ला मय अपने बैलके रौकबी साहबके साथ गाड़ीसे कुछ पीछे, पर नदीके किनारेपर, छिपकर डट गया। रौकबी साहबकी रायफ़ल तो तैयार ही थी। और अगर शेर गाड़ीका पीछा कर रहा था, तो वह गाड़ीकी

ओर ज़रूर जायगा और नदीकी सूखी तथा खुली तलहटीमें ज़रूर दिखाई पड़ेगा।

नौलेज़ और एक दूसरा शिकारी उधर गये, जिधरसे रँभानेकी आवाज़ आ रही थी। रँभानेकी आवाज़ घने जंगलसे नदीके किनारेकी ओरको बढ़ रही थी। नौलेज़का ध्येय यह था कि आवाज़की ओर ऐसे बढ़ा जाय, जिससे रँभानेवाला जानवर उसके और गाड़ीके बीच हो जाय। नौलेज़ और एक दूसरा शिकारी लापरवाईसे जंगलमें घुसे, और कोई दो सौ गज़ ही आगे बढ़े होंगे कि झाड़ियोंसे दम घोटनेवाली गंध आने लगी। अब किसी प्रमाणकी आवश्यकता ही नहीं थी। शेरकी गंध थी वह, और इसमें कोई सन्देह नहीं था कि रँभानेकी आवाज़ शेर ही करता था। नौलेज़ और शिकारी शोर करते हुए नदीकी ओर बढ़े, ताकि शेर नदीकी तलहटीकी ओर जाय। शीघ्र ही नौलेज़ और शिकारी नदीके ऊँचे तटपर आ गये, और उनकी बैलगाड़ी रेतीमें फँसी-सी साफ़ दिखाई पड़ी। गाड़ीवान भी इसी प्रतीक्षामें था कि शेर कब अक्रमण करे; पर शीघ्र ही उनके ठीक नीचे—करारसे नीचे—कोई जानवर तेज़ीसे, पर चुपचाप निकल पड़ा, रेतीकी ओरको। दाहिनी ओरको वह कुछ लपका और घात लगाकर छपक-सा गया। फिर धीरे धीरे वह आगे बढ़ा और अस्पष्ट-सा दिखाई देने लगा। कुछ क्षणोंके लिए उनका हृदय उत्तेजित हो गया; पर थोड़ी ही देर बाद गगन-भेदी रायफ़लका शब्द हुआ। ध्वनि और प्रतिध्वनिसे जगल काँप गया और रायफ़ल-ध्वनिके उपरान्त गुर्राहट हुई और फिर पीड़ा-जनक भयानक गर्जना। रौकबी साहबकी रायफ़ल गरजी थी और शेरके रीढमें गोली लगी थी।

...रायफ़ल-ध्वनिके उपरान्त गुर्राहट हुई, और फिर पीड़ाजनक भयानक गर्जना।"

नापनेसे नौ फुट साढ़े आठ इंच शेर निकला।

* *
*

वास्तविक बात यह है कि शेर आवश्यकतानुसार साँभर, गाय और बैलकी बोली बोल लेता है, और बघेरा अन्य छोटे जानवरोंकी बोली बोलता है। शेरने अब्दुल्लाका एक बैल मारकर दूसरेके लिए पड़ाव तक पीछा किया। साधारणतया शेर और बघेरे भरपेट खानेके बाद चैनसे सोते हैं और बिना भूख शिकारपर नहीं जाते। संग्रह करनेकी लालसा उन्हें नहीं होती; पर कभी-कभी वे खूनके ऐसे प्यासे हो जाते हैं—मारनेमें उन्हें ऐसा मज़ा आता है—कि खानेके लिए नहीं, वरन् मारनेकी ग़रजसे ही वे मारते हैं। यह शैतान शेर भी अब्दुल्लाके एक बैलको मारकर और शायद अपनी साथिन शेरनीके लिए उसे छोड़कर अथवा स्वयम् भोग लगाकर खूनकी प्यासमें दूसरे बैलको हथियाने बढा। बैलकी बोलीकी नक़ल करनेका अभिप्राय यही था कि दूसरा बैल बहककर उसके क़रीब पहुँचे और उसका शिकार बने। न मालूम कितनी बार शैतान शेरकी यह चाल चली होगी; पर उस दिन उसके सुखकी अन्त्येष्टि हो गई—

बेग़म हैं ऐश कब चमने रोज़गारके,
खटके लगे हैं कूचए गुलमें भी ख़ारके।

———

काले कारनामे

'बुभुक्षितः किन्न करोति पापम्' वाली बात जिस प्रकार मनुष्योंके लिए लागू है, उसी प्रकार पशुओंके लिए भी। यह भी ठीक है कि जिन्हें भूख और उत्पीड़नके कारण खूनके आँसू नहीं बहाने पड़ते, वरन् जो धन-दौलतके दलदलमें गले तक फँसे रहते हैं, उनमें से बहुतेरे भूखों और असहायोंकी अपेक्षा अति जघन्य पाप करते हैं—शायद केवल स्वाद और विलासिताके कारण। शेर और बाघ भी, मनुष्यके ख़यालसे पाप करते हैं—मनुष्यभक्षी हो जाते हैं। क्यों? भोजनकी कमी, कमज़ोरी, बुढ़ापे और स्वादके कारण। योगियों और पागलोंको छोड़कर कितने हैं, जो रसनाके वशीभूत न हों?

* *
*

आसाममें एक छोटी नदीके किनारे एक स्त्रीका शव दाहक्रियाके लिए लाकर ज्योंही रखा गया, त्योंही वहाँ एक कोनेसे अपने बच्चेके साथ एक शेरनी अकस्मात् आ निकली। श्मशानमें आये हुए अनेक लोग तीर और कमानसे सुसज्जित थे। शेरनीको आते देख, शोकाकुल विधुरको आशंका हुई कि कहीं वह उसकी सहयोगिनीके शवको खाने न आई हो। उस इलाक़ेमें उस समय कोई मनुष्यभक्षी शेर या बाघ न था; पर फिर भी उस शेरनीके उस ओर—उतनी भीड़के होते हुए भी—आनेका तात्पर्य उस शवको खानेके अतिरिक्त और क्या हो सकता था—यह ख़याल करके दुखी पतिने आवेशमें

आकर शेरनीपर तीर चला दिया। चोट खाकर शेरनी तड़पी और अपने आक्रमणकारीपर झपटी। लोगोंमें भगदड़ पड़ गई। काई-सी फट गई। साहस और भय संक्रामक होते हैं। लोगोंको भागते देखकर वीर पतिके भी पैर उखड़ गये। वह भी एक ओर भागा और ठोकर खाकर गिर गया। शीघ्र ही शेरनी उसपर टूट पड़ी। शेरनी मनुष्यभक्षी न थी, इसलिए शोरगुलसे भगा दी गई; पर अपने आक्रमणकारीको बुरी तरह घायल कर गई। भाग्यसे वह बच गया।

कभी-कभी अति साधारण-सी बातोंसे ऐसी परिस्थितियाँ पैदा हो जाती हैं, जिनका हमें स्वप्नमें भी ख़याल नहीं आता, और जिनके लिए कभी-कभी व्यक्तियोंको ही नहीं, वरन् राष्ट्र तकको रोना पड़ता है। घटनाएँ होती तो अनायास ही हैं; पर उनके कडुए फल भोगने पड़ते हैं औरोंको। पिताका पाप पुत्रको ले बैठता है। नेताओं और जेनरलोंके साधारण-से कामसे देशकी सत्ता कभी-कभी डूब जाती है। वह आसामी बुरी तरह घायल हुआ और भाग्यसे बच भी गया। कितनी साधारण-सी बात थी! पर वह साधारण-सी बात न थी—ताण्डव-नृत्यका प्रारम्भ-मात्र था। शेरनीको उस दिनकी घटनासे मनुष्यकी कमज़ोरी और उसके मारनेकी सरलताका अनुभव हुआ। साथमें बड़ी मार्केकी बात यह हुई कि मनुष्यका मधुर रुधिर उसकी दाढ़से लग गया। फलस्वरूप वह चौपायोंको छोड़कर दोपायों—मनुष्यों—को पकड़ने लगी। गाँवोंमें घूमती और बेख़बर स्त्री या पुरुषको पकड़ ले जाती। खुद आदमीका मीठा मांस खाती और अपने बच्चेको भी उसीके बढ़िया मांसपर पालती। शेरनीकी माँने वह व्यंजन कभी उसे चखाया न था। उसके स्वादका

अनुभव उसे योंही हो गया। शेरनी पूर्णरूपमें मनुष्यभक्षी बन गई। इस क्रूर कृत्यका पाठ उसने अपने बेटेको भी पढ़ाया, अथवा यों कहना चाहिए कि बचपनसे ही आदमीका खून उसके मुँहको लग गया। शेरनी मनुष्योंके शिकारके लिए आती और किसी न-किसीको पकड़ ले जाती। चारों ओर उसका आतंक था। होते-होते उसकी ढिठाई और साहस इतने बढ़े कि दिन-दोपहरको भी वह आदमियोंको पकड़ने लगी। घरके द्वारपर बैठे लोगों तकको उठा ले जाती। हाहाकार मच गया। लोग परेशान थे। पेशाब और पाख़ाने जानेमें लोगोंकी धुकधुकी चलती कि कहीं पिशाचिनी आकर उठा न ले जाय। हथेलीपर जान रखकर लोग घरसे बाहर निकलते; पर इस दोपायेके हथियार—बुद्धि—के सामने किसी चौपायेकी पेश थोड़े ही जाती है।

लोगोंने टोली बाँधकर उस पिशाचिनी शेरनी और उसके बच्चेको मारनेकी ठानी। विशेष आयोजनसे शिकारका प्रबन्ध किया गया और शेरनीको मार डाला गया; पर उसका प्रतापी पुत्र, जो अब बढ़कर पूर्णतया जवान और भयंकर शेर हो गया था, लोगोंके चगुलमें न आया। उसको मारनेकी लोगोंने प्राणपणसे चेष्टा की; पर सब विफल हुई। उसने अपनी माँके कृत्यको न केवल जारी रखा, वरन् और भी पुष्ट कर दिया। सब उपायोंसे काम लिये गये। धोकाधड़ी बरती गई। मानवी प्रतिमा रखकर उसको ठगनेका प्रयास किया गया; पर शेरमें वास्तविक और कल्पित मनुष्य पहचाननेकी सूझ न-जाने कहाँसे आ गई थी। मनुष्य और शेरके हथकण्डोंमें बाज़ी लगी हुई थी, और देवी अपने वाहनको बलि लेनेके लिए प्रोत्साहन दे रही थी। बहुत दिनों तक नर-बलियाँ चढ़ती रहीं।

लोगोंके किये कुछ न हुआ। चायके कई इलाक़ोंमें शेरने ऊधम मचा दिया था। कई इलाकोंमें वह बारी-बारी से जाता और आदमियोंको खाता। गोरे और काले सभीको उसका डर था। मनुष्य मात्रको वह एक ही दृष्टिसे देखता था—सभी उसके लिए स्वादिष्ट खाद्य-पदार्थ थे। घर और बाहर कहीं भी कोई सुरक्षित न था। होते-होते नौबत यहाँ तक पहुँची कि चायकी एक मुख्य फ़ैक्टरीके समीपवर्ती चायके बगीचेको बन्द कर दिया गया। शेरने उस बग़ीचेमें अपना अड्डा-सा बना लिया। तीन दिन तक लगातार वह एक एक करके तीन मनुष्योंको उठा ले गया। आतंकका भूकम्प-सा आ गया। सब मज़दूर काम छोड़कर बग़ीचेसे इस प्रकार भाग गये, जैसे धुआँ दिखानेसे बर्रे छत्ता छोड़कर भाग जाती हैं। एक गोरखा चौकीदार लोगोंकी कायरतापर बहुत हँसा, और उसकी हँसीपर बगीचेके मूक प्राणी—वृक्ष—हँसे। गोरखा अपनी ड्यूटीसे न हिला और शेरका भोजन बना। जब उसके मारे जानेकी ख़बर उसके दो गोरखा मित्रोंको मिली, तब उन्होंने ख़ूनका बदला ख़ूनसे लेनेकी ठानी, और अपने मैनेजरको बिना सूचना दिये ही वे उस बग़ीचेकी ओर गये ; पर वहाँसे एक ही गोरखा लौटा। उसका साथी न-मालूम कैसे ग़ायब हो गया। उसके ग़ायब होनेका रहस्य लौटे हुए गोरखेने बताया।

बग़ीचेकी बाहरवाली फ़ैक्टरीके बंगलेके बरामदेमें दोनों गोरखे जा डटे। अपनी भरी हुई रायफ़लोंके घोड़े उन्होंने चढ़ा लिये, और बारी बारीसे उन्होंने शेरकी प्रतीक्षामें रतजगा किया। प्रातः-काल तीन बजेके करीब जीवित लौटे हुए गोरखेने अपने साथीको जगाया। उसका साथी स्वस्थ और जागरूक होकर, अपनी

रायफ़ल सँभालकर बैठ गया, और जगानेवाला साथी निश्चिन्त होकर सो गया। प्रातःकाल सूर्य निकलनेपर जब उसकी आँखें खुलीं, तब उसका साथी ग़ायब था! रायफ़ल वहीं रखी थी। वह अपने ग़ायब साथीके अत्यन्त निकट ही सोया था—इतना निकट कि वे एक दूसरेको छू सकते थे। उठकर उसने अपने साथीको इधर-उधर ढूँढ़ा और पुकारा। ऐसा करनेमें निस्तब्धता मानो उसका उपहास कर रही थी और संकेत कर रही थी कि आगे बढ़कर बगीचेके मार्गकी ओर देखो। आगे बढ़कर जो देखा, तो शेरके भयानक खोजोंसे वह सन्न रह गया। शेर आया, उसके साथीको उसके कानके पाससे उठा ले गया, उसे मालूम भी न हो पाया, और उसके साथीने चीख़ भी न निकाली। सम्भवतः दानवरूप शेरने अपनी भयङ्करतासे उसे इतना डरा दिया होगा—हिपनोटिज़्म-सा कर दिया होगा—कि वह मुँह भी न खोल सका होगा।

* *
*

इस ख़बरको सुनकर चाय-बगानके दो सीनियर मैनेजर ए० और एफ़० एक सहायक मैनेजरके साथ उसी दिन मध्याह्नमें, घोड़ों पर सवार होकर, उस मनहूस बगीचेकी ओर चल पड़े। साथमें उनके एफ़० का टैरियर कुत्ता भी था। उन तीनों अंगरेज़ोंने अपने साथ और किसीको न लिया—साईसोंको भी नहीं।

वह ऊजड़ बगीचा केन्द्रीय फैक्टरीसे पाँच मीलकी दूरीपर था, और मार्ग था जंगली। तीनों अंगरेज़, घोड़ोंपर चढ़कर, वार्त्तालाप करते हुए चल पड़े। आगे-आगे टैरियर ज़मीनको सूँघता जाता था। बग़ीचेके बँगलेसे जब वे आधे मीलकी दूरीपर रहे

होंगे, तब वे मार्गके एक नुकीले मोड़पर आये। मोड़पर आते ही टैरियर एकदम उत्तेजित हो गया, और गर्दनके बाल फुलाकर, लगा हाँव-हाँव करके भोंकने। सड़कपर लोगोंने नज़र डाली, तो शेरके ताज़े खोज थे। खोजोंसे प्रतीत होता था कि मनुष्यभक्षी शेर हालमें ही वहाँसे निकला था। तीनों अंगरेज़ अभी खोजोंका ही निरीक्षण कर रहे थे कि टैरियर एकदम जंगलकी ओर दौड़ गया और लौटता हुआ दिखाई न दिया। दूर घने जंगलमें कुत्तेका भोंकना सुनाई पड़ा। फिर थोड़ी देर बाद निस्तब्धता छा गई; पर कुत्ता न लौटा। टैरियर—बुल टैरियर नहीं—कुत्ते इतने साहसी नहीं होते कि शेरका पीछा कर सकें; पर उस टैरियरके व्यवहारसे यह बात स्पष्ट होती थी कि उसमें साहसकी मात्रा बहुत थी। उन तीनों अंगरेज़ोंको एक-दूसरेसे पृथक् होनेका साहस न होता था, और वे कुत्तेकी खोजमें, अलग-अलग तो क्या साथ-साथ भी, नहीं जा सकते थे। ऐसा करना आत्म-हत्या करना था; पर वे कुत्तेको बहुत चाहते थे, और सायंकाल तक उसकी प्रतीक्षा करते और पुकारते रहे। अँधेरेमें और अधिक प्रतीक्षा करना अनुचित था, इसलिए वे लोग मन मारकर बग़ीचेकी ओर चल पड़े।

घनघोर जंगलके बीच, बग़ीचेके बीचमें चायके कटे हुए पेड़ वर्गाकारमें खड़े थे। पूर्णमासीका चाँद आकाशसे अपनी ज्योत्स्ना बरसा रहा था। बँगलेके सामनेके बरामदेमें चन्द्रिका छिटकी हुई थी। बँगलेपर छप्पर था, इसलिए छतपर बैठनेको स्थान न था। तीनों अंगरेज़ घोड़ोंका उचित प्रबन्ध करके आराम-कुरसियोंपर बैठ गये। उनके सामने बरामदेकी सीढ़ियोंसे, चायकी झाड़ियोंमें होकर, जंगल तक, दो फर्लांगकी दूरी तक, चौड़ा मार्ग था। तीनों

कुरसियोंपर बैठकर सुस्ताने लगे। भरी हुई रायफ़लें उनकी गोदमें रखी थीं। उन्होंने कुत्तेके बारेमें वार्त्तालाप प्रारम्भ कर दिया। बातें करते-करते सुबहके तीन-चार बजनेको आये। एक-एक करके तीनोंको नींदने आ दबाया। तीन-चार बजेका समय और रात-भरकी जगावट, और तिसपर मद-भरी चाँदनी—कौन होगा, जिसपर ऐसी अवस्थामें रात अपनी जादूकी लकड़ी न फेर दे ; पर कुछ ही देर पश्चात् धीमे स्वरकी चिल्लाहट 'बचाना' और उसके बाद गुर्राहटने ए० तथा सहायक मैनेजरको चौंकाकर जगा दिया। चौंकनेसे उनकी भरी हुई रायफलें पत्थरके फर्शपर खड़ाकसे गिरीं, जिसे सुनकर पहलेसे भी भयंकर गुर्राहट हुई। ए०के ठीक सामने, उससे कुछ ही क़दम दूर, खीसें काढ़े हुए एक भीमकाय शेर मोहक चाँदनीमें एफ़०की आराम कुरसीकी बग़लमें लम्बा छपका बैठा हुआ था। मनेजर एफ़०की लटकती हुई बाँह धीमेसे, पर बड़ी दृढ़तासे, शेरके ख़ूँख्वार जबड़ोंमें थी !

ए० और सहायक मैनेजर अवाक्, लकवे से मारे हुए, बैठे थे। अपनी घातोंसे शेरने एफ़०की बाँहको दबाना प्रारम्भ किया। जब कभी एफ़० तनक भी अपनी ओरको हाथ करते, या कोई शब्द निकालते, तभी शेर अपने दाँत उनकी बाँहमें और भी गाड़ता, ताकि वे शेरका किसी प्रकार भी विरोध न कर सकें। जरा-से हिलने या किसी और प्रकारकी गतिसे शेरके दाँत उनकी बाँहके मांसमें और भी गड़ जाते। साथ ही शेरकी दृष्टि ए०पर थी। पकड़े हुए था वह एफ़०को ; पर ए०की ओर उसने ऐसी टकटकी लगा रखी थी, मानो उनके तनकसे हिलने और अंग-प्रत्यंगकी किसी भी प्रकारकी गतिसे वह उनपर टूट पड़ेगा। ए० तनक भी हिलने-

डुलनेका साहस न कर सकते थे। उस दानव शेरके सम्मुख रायफ़लको सम्भालनेकी बात तो दूर, हाथ बढ़ाकर उसको छूने तकके मानी होते, उन तीनोंका मारा जाना। हिलने-डुलने या किसी और प्रकारकी गति होनेसे शेर एफ़०को छोड़कर शेष दो आदमियोंपर टूट पड़ता। एफ़०को तो वह रायफ़ल चलानेके लिए बेकाम कर ही चुका था। उनके दो साथियोंकी क्या बिसात थी, जो उस समय कुछ कर पाते। एक एक पंजेमें उनकी लोथें पड़ी मिलतीं। जो कुछ ए० कर सकते थे, वह यह था कि वे शेरकी नज़रोंसे नज़र मिलाते रहते और बड़ी सावधानीसे शेरको मारनेका मौक़ा देखते। एफ़०को वे क्षण मृत्यु-वेदनाका समय मालूम हो रहे थे। एक बड़ी अच्छी बात यह हुई कि सहायक मैनेजर डरके मारे ज्ञानशून्य पड़ा था, क्योंकि अनुभवहीन शिकारी होनेके कारण, सम्भव था, वह घबराकर कुछ ऐसा काम कर बैठता, जिससे तीनोंको जानसे हाथ धोने पड़ते। एफ़० शान्त पड़े रहे, क्योंकि उनका जीवन उनके अवसानपर ही निर्भर था। जब-जब शेरके दाँत उनकी बाँहमें गड़ते, तब यह मालूम होता, मानो बाँह बखौरेमें से निकली ही पड़ती है। एफ़०को यह भी मालूम था कि शेर रुक-रुककर उनकी बाँहको क्यों दबाता था। बोलने और हरकत करनेसे शेरका भँभोड़ना स्वाभाविक था; पर अब तो एफ़० चुप पड़े थे, फिर शेर रुक-रुककर बाँहमें दाँत क्यों गड़ाता था? इसलिए कि वे पीड़ाके कारण उठ बैठें, और शेर उनको जगलकी ओर ठीक वैसे ले जाय, जैसे क़साई बकरेको कान पकड़कर बूचड़ख़ानेकी ओर घसीट ले जाता है। एफ़०ने बड़ी सावधानी और धैर्यसे काम लिया, ताकि उनके साथियोंको कुछ करनेका अवसर मिल सके; पर शेरकी चालों और

तीव्र पीड़ाके सामने एफ़०की एक न चली। अन्तमें घबराकर उनकी चीख़ निकली—"खुदाके वास्ते फ़ायर करो।"

तुरन्त ही क्रोधित गर्जनसे मकान गूँज गया, और जैसे ही अपने मुँहमें बाँह दबाये हुए शेर उठा, वैसे ही वेदनासे पीड़ित एफ़०को भी उठना पड़ा। शेर अपने शिकारको सीढ़ियोंपर से ले चला। एफ़० लम्बे क़दके आदमी थे, और अपनी बाँहकी पीड़ा कम करनेके लिए उन्हें कुछ झुककर, उस दोज़ख़ी खूनी शेरके बराबर, चलना पड़ा। उस दृश्यको देखकर किसको बेहोशी न आ जाती—यह कहना कठिन है।

कुरसीमें से आगे झुककर अपनी रायफ़ल उठानेमें भी ए०को, चुपचाप और शेरके बिना देखे ही, कुछ हिलना तो था ही। शेर अपने शिकारको लिये जाता था; पर उसकी नज़र कुरसियोंवाले आदमियोंपर थी। जब-जब वह एफ़०को मोड़पर होकर लाता था, तब तक वह चेतावनी-स्वरूप दोनों व्यक्तियोंपर गुर्राता भी जाता था और बड़े ज़ोरसे एफ़०की बाँहमें झटका मारता जाता था। ए०को अपनी रायफ़ल उठानेका ज्योंही अवसर मिला, त्योंही सहायक मैनेजर चीख़ मारकर अपनी कुरसीसे उछला और भागकर बँगलेमें घुस गया, और धड़ामसे दरवाजे बन्द कर लिये।

शेरका सन्देह जाग्रत हो गया। एफ़०की बाँहको लगभग छोड़कर वह मुड़ा, और उसने कलेजा दहलानेवाली गर्जन की। वह एफ़०को मार ही डालता, यदि ठीक उसी समय एक दैवी घटना न घटी होती, यानी यदि टैरियरने आकर हस्तक्षेप न किया होता। टैरियर, जिसको उन्होंने खोया समझ रखा था, ढूँढ़ता हुआ वहाँपर आ गया। जहाँसे वह उनसे अलग हुआ था,

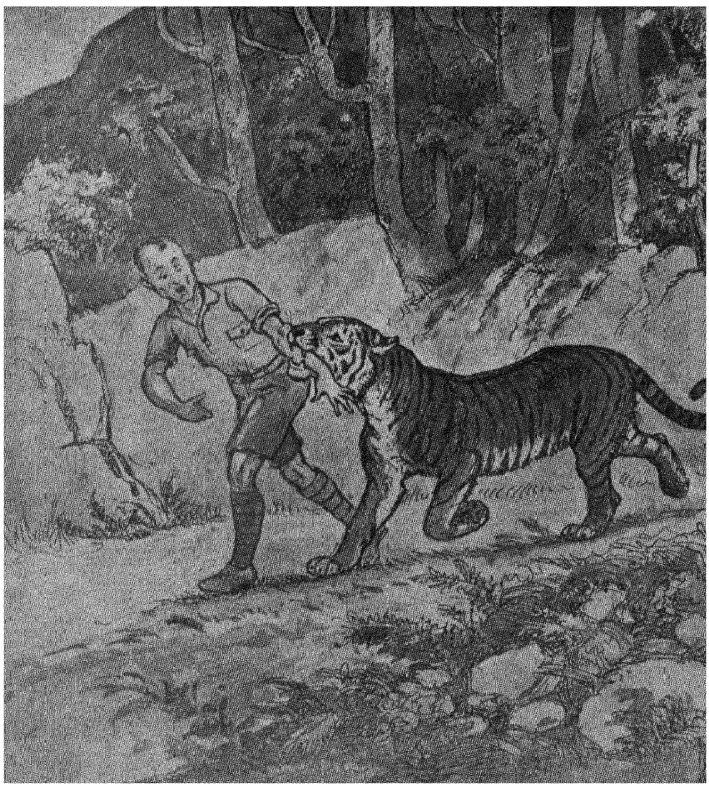

"उसने एफ़० की बाँह फिर पकड़ ली और उनका जंगलका ओर ले चला।"

वहाँसे वह केन्द्रीय फ़ैक्टरी गया था, और वहाँसे फिर लौटकर बँगलेपर आया। यह छोटी-सी बात—टैरियरका ऐन मौक़ेपर आ जाना—दैवी हस्तक्षेप था। कुत्तेकी आवाज़ सुनकर शेरको बहुत-से आदमियोंकी आशंका हुई होगी, इसलिए उसने एफ़०की बाँह फिर पकड़ ली, और उनको जंगलकी ओर ले चला। टैरियर उनके पीछे-पीछे उत्तेजित होकर भोंकने लगा। कुत्तेके शेरके पीछे लगे रहनेसे ए०को फ़ायर करनेका अवसर मिला; पर दूरसे फ़ायर करनेमें बड़ी जोखिम थी, क्योंकि ऐसा करनेमें एफ़०के गोली लगने या शेरके घायल होनेकी आशंका थी। दोनों ही बातें भयावह थीं, इसलिए ए०ने शेरका पीछा करनेकी ठानी।

'बचाओ'की हृदयविदारक चीख़, चन्द्रिका-चुम्बित निस्तब्धता को चीरकर, बँगलेकी ओर आ रही थी। ए० शेरके गुर्राने और कुत्तेके भोंकनेके साथ आगे बढ़ रहे थे। अन्तमें वे सावधानीके दाँव पेंच भूल गये, और क्रोधके आवेशमें आकर उन्होंने जोखिमका काम किया। तेज़ीसे आगे बढ़े और निशाना लेकर फ़ायर कर दिया। फ़ायरिंगकी आवाज़ और उसकी प्रतिध्वनि अ र र र से जंगल काँप गया! गोली शेरके सिरमें लगी, और वह वहीं रह गया!

* *
*

प्रातःकालका मदपूर्ण समीर बह-बहकर जीवनकी अनित्यताका गान गुनगुना रहा था, और शेर मरा पड़ा था। एफ़० भी भले-चंगे हो गये। मनुष्यभक्षी शेरके काले कारनामोंका अन्तिम काण्ड समाप्त हुआ!

———

रोमांचकारी कुश्ती

वेदान्तका प्रथम सूत्र है—'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा' और संसारके अनेक जीवोंका जीवन-सूत्र है—'अथातो युद्धजिज्ञासा'। युद्ध-जिज्ञासा मानव-धर्मका मूलमन्त्र न हो; पर साम्राज्यवादी प्रवृत्ति युद्ध-जिज्ञासा-रूपी शराबपर ही ज़ोर मारती है। व्यक्तिगत रूपसे भी युद्ध-जिज्ञासा संसारमें चली आई है। जंगलके जीवोंमें भी कुछ ऐसे बिगड़ैल, लड़ाकू और अनुभवहीन होते हैं कि तनक-सी बातपर वे कट मरते हैं। जीवन उनके लिए खिलवाड़ होता है—मरने या मारनेके लिए। साम्राज्यवाद तो इस दुपाये—मनुष्य—की ही करतूत है—दूषित पूँजीवादकी सन्तान।

शहर और आबादियोंकी युद्ध-जिज्ञासा, पापलिप्सा और अनुपम त्यागकी घटनाएँ हम आँखों देख लेते हैं। और कुछ नहीं होता, तो थियेटर और सिनेमाओंमें सुखान्त और दुःखान्त नाटक देख लेते हैं; पर जंगलके रंगमंचपर खेले जानेवाले नाटकोंको कम ही लोग देख पाते हैं, और देखकर कितने हैं, जो अपनी कल्पनाशक्तिको जंगलके दृश्योंसे पैनी कर सकें—ऐसी पैनी कि वह दिलोंको चीरकर पार हो जाय!

जंगलके रोमांचकारी नाटक, आबादीसे दूर, प्रकृतिके प्रांगणमें खेले जाते हैं, जहाँपर जंगली जन्तुओंका ही बोलबाला होता है। वे रोमांचकारी घटनाएँ ऐसी होती हैं, जिन्हें देखकर जमा हुआ भी खून एक बार दौड़ने लगता है, हृदयकी धड़कन बढ़ जाती है, और तन्मयता तो ऐसी हो जाती है, मानो दर्शक समाधिस्थ हो गया हो।

एक दिन जैम्स इंगलिस नामक एक गोरा अपनी नीलकी कोठीका निरीक्षण कर रहा था। इतनेमें उसको खबर लगी कि कोठीसे कुछ दूर शेरने एक गाय मारी है। शीघ्रतासे उस ओर जा कर देखा, तो हालकी मारी हुई गायकी लाश मिली—गरम खूनसे लथपत। क़रीब ही शेरके पग-चिह्न भी मिले। बस, फिर क्या था, बैठनेका स्थान बनने लगा। एक गड्ढा खोदा गया। चारों ओरसे उसे काँटों और लक्कड़ोंसे सुरक्षित बनाकर इंगलिस साहब एक गुमाश्तेके साथ उस गढ़ेमें घुस गये।

दस बजे रातका समय होगा। अर्धचन्द्र बादलोंके क्षीण टुकड़ोंसे टक्कर लेता हुआ, छिप-छिपकर, अपने मार्गपर जा रहा था। दूर—काफ़ी दूर—पर रात्रिकी नीरवतामें गंगाकी धार अनवरत रूपसे जम्हाई-सी लेती सुनाई पड़ती थी। ठंडी हवाका झोंका जैसे ही लम्बी घाससे अठखेलियाँ करता निकलता, वैसे ही जान पड़ता, मानो रात्रिदेवीके हृदयसे एक ठंडी कँपकँपाती-सी आह निकल रही है। यह आह 'सॉय-सॉय' और 'हअर-हअर' करती मैदानकी ओर घबराई-सी निकल जाती। पेड़ोंकी डालियाँ और लताओंकी फुनगियाँ भी, खुशामदी मुसाहिबोंकी भाँति, उसी हअर-ध्वनिके साथ हाँ-में हाँ मिलातीं। सहसा नदी किनारेसे चकवाकी पुकार 'केंऊँ' निस्तब्धताको भंग करती; पर फिर शीघ्र ही नीरवताका राज्य फैल जाता। कुछ देरके लिए जंगलकी आत्मा साँस-सी साध लेती। थोड़ी देर बाद उस दृश्यकी फिर आवृत्ति होती।

गड्ढेमें बैठे दोनो आदमी सजगताकी प्रतिमा बने प्रकृतिकी छटा देख और महसूस कर रहे थे। वायुके मन्द झकोरों, पेड़ोंकी शाखाओंकी किलोलों, चकवाकी केंऊँ, चन्द्रमाकी शराबीकीसी चाल

और जंगलकी आत्माकी गोचर छटाको देखते और अनुभव करते हुए जब कभी सेही, लोमड़ी अथवा गीदड़के पैरकी आहट होती, तब शेरकी आशंकासे उनका हृदय धौंकनीकी भाँति चल उठता।

कुछ प्रतीक्षाके उपरान्त गुमाश्तेने साहब बहादुरका हाथ दबाया और कानमें इतने धीरेसे कुछ कहा कि साहब बहादुर केवल इतना ही सुन पाये कि दाईं ओरको देखो। उधर जो गोरेने आँख उठाई, तो रोमांचकारी बिजली-सी शरीरमें दौड़ गई। धुँधले क्षितिजपर, रात्रिकी लम्बी और भूरी छायामें, एक भीमकाय आकार अस्पष्ट-सा दिखाई पड़ा, जिसको गुमाश्तेने असाधारण सूअर बताया। वह ठीक गड्ढेकी ओर आ रहा था—धीमी, अलमस्त और निश्शंक चालसे। कभी-कभी आत्मतोष प्रकट करनेके लिए थमकर वह 'हुक्ख' करता और अपनी थूथनीसे ज़मीन खोदकर जड़ें खाता आता था। उसकी लचीली थूथनी हलके फालेकी भाँति ज़मीनको फाड़ती थी।

गोरेने बन्दूक उठाकर जैसे ही छातीका निशाना साधा, वैसे ही सूअरने अपना सिर ऊपर उठाया, और उसका आकार स्पष्ट दिखाई पड़ने लगा। अपार शक्ति और शानका वह प्रतिबिम्ब अकड़कर खड़ा हो गया। उसी समय अकस्मात् जंगलसे गुर्राट और गर्जना सुनाई पड़ी। वनराज अपने शिकार-पथपर था। गुमाश्तेने गोरेकी बाँह ज़ोरसे दबाई और उसके कानसे अपना मुँह लगाकर अति क्षीण ध्वनिमें कहा—"शेर!"

गड्ढेमें दोनों आदमियोंकी स्नायुएँ खिंच गईं; उत्सुकतासे दिलकी धड़कन बढ़ी। शूकरराज चौकन्ना, पर लापरवाईसे, खड़ा था। उसके ढंगसे प्रतीत होता था कि उसका रोम-रोम कह रहा

है—"शेर हो अथवा मल्कुलमौत, 'यहाँ कुम्हड़ बतियाँ कोउ नाहीं'। शेर और शेरका नगड़दादा मेरी काँपों (Tusks) पर..." सिर झुकाकर और क्रोधपूर्ण झटकेसे उसने भयावना शब्द किया—"हू-हुक्ख।" जंगलसे आवाज आई—"ऊँगा।" सूअरने उत्तर दिया वही—"हू-हुक्ख।" देहातमें जैसे एक लठैत किसीको गाली दे और उसका प्रतिद्वन्द्वी गालीमें ही उसे उत्तर दे और फिर शीघ्र ही खटाखट लाठी चलने लगे, ठीक वैसे ही शेरके चैलेंजको सूअरने स्वीकार कर लिया। शेरने सूअरको भागते न समझ और भी कम्पोत्पादक गर्जना की, मानो शेरने भी चैलेंजकी स्वीकृति दे दी हो। तुरन्त ही उस अखाड़ेमें एक बलशाली पट्ठा शेर कूद पड़ा। वह क्रोधसे भन्नाया हुआ था। होंठ पीछे खींचे, मूँछें खड़ी किये, दाँतोंका प्रदर्शन करते और पूँछको अपनी बगलोंसे मारते हुए, गर्दनके बड़े बालोंको सतर किये, विजय और युद्ध-जिज्ञासासे शेर दावघात करनेको आ खड़ा हुआ। यौवनकी उन्मत्ततामें—नदीकी बाढ़के समान—वह किसीको गिननेवाला न था। सैकड़ों सूअरोंको उसने खा डाला था। दो-चारने हमला भी किया था; पर एक ही थापमें उसने उनका कचूमर निकाल दिया था। यों थोड़ी बहुत खरोंच और एक-आध घाव सूअरकी काँपके लगे थे; पर वे सब सूअरोंकी ओरसे आत्म-रक्षामें लगे थे। उसके गर्जन तर्जन और गुर्राहटसे हिरन और गाय-भैंस घबराकर ढीले हो जाते थे। फिर उसका भब्बराता यौवन! यौवनकी आँधी अनेकोंको उखाड़ फेंकती है। यौवन ऐसा नशा है कि उसके सुरूरमें कुछ-का-कुछ दिखाई पड़ता है। जवानीमें जवानोंके पैर जमीनपर ऐसे पड़ते हैं, मानो उनमें 'इलैस्टिक' लगी हो! दुःख, भय और आशंका-रूपी अन्धकार यौवन-प्रभातसे पलायमान हो जाता

है। शेर भी जवानीकी धारमें बह रहा था। दम तो उसमें बेहद था; पर अनुभवकी पूरी घाटीमें होकर वह न गुज़रा था, इसलिए जब वह सूअरसे भिड़ने आया, तब वह समझता था कि सूअर उससे डरेगा और अवसर पाकर वह उसे मार गिरायेगा। सूअरने बचावके लिए किसी झाड़ीका सहारा लिया होगा।

और सूअर? सूअरने शेरकी तनक भी परवा न की। उसने 'हू-हुक्ख़'की ताल ही नहीं ठोकी, वरन् शेरकी ओर उसने एक छोटी दौड़-सी भी लगाई और गर्दनके बाल फुलाकर अपनी पूँछ ज़रा ऊपरको की। सूअरकी पूँछका उठना आक्रमणका सिगनल है। सूअर विकट भट होता है, और एक बार हमलेकी ठानकर पीछे पीठ नहीं दिखाता। सूअरने भी समझा कि उस स्थानपर वह पहलेसे काबिज़ था। शेरका वहाँ आना मदाख़लत बेजा है, इसलिए, अपने अधिकारकी रक्षाके लिए, शेरको सबक़ सिखाना चाहिए।

मैदानमें दोनों लड़ाके जम गये। शेर घात लगाकर कभी छपकता और कभी सूअरके चारों ओर रेंगता-सा चलता कि किसी प्रकार पीछेसे उसपर हमला करे। सूअर भी शेरकी घातका ख़याल करके पैंतरे बदलता और अपना सिर उसकी ओर ही रखता। दाएँ-बाएँ गोलाकार चक्करमें, शेर और सूअर, सम्हले और तने, कुछ देर तक हमलेका अवसर देखते रहे। पैंतरोंका चक्कर कुछ और संकीर्ण हुआ। गुर्राहट और हू-हुक्ख़के ताल दोनों ही पहलवान ठोंक रहे थे। दाँव-घात और ताल-ठुकाई कुछ ही सेकेण्डोंके लिए हुई। शेर एक बार लम्बा होकर ज़मीनसे मिल-सा गया। पुट्ठों और स्नायुओंको खींचकर उसने अपने कमे-कमाये और फुर्तीले शरीरको एकत्र-सा किया और जगलको दहलानेवाले गर्जनके साथ शक्तिका

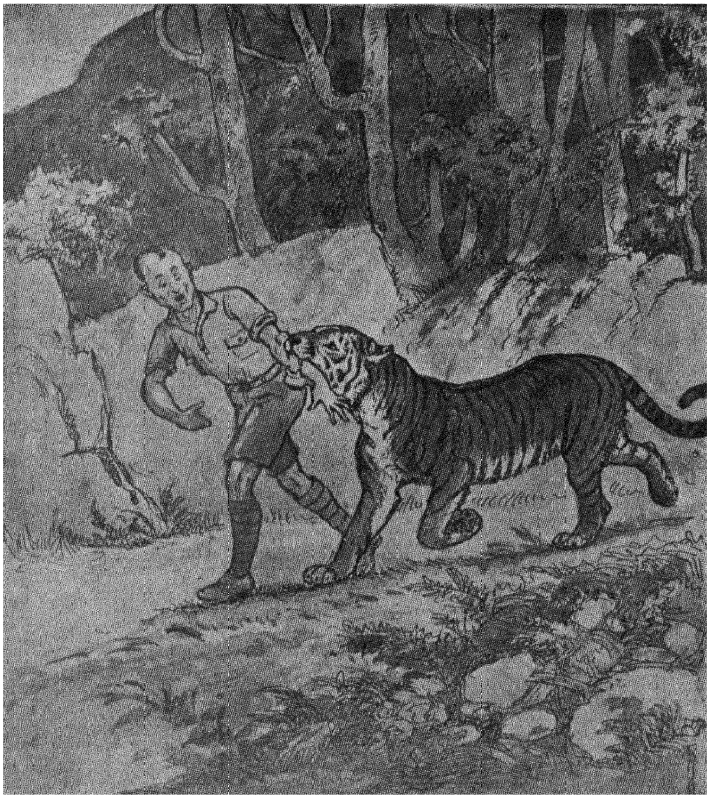

विद्युत्‌गतिसे सूअरपर टूट पड़ा।"

वह पुंज विद्युत्गतिसे सूअरपर टूट पड़ा। एक मिनटके लिए दोनोंकी लड़ाईमें रोमांचकारी उत्तेजना थी। एक ही तेज़ और कौशलपूर्ण थापसे, जो सूअरके जबड़ेपर पड़ी थी, बलिष्ठ सूअर लड़खड़ाने लगा। उस थापके साथ शेरका बोझा तीव्र गतिसे सूअरके ऊपर गिरा था; पर सम्हलकर सूअरने 'हू-हुक्ख़' की, और क्रोधपूर्ण जलती हुई आँखोंसे पैंतरा बदलकर उसने अपनी अटूट गर्दन और मज़बूत सिरसे तीन-चार तीव्र वार, दाएँ और बाएँ, शेरपर किये।

सूअरके पेंच चार ही तो होते हैं, और वे चारों पेंच उसको खूब रवाँ होते हैं—सिधी टक्कर मारना, दाएँ और बाएँ काँपें घुसेड़ना और कच-कच करके दाँतोंसे चबा डालना। अन्तिम पेंच वह प्रायः अपने अन्तिम समयमें ही करता है। घायल होकर जब वह आदमीको चबाता है, तो आदमीका बचना कठिन ही है। पैर पकड़कर चबाता है और ऊपर घुटने और जाँघ तक हड्डियोंको कच-कच करता हुआ तोड़ डालता है—झुरकुट कर डालता है। साधारणतया टक्कर मारता हुआ वह भाग जाता है। शिकारी निशाना चूकनेपर टक्कर लगते ही कलामुंडी खाकर गिरता है और हाथ-पैर झाड़ तथा थोड़ी-बहुत चोट झेलकर बच जाता है। पेंच नम्बर दो और तीन—दाएँ और बाएँ टक्कर मारनेके मानी हैं पैनी काँपोंको शत्रुके शरीरमें इंचों गहरी और लम्बी घुसाना। कभी-कभी लगातार एकके बाद दूसरे, पहले, दूसरे और तीसरे नम्बरके पेंचोंको चलाकर वह कहर ही ढाता है। अब सूअरने सम्हलकर दूसरे और तीसरे नम्बरके पेंच चलाये और शेरकी बग़लमें तीन-चार छेद कर दिये। शेरके शरीरसे खूनके झरने-से झरने लगे।

इस प्रकार पहली कुश्ती बराबरपर छूटी ; पर मार अधिक खाई सूअरने। शेरके प्रहारसे सूअरके सिर और गालोंपर खाल और मांसके चिथड़े लटक रहे थे, ऊपर सिरकी खाल उधड़कर बुरकेकी भाँति सूअरकी आँखोंपर आ पड़ी थी। फलस्वरूप वह अर्ध-अन्ध-सा हो गया था ; लेकिन सूअरकी युद्ध-प्रवृत्ति और क्रोधकी मात्रा घटी न थी, वरन् और भी प्रज्ज्वलित हो गई थी।

शेर साहबपर भी बुरी तरह बीत रही थी ! छाती और बग़लके छेदोंसे फ़व्वारे फूट निकले थे। पूँछकी गति उसकी अनिश्चित मनोवृत्तिकी द्योतक थी। उससे यह झलक रहा था, मानो शेर कह रहा हो कि मैं किस बलामें आ फँसा !

सूअर क्रोधसे भन्ना रहा था। बिगड़कर और ललकार—'हू-हुक्ख़'—कर वह शेरपर टूट पड़ा ! भगकर उसने पेंच नम्बर एकको चलाकर दूसरे, तीसरे और चौथे नम्बरके पेंचोंको क्रमानुसार और क्षणोंमें ही चलाना चाहा ; पर फुर्तीकी प्रतिमा शेरने सूअरके प्रथम दावको बचाया, और जैसे दोहरी-सी होकर बिल्ली चूहेपर टूट पड़ती है, वैसे ही शेर उछलकर सूअरकी गर्दनपर आ गिरा। शीघ्र ही सूअरके अगले पुट्ठोंमें शेरके कीले घुस गये, और उसके पंजोंने उन्मत्त और कम्पित सूअरको फाड़ना प्रारम्भ किया। भँभोड़ने और फाड़नेसे भारी-भरकम सूअरकी दुर्दशा होने लगी, और ऐसा प्रतीत हुआ कि अपनी उद्दण्डताका फल सूअरको मिल गया। शेर तगड़ा ही नहीं पड़ रहा था, वरन् अपने प्रतिद्वन्द्वीको ठंडा करता हुआ दिखाई देता था। सूअर लड़खड़ाकर आगेको गिरा। मारकी चोटसे, अथवा दावघातसे, सो कहना कठिन है। यह हुई दूसरी कुश्ती, जो बराबर रही ; पर शेरने सूअरकी दुर्गति कर डाली।

मगर सूअरके गिरनेका फल हुआ शेरका सूअरके सिरपर होकर आगे गिर पड़ना। शेरके आगे गिरते ही सूअर उसकी छाती-पर चढ़ बैठा। अपने अगले पैर शेरकी छातीपर रखकर तीन-चार विकट हमले सूअरने किये। अपनी पैनी और बड़ी काँपोंसे उसने शेरकी छातीको फाड़ डाला। जैसे कड़ी ज़मीनमें फाला चर्र करता हुआ जाता है, वैसे ही सूअरकी तीखी काँपोंने शेरकी छातीको जोत-सा डाला। 'आव, घुर्र' करके शेर पंजे और मुँह चलाता था; पर शेरकी तोमड़ी बन्द थी, और सूअरका भी नाकों दम था। चोट करके, शेरको छोड़कर, सूअर लड़खड़ाता और थका हुआ-सा कुछ दूर जा बैठा; पर क्रोध और युद्ध-जिज्ञासासे अब भी वह अपने जबड़े कच-कच करके चला रहा था। क्रोधित शेर हाँपता हुआ एक ओर वहीं पड़ा-पड़ा फूँ-फाँ करके अपना रोष प्रकट कर रहा था। यह थी तीसरी कुश्ती, जिसमें सूअर तगड़ा पड़ा; पर जोड़ रहा बराबर।

* *
*

प्राण-वेदनाको कम करनेके लिए दो आवाज़ें हुईं—"धाँय-धाँय!" जंगल गूँज गया। चकवाने कौतूहलसे पूछा—"केऊँ?" दूसरे तटसे चकवीने उत्तर दिया—"केऊँ।" जंगल प्रतिध्वनित हुआ—'अ र र र ध र र र!' और दोनों लड़ाके शान्त हो गये।

दुर्घटना

मेघाच्छादित आकाशमें बिजली कैसी टेढ़ी-मेढ़ी दीख पड़ती है, बर्फ़ानी नदीकी गति कैसी वक्र होती है ; पर हैं दोनों सजीव। बिजलीकी तड़प और सरिताके प्रवाहमें उच्चतम त्याग और सेवा-भाव छिपे हैं। उनकी संहारशक्ति नगण्य है। तड़ित-दर्प पौदों और वृक्षोंको नाइट्रोजन देता है, और सरिता-गति पृथिवीको उर्वराशक्ति तथा जल प्रदान करती है। मानव-संसारमें भी वे ही व्यक्ति बिजली और सरिताके समान सजीव और शक्तिशाली होते हैं, जिनके जीवनके मूलमन्त्र हैं—त्याग और सेवा-भाव। तालों और पोखरोंके अचल पानीके समान अपने ही में केन्द्रीभूत—अपने ही लिए संग्रह करनेकी भावनामें विनाशके कीटाणु स्वतः ही रहते हैं। केवल अपने लिए संग्रहकी भावना और अपनी विभूतिको दूसरोंमें बाँटनेके अभावजन्य दोष—जिन्हें दूषित पूँजीवादके दुष्परिणाम भी कह सकते हैं—जीवनके अनेक पहलुओंमें फैल गये हैं। फलस्वरूप एक ओर विलासिताकी वैतरणी बह रही है, तो दूसरी ओर दारुण दरिद्रताकी प्रचण्ड ज्वाला मानव-पुतलोंको जला रही है। विलासिता-वैतरणीमें गोते खानेवालोंके हृदयोंमें बच्चोंके रुदन, ग़रीबोंके क्रन्दन और पीड़ितोंके चीत्कारसे चोट नहीं लगती। दूषित पूँजीवादके दो यमोंने—विलासिता और घोर दरिद्रताने—त्याग, सेवा-भाव और सिद्धान्तके लिए मरमिटनेकी आकांक्षा-रूपी धवल शिखरोंको ढक-सा लिया है ; पर इस विषम परिस्थितिमें, आदर्शहीनताके निविड़ अन्धकारमें भी, जीवन-नौका खेनेवाले समझदार माझीको

आदर्श, त्याग, सेवा और कर्त्तव्यपालन-रूपी दिव्य ज्योति दृष्टिगोचर होती है, और ऐसे दीपकोंसे लोगोंके हृदयोंमें साहस, त्याग और सेवाका प्रकाश होता है।

* *
*

१९०९ ई०की बात है। शाही जर्मन सेनाके एक वीर सैनिक—पाल ग्रेट्ज़—ने मोटर द्वारा मध्य-अफ़्रीकाको, हिन्द-महासागरसे अटलाटिक महासागरके तट तक, पार किया। सन् १९०९ में इस प्रकारकी यात्राका बड़ा महत्त्व था। यात्राकी सफलताने साहसी ग्रेट्ज़की खोज-विषयक अभिलाषाको और भी तीक्ष्ण कर दिया। इस कारण उसने बर्लिन लौटकर मध्य-अफ़्रीकाको—पूर्वसे पश्चिम तक—मोटर-नावसे पार करनेकी ठानी और निश्चय किया कि वह ज़म्बज़ी नदी, बैंगवीयलो झील और कांगो नदीके मार्गसे अपनी यात्रा करेगा। लगभग छह हज़ार मीलकी यात्रा थी, और मार्गके अनेक भाग बिना खोजे हुए थे। पाल ग्रेट्ज़ने इसलिए यात्राकी खूब तैयारी की। मार्गका उसने एक अच्छा मानचित्र तैयार किया, और प्रस्थानसे पूर्व सभी बातोंकी विस्तृत योजना बना ली। उसने अपनी मोटर-नावका नाम रखा—'सरौती'। 'सरौती'में केवल सात व्यक्तियोंको ले जानेकी ताक़त थी। ग्रेट्ज़ने अपने साथी भी चुन लिये। मोटर-नावसे बिन खोजे हुए प्रदेशमें जाना—और सो भी मध्य-अफ़्रीकाके उस समयके अगम्य स्थानोंमें होकर—एक साहसिक मुहिम थी। ग्रेट्ज़के साथी सब चुने हुए—वीरताके पुतले थे। वे थे—वाइस्कोप फोटोग्राफ़र फ़रासीसी फ़ाइरे, अफ़्रीकन रसोइया जेम्स और चार अफ़्रीका-निवासी।

सम्पूर्ण तैयारीके उपरान्त पोर्चगीज़ पूर्वीय अफ़्रीकाके एक छोटे बन्दरगाह कुइलीमेनसे ग्रेट्ज अपने छह साथियों-समेत चल पड़ा। 'सरौती'में बैठे उन सातों वीरोंके हृदय-बल्लियों उछल रहे थे। 'सरौती' भी पानीको चीरती, सजीव प्राणीकी भाँति, प्रफुल्ल हो चलने लगी। पाल ग्रेट्ज़की आत्मा आनन्द-विभोर थी। किसलिए? शिकारके लिए? केवल शिकारके लिए नहीं। अर्थ-लाभके लिए? सो भी नहीं। उसे तो अपनी कीर्ति और नामकी लालसा थी। सन् १९०९ तक किसी भी व्यक्तिने मार्गस्थित बैंगवीयलो झीलकी खोज न की थी। किसी गौरांगके उधर जानेकी बात तो दूर, ग्रेट्ज़ने अमेम्बा जातिके लोगोंसे सुना था कि बैंगवीयलो झीलके निकट और दूरवर्ती लोग झीलके नाम तकको अशुभ समझते हैं। यह झील उत्तरी-पूर्वीय रोडेशियाके बीचोबीच है। ग्रेट्ज़ने अपनी पहली यात्रामें लोगोंसे इस झीलके विषयमें हृदय-कम्प करनेवाली किंवदन्तियाँ सुनी थीं। लोगोंका ख़याल था कि बैंगवीयलो झीलमें अनेक टापू हैं, वहाँ भीमकाय हाथी और जिराफ़ रहते हैं और पानीमें विशाल अजगर तथा अन्य भयंकर जीवोंका निवास है। धरातलसे ऊपर उठते हुए गरम पानीके सोतोंके अस्तित्वकी भी जनश्रुति थी, और जो कोई झीलके किनारे जानेका साहस करता था, वह महामारी फैलानेवाली वायुसे, जो दलदलके समीप बहती थी, समाप्त हो जाता था। ग्रेट्ज़को लोगोंने यह भी बताया था कि जो अफ़्रीकन अपने डोंगोंमें झीलको गये, वे कभी लौटकर भी न आये। उनके मतसे बैंगवीयलो झील दिवंगत आत्माओंके लिए रौरव नरक था। बहुत-से लोगोंके मतसे बैंगवीयलो झील मृत मनुष्योंका परलोक था, जहाँपर कोई भी पार्थिव देहधारी मनुष्य जा ही नहीं सकता था। ऐसी

किंवदन्तियोंने ग्रेट्ज़की खोज-लालसाको और भी तीव्र कर दिया। अतिशयोक्ति और विकृत कल्पनाशक्तिका ख़याल करते हुए भी ग्रेट्ज़को बैंगवीयलो झीलके अन्वेषणमें एक विशेष आकर्षण था।

वास्तविक बात यह थी कि झीलके चारों ओर मीलों तक अगम्य और गहरा दलदल था। उससे लगे अधकीचड़ प्रदेशमें बड़े नरकलोंका जगल-सा था। इस कारण बैंगवीयलो झील तथा उसके तटस्थ प्रदेशकी खोजका संयोग उस समय बहुत कम था। ग्रेट्ज़को पूरी आशंका थी कि बैंगवीयलो झीलकी खोजमें उसका अदम्य उत्साह और विकट साहस कसौटीपर कसा जायगा, उसे बड़ी कठिनाइयोंका सामना करना पड़ेगा और असफलता भी अनेक प्रयत्नोंमें रोड़े अटकायेगी ; पर वह साहसिकता ही क्या, जिसमें उत्तेजना, मौतके आलिंगनकी सम्भावना और विषम कठिनाइयाँ न पड़ें। यदि राष्ट्र और व्यक्तियोंके जीवनमें से विपदाएँ तथा आदर्शके लिए मरने-मारनेकी घटनाएँ निकाल दी जायँ, तो वे केवल जानदार मुर्दे अथवा कंकाल-स्वरूप ही रह जायँगे। जितनी ही अधिक विपत्तियों और दुर्घटनाओंकी कल्पना ग्रेट्ज़के दिमागमें आती, उतना ही अधिक उसका उत्साह बढ़ता जाता।

इसके अतिरिक्त उसकी एक और भी लालसा थी। अमेम्बा-जातिके लोगोंसे उसने सुना था कि बैंगवीयलो झीलके दलदली किनारोंके निकट असाधारण आकारके जंगली भैंसे पाये जाते हैं। वे इतने भयंकर और इतने विशालकाय सुने गये थे कि एक अद्भुत प्रकारके भैंसे प्रतीत हुए। झीलके प्रथम गोरे अन्वेषणकर्त्ताकी कीर्त्तिके साथ वह उन महिषासुरोंके कुछ नमूने भी प्राप्त करना

चाहता था ; खोजकी अभिलाषाके साथ भयंकर भैंसोंकी शिकार-लालसाने आगमें घीका काम किया ।

* *
*

'सरौती' बड़े मज़ेसे नदीकी धार काटती हुई चली । एक-एक मील करके नदीकी यात्रा होने लगी । कुइलीमैनसे लगाकर फ़ाइफ़ नदीके वाटरशेड तक कोई विशेष घटना नहीं घटी । वहाँसे विशेष रूपसे तैयार की हुई पहियेदार गाड़ीपर लादकर 'सरौती'को ज़म्बज़ीके तट तक लाया गया । भीषण गरमी और निरन्तर परिश्रमके कारण ग्रेट्ज़का दल काफ़ी थका हुआ था : पर वह हतोत्साह न था । जैसे-तैसे करके 'सरौती'को नदीमें रखा गया । बस, यहींसे कठिनाइयोंका सूत्रपात हुआ, सो भी उग्र रूपमें । 'सरौती'से पहले छोटी डोंगियोंके अतिरिक्त वहाँसे झीलकी ओर और कोई नाव नहीं गई थी । बीचमें रेतियाँ और उथली जमीनें भी पड़ जाती थीं । हिप्पो (दरियायीघोड़ा या जलसूअर) छोटी 'सरौती' पर चढ़ने, या उसे पलटनेकी कोशिश कर रहे थे । मन्द गतिसे 'सरौती' धारकी ओर चली जा रही थी । हिप्पो-आतंक, उसके फँस जानेकी आशंका तथा अन्य किसी भावी भयसे ग्रेट्ज और उसके साथियोंके कलेजे मुँहको आ रहे थे ; पर बैंगवीयलो झीलके लगभग निकट पहुँचने तक कोई दुर्घटना नहीं हुई ।

एक दिन प्रातःकाल प्राची दिशासे सूर्यदेवकी तूलिकाने विश्व-पटपर रजनी-तमको पोतकर ज्योंही सुनहरा रंग भरा, त्योंही अनेक किरणें—कूँचियाँ—ग्रेट्जके नदी-किनारे लगे तम्बूमें प्रवेश कर गईं । मानो उन्होंने व्यंग्यसे कहा—"ओ खोजियो, उठो ! अभी बैंगवीयलो

झील नहीं पहुँचे हो, सतर्क हो जाओ, प्राकृतिक जगत्में परिस्थितियाँ इस वेगसे बदलती हैं कि सुख और विषम दुःखके आगमनकी कोई सूचना नहीं मिलती।" ग्रेट्ज़ और उसके साथी उठे। चारों ओर नीरवता थी। पहाड़की चोटियाँ बालरवि-प्रदत्त सुवर्णाभूषणोंसे अलंकृत थीं। नदीके धरातलपर से कुहरेकी चादर छिन्न-भिन्न हो रही थी। अपने दैनिक पथपर सूर्यके कुछ बढ़ते ही ग्रेट्ज़ और उसके साथी 'सरौती'पर आ गये और नदीकी धारमें वेंग-वीयलोकी ओर चल पड़े। प्रकृतिके राज्यमें कोई विशेष बात न थी। चारों ओर शान्ति थी। हाँ, नदी-तटवर्ती वृक्षोंपर कभी-कभी पक्षी और बन्दर अपने नित्यके प्रोग्रामपर विषाद-सा करते सुने जाते थे।

इसी प्रकार बहुत देर तक चलनेके उपरान्त कलेऊका समय हो आया। उचित स्थान देखकर ग्रेट्ज़ने 'सरौती'को किनारे लगा दिया। नौकरोंने भोजन परोसनेकी तैयारी की। ग्रेट्ज़ और फ़ाइरे मज़ेसे तम्बाकू पीते हुए बबर्ची जेम्सकी पाचन-कलाको निहार रहे थे। इतने ही में जेम्सने कलेऊके लिए बुलाया। ग्रेट्ज़ और फ़ाइरे प्रसन्नतापूर्वक मेज़की ओर जानेको खड़े हुए। पर क्या अन्न-जलकी प्राप्तिमें भाग्य प्रबल नहीं है? यदि नहीं, तो परसी थालीमें हाथसे तोड़ा ग्राम कभी-कभी मुँह तक क्यों नहीं पहुँचता? दार्शनिक दृष्टिसे हम भाग्यकी भले ही यह परिभाषा कर सकें कि अपने कर्मोंके शुभ और अशुभ फलका नाम भाग्य है; पर शिकारी जीवनमें और उस जीवनमें, जहाँ सफलता प्रायः संयोगपर निर्भर रहती है, भाग्यके मानी हैं विधिकी अमिट रेखा। ज्योंही ग्रेट्ज़ और फ़ाइरे खड़े हुए, त्योंही वे सामने एक दृश्य देखकर स्तब्ध रह गये!

वे मूर्तिवत खड़े थे। आँखें पथरा सी गई थीं। कोई जादू टोना की बात न थी, वरन् उनसे पन्द्रह-सोलह गज़की दूरीपर तीन भीम-काय भैंसे नदी-किनारे खड़े थे! आश्चर्य-मुद्रामें वे तीनों उन दोनोंको घूर रहे थे। भैंसे चुपचाप खड़े थे। वे वहाँ तक इतनी साव-धानीसे आये थे कि किसीको उनके आनेका पता तक न चला था।

वे साधारण भैंसे न थे। ग्रेट्ज़को तो ऐसा प्रतीत हुआ, मानो वे पूर्व-इतिहास-कालके जानवरोंमें से हों। दो-एक क्षणके लिए घोर नीरवता रही, और वह नीरवता मौत-सूचक नीरवताके समान थी, जब विश्वके सब प्राणी साँस लेना बन्द सा कर देते हैं और जीवन-ज्योति धीमी पड़के बुझ जाती है। दो-तीन क्षणके उपरान्त भैंसोंसे आकस्मिक भेंट-जन्य मोह दूर हुआ, और ग्रेट्ज़को सामने खड़े हुए यम त्रयसे भयकी परिस्थिति प्रतीत होने लगी। बस, फिर क्या था। युद्धके अटल नियम मारो या मरोका अनुसरण किया गया। लड़ाईमें प्रायः वही जीतता है, जो मरना नहीं, मारना भी जानता है। यह ठीक है कि जो मरना नहीं जानता, वह जीना भी नहीं जानता; पर सर्वदा मरना और पिटना किसी व्यक्ति तथा राष्ट्रके लिए श्रेयस्कर नहीं। मध्यकालीन भारतमें हिन्दुओंकी हारका एक विशेष कारण था। वे मरना तो जानते थे—मरनेके उनके जैसे उदाहरण कम मिलते हैं; पर उन्हें मारना न आता था। पर जहाँ मरो या मारोकी स्थिति हो—और कोई बचावकी सूरत ही न हो, वहाँपर पहले वार करना ही हितकर है। ग्रेट्ज़की प्रसिद्ध मौज़र-रायफल विद्युत्गतिसे उसके कन्धेपर लग गई, मानो उसने कहा—"शान्त शान्त क्षणं मूढ़ा मधु यावत् पिवाम्यहम्।" फिर मौज़र कालिका दर्पी धाँय। फ़ाइरेकी भवानी

ने भी शीघ्र ही आग उगली—धाँय। पक्षी विचलित हो गये। कालिकाकी धाँय वृक्षोंको थर्राती और नवीन जीवन-ज्योति जगाती दूरके पर्वत-शिखरोंसे टकराई, और वहाँ स्थान न पाकर और मार्ग रुका समझकर, प्रतिध्वनि-रूपमें लौटी—थर-र-र-र...। आगेवाले भैंसेने ठोकर-सी खाई। घुटनाकर फिर उठा। धक्के और पीड़ासे उसने अपना भारी सिर हिलाया, फिर नदीके ऊपरको सरपट भागा और झाड़ियोंमें अदृष्ट हो गया। उसके दो साथी भी उसीके साथ विलीन हो गये। फ़ाइरे रायफ़ल लिए तन्मय खड़ा था कि कहीं घायल भैंसा आक्रमण न कर दे; पर दुबारा गोली चलानेका अवसर ही उसे न मिला। रह-रहकर भागते हुए भैंसोंके आकार झाड़ियोंमेंसे दिखाई पड़ जाते थे। वास्तवमें दो ही भैंसे नज़र आते थे।

तीसरे भैंसेका क्या हुआ—यह प्रश्न था, जो ग्रेट्ज़ और फाइरे के सम्मुख था। अभी वे ख़तरेसे बाहर न थे, क्योंकि घायल भैंसेके आक्रमणका भय था। जगली भैंसा घायल हो जानेपर छिपकर और पीछे लौटकर भी आक्रमण कर बैठता है। फाइरे और ग्रेट्ज़को दो आशंकाएँ थीं। सम्भवतः घायल भैंसा आक्रमण करने फिर लौटे, और साथ ही यह भी सम्भावना थी कि तीनों साथ ही हों और भगदड़में दो ही दृष्टिगोचर होते हों। कुछ देर सोचनेके उपरान्त एक तीसरी स्थिति भी उनकी समझमें आई, और वह यह कि घायल भैंसेने अपने साथियोंका संग ही कहीं न छोड़ दिया हो। घायल होनेपर—विशेषकर अधिक घायल होनेपर—सभी जानवर एकान्त और छिपा स्थान पसन्द करते हैं, ताकि वे वहाँ बेखटके पड़े रहें। यदि भैंसा अपने साथियोंसे अलग हो गया, तो वह अवश्यमेव बुरी तरह घायल हुआ होगा। ऐसी

दशामें, ग्रेट्ज़को विश्वास था कि वह भैंसेका सिर प्राप्त कर सकेगा, इस खयालके आते ही ग्रेट्ज अपने भाग्यको सराहने लगा; पर मनुष्यका भाग्य केवल भावनाओं और शेखचिल्लीकी-सी योजनाओंसे ही नहीं जाना जाता। भैंसेकी प्राप्तिकी आकांक्षाने ग्रेट्ज़की नस-नसमें बिजली-सी फूँक दी। अब उन्होंने घायल भैंसेका पीछा करनेकी ठानी। कलेऊ योंही रखा रह गया। आतुर शिकारीसे घर-बार, भूख तथा अन्य झंझटोंकी ओर ध्यान देनेकी आशा करना अग्निसे शीतलताकी आशा करना है। जेम्स तथा दो अफ्रीकन लोगोंको अनछुआ भोजन उठाते और 'सरौती'को लाद लूदकर चलनेकी तैयारी करनेका आदेश देकर, फ़ाइरे और ग्रेट्ज भैंसेकी खोजपर चल पड़े।

खोजपर जाना कोई कठिन काम न था। झाड़ियों, पत्थरों, घास और पत्तियोंपर खून और मांसके टुकडे मिले। ग्रेट्ज़ और फाइरे सतर्क, पर प्रसन्न खोजपर चले जा रहे थे, क्योंकि उनका विश्वास था कि भैंसा बुरी तरह घायल हो चुका है। खोज ज़म्बज़ीके किनारेकी ओरको था, और भैसा निःसन्देह बैंगवीयलो झीलके चारों ओरवाले नरकलोंमें छिपने गया था। ऐसी दशामें ग्रेट्ज़को उस रहस्यमयी झीलके दर्शनका सौभाग्य, निश्चित समयसे पूर्व ही, प्राप्त होनेकी सम्भावना थी।

घंटे-पर-घंटे बीतने लगे। बालरविकी अवस्था बढ़कर पूरी तरुणाईको पहुँची, और उसकी प्रचण्ड किरणें शरीरको भूनने लगीं; पर धुनके पक्के और भैंसेकी प्राप्तिके व्रतपर आरूढ़ ग्रेट्ज़ने भूख, प्यास, गरमी तथा अन्य बेचैनियोंको धता बताई, और भैंसेकी खोजपर वह बढ़ता ही गया। उस भीमकाय भैंसेको मारनेकी उसकी

आसक्ति और भी प्रबल हो रही थी। उसने निर्णय कर लिया था कि जब तक भैंसा न मिलेगा, तब तक वह अपने शरीर और मनको किसी प्रकारका आराम नहीं लेने देगा। जो चीज़ घायल कर ली है, उसे मारना ही चाहिए।

छह-सात घंटेकी निरर्थक खोजके उपरान्त शरीरने जवाब-सा देना प्रारम्भ किया—प्रकृतिके अटल नियमने ग्रेट्ज़को विश्राम लेनेके लिए बाध्य किया, क्योंकि उस दिन प्रातःकालसे उसके पेटमें कुछ भी न पड़ा था, और फिर शिकारमें भूखका क्या ठिकाना! अपच, कुपच, अधपच तथा मन्दाग्नि शिकारकी रगड़में किनारा कर जाते हैं। और फिर स्वस्थ व्यक्तिकी पाचनशक्ति तो भस्माग्निका रूप धारण कर लेती है। ग्रेट्ज़ और फ़ाइरेने गत सायंकालको भी कुछ नहीं खाया था। दोपहर लौट चुका था, और बिना कुछ खाये उस भयंकर खोजपर जाना अत्यन्त कठिन था। अतः कुछ देर विश्रासकी ठहरी। ग्रेट्ज़ने अपने एक अफ़्रीकन नौकर द्वारा जेम्सको नदीके मार्गसे वहाँ आनेका आदेश भेजा। ग्रेट्ज और उसके साथी पेड़ोंकी छायामें सहारा लेकर लेट गये और भोजनकी प्रतीक्षा करने लगे।

सूर्यास्तसे एक घंटा पूर्व मोटर-नाव वहाँ आ पहुँची, और जेम्सने झटपट भोजनकी तैयारी की। कलेऊ, दोपहरका भोज़न और चाय सब एक ही खुराकमें होनेवाले थे। भोजनकी तैयारीके समय मुँह आँखोंसे भोजनका स्वाद ले रहा था। जब भोजन तैयार हो रहा था, तब ग्रेट्ज़ने अपने अफ़्रीकन नौकरोंमें-से तीनको घायल भैंसेकी खोजके लिए भेजा, क्योंकि भैंसा वहीं कहीं पड़ोसकी झाड़ीमें अवश्य छिपा पड़ा था। भैंसेकी प्राप्तिके लिए वह दृढ़-संकल्प हो

चुका था। ग्रेट्ज़ने भैंसेके ढूँढनेपर उनको यथेष्ट पुरस्कार देनेका भी वचन दिया। पुरस्कारकी लालसासे वे तीनों तेजीसे घनी झाड़ियोंमें घुस गये।

ग्रेट्ज़ और फ़ाइरेने अभी भोजन समाप्त ही किया था कि वे तीनों अफ़्रीकन दौड़ते हुए वापस आये, और घायल पर्वताकार भैंसेके देखनेकी सूचना दी। ग्रेट्ज़को अपने भाग्यपर भरोसा था, और उसी प्रकारके समाचारकी वह आशा भी कर रहा था। फ़ाइरे और ग्रेट्ज़ उत्तेजित होकर उछल पड़े और अपनी रायफलें लेकर चल पड़े। थोडी ही देरमें उनके सामनेकी लम्बी घास फटी और भैंसा उनपर टूट पड़ा, मानो पृथिवीके गर्भसे वह यम उनके लिए निकल पड़ा हो।

ग्रेट्ज़ और फ़ाइरेने एकदम फ़ायर किये। दोनोंकी रायफ़लोंकी आवाज़ एक ही मालूम हुई। फ़ायर करनेके उपरान्त ग्रेट्ज़ क्रोधित भैंसेके आक्रमणसे बचनेके लिए एक ओर कूद गया। कूदनेमें ग्रेट्ज़का पैर घासमें छिपे एक पेड़की जड़में उलझ गया, और वह आगे घुटनोंके बल गिरा। यह साधारण सी, पर दैवी घटना ही उसकी जीवन-रक्षाका सहारा हुई। यदि कूदकर कहीं वह खड़ा रहता, तो भैंसेके चौड़े और भयंकर सींगोंसे बिंध गया होता।

जैसे ही ग्रेट्ज़ आगेको गिरा, वैसे ही क्रोधसे फुकारते हुए भैंसेने नीचेको सिर किया। अपने उन क्रूर सींगोंसे उसने ग्रेट्ज़को आकाशमें उछालनेका भरसक प्रयत्न किया; पर उसका शरीर सींगोंमें न पड़ सका। अन्तमें ग्रेट्ज़ तेज़ीसे उठा और अपनी सम्पूर्ण शक्ति समेटकर भैंसेके सींगोंसे चिपट गया। ग्रेट्ज़का अनुमान था कि अत्यन्त घायल होनेके कारण भैंसा या तो गिर ही पड़ेगा, या फिर फ़ाइरेको

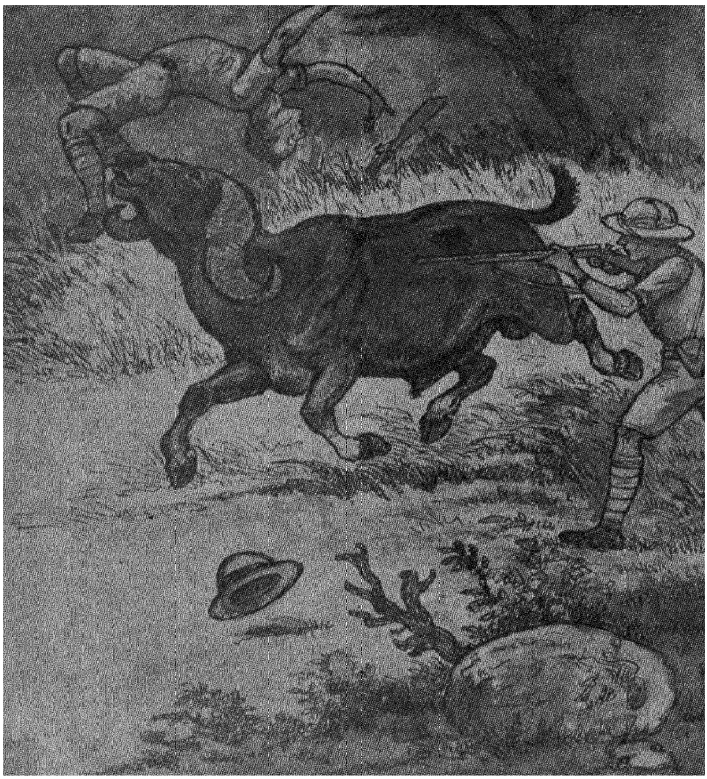

"जस हा भसन ग्रंट्सको उछालकर फेंका, वैसे ही फ़ाइरेने दनसेरायफ़ल ह्लाग़ दी।"

सावधानीसे फायर करनेका अवसर देगा। दो-एक क्षण तक, जो घंटे प्रतीत हुए, भैंसा और ग्रेट्ज़की लड़ाई होती रही। खूनकी अत्यधिक कमीसे पैदा हुई शिथिलताके कारण भैंसा बुरी तरह और शीघ्रतासे क्षीण हो रहा था। इधर ग्रेट्ज़का प्रयत्न था किसी प्रकार भैंसेको गिराना, अथवा इस प्रकार पकड़े रहना, जिससे फ़ाइरे अपनी गोलीसे उसको समाप्त कर सक ; पर उस महिषासुरकी अतोल शक्तिके सामने ग्रेट्ज़की क्या बिसात ? वह तो एक भुनगेके समान भी न था। और उसका साथी फ़ाइरे फायर ही नहीं कर रहा था।

यह सब दृश्य दो-एक सेकेण्ड तक रहा। भैंसा ग्रेट्ज़को अपने सींगोंसे झकझोरकर दूर करना चाहता था। सींगोंपर से हिलाकर गिरानेकी चेष्टामें वह अपना सिर इधर उधरको हिलाता था। अपने विशालकाय सिरके हिलानेमें उसके बाएँ सींगका अन्तिम सिरा ग्रेट्ज़के दाहने गालमें घुस गया। पीड़ाके मारे उसकी चीख निकल गई। उसने तब अपनेको पृथिवीपर से ऊपर उठते और आकाशकी ओर फिंकते हुए महसूस किया। फिर क्या हुआ, सो ग्रेट्ज़को कुछ नहीं. मालूम। प्रकृति देवीने उसकी चेतना-शक्तिपर एक परदा-सा डाल दिया। फिर उसने महिषासुर-संग्रामके अन्तिम और बीभत्स दृश्यको नहीं देखा।

ग्रेट्ज़को बादमें मालूम हुआ कि अपने जीवनका कुछ भी विचार न कर उसी समय फ़ाइरे वीरतापूर्वक उसकी सहायताके लिए आ गया। उसने तब तक फ़ायर नहीं किया, जब तक उसे इस बातका पूरा विश्वास न हो गया कि गोली ग्रेट्ज़के न लगकर भैंसेके लगेगी। जैसे ही भैंसेने ग्रेट्ज़को उछालकर फेंका, वैसे ही फ़ाइरे ने दनसे रायफ़ल दाग़ दी, और वह मारनेके स्थानमें उसे केवल

घायल कर सका। उस गोलीसे भैंसेके क्रोधानलमें नवीन आहुति-सी पड़ गई। बिगड़कर और भन्नाकर वह एकदम फ़ाइरेपर टूट पड़ा, और उसको बार बार सींगोंपर रखकर आसमानपर उछाल-उछालकर ऐसे फेंका, जैसे लड़के फुटबालको जमीनपर आते ही ठोकर मारते है। फ़ाइरेका शरीर सींगोंकी मारसे क्षत-विक्षत हो गया। भैंसा भी अचेत होकर ग्रेट्ज़ और फ़ाइरेके बीच गिर पड़ा!

ग्रेट्ज़को जब चेतना हुई, तब उसने अपने-आपको खूनसे लथ-पथ और घोर पीड़ासे पीड़ित नदी-तटपर, दो अफ़्रीकनोंकी गोदमें पड़े पाया। एक तीसरा आदमी उसके घाव धो रहा था। नीचे नदीमें 'सरौती' समवेदना प्रकट करती हुई-सी प्रतीत होती थी।

"दूसरा 'बवाना' (मालिक) कहाँ है?"—ग्रेट्ज़ने धीमे स्वर से, मगर बड़े प्रयासपूर्वक पूछा। इतने ही प्रयत्नसे पीड़ाका वेग और भी बढ़ गया। थोड़ी देरके लिए उसे फिर बेहोशी आ गई।

"और लोग उसे यहाँ ला रहे हैं। वह शीघ्र ही मर जायगा।"--एक आदमीने शोकाकुल भावसे कहा।

"और भैंसा?"

"मर गया।"—सूक्ष्म-सा उत्तर ग्रेट्ज़को मिला। ग्रेट्ज़के चेहरेकी दाईं ओर और मुहसे गाढ़े खूनका पतनाला-सा चल रहा था। दोनों अफ़्रीकनोंने उसे नदी-तटपर लगे तम्बूमें रखा। तनक-सी गतिसे दर्द और रक्त-प्रवाह बढ़ जाता था। ग्रेट्ज़ने बड़े परिश्रमसे कहा—"जल्दी करो। ओषधि-बक्स लाओ।"

साथियोंने ओषधि-बक्स ला दिया। केवल एक ही काम हो सकता था, और वह था, जितनी जल्दी हो सके, घावोंको यथाशक्ति सी दिया जाय। डाक्टरकी सुई और धागा जितनी ही बार खालमें

होकर निकलनेके मानी थे जीवन-शक्तिकी उतनी ही बूँदें शरीरमें रखना। बस, एक आदमीने हजामतवाले शीशेको आगे थामा, एकने पीछेसे ग्रेट्ज़को थामा, और ग्रेट्ज़ने कच्चे मांसमें सुई भोंकी। टेढ़ा-बकूचा हथेलीके बराबर घाव दाएँ कपोलमें था, और ग्रेट्ज़का नीचेका होंठ ढीला और कँपकँपाता हुआ लटक रहा था। लोग उसके घाव और उसकी सुईकी गतिपर घूरकर सहम रहे थे। जैसे-तैसे उसने टाँके लगाये। तोपसे उड़ाये जाने, हलाहल पीने और एकदम मरनेको बहुत लोग तैयार रहते हैं; पर इतनी कमज़ोरी में जब तनक से प्रयत्नसे बेहोशी आ जाती हो, अपने-आप विकृत और गहरे घावको सीकर स्वयं पीड़ा पहुँचाना टेढ़ी खीर है। शरीरके स्नायुओं तकने जवाब-सा दे दिया था, और कमज़ोरीकी घोर निद्रा उसे थपकियाँ दे-देकर आह्वान कर रही थी; पर ग्रेट्ज़ अद्वितीय साहससे डटा रहा। उसका नीचेका जबड़ा दो जगहोंपर टूटा हुआ था—कानके निकट और होंठोंके समीप। इन टूटे हुए भागोंसे सटे, मसूड़ों और नसोंके मांससे लगे, एक लम्बी हड्डी और तीन दाँत लटक रहे थे। कपोलके भयानक खुले भागसे दाँत, जड़ और हड्डियाँ सफ़ेद और काँपती हुई दृष्टिगोचर होती थीं। भैंसेके सींग का सिरा जीभमें छिद गया था, और जड़की ओरसे जीभ अधटूटी हो गई थी। ग्रेट्ज़को बार-बार थूकना पड़ता था, और थूकमें हड्डी और टूटे दाँतके टुकड़े आते थे।

इस चीर-फाड़के उपरान्त ग्रेट्ज़ने पट्टी बाँधी और थोड़ी-सी ब्राण्डी पी, जिससे उसमें फ़ाइरेके घावोंके चीर-फाड़ करनेकी शक्ति आ गई। जब ग्रेट्ज़ अपने घावोंको जूतेकी भाँति-सी रहा था, जेम्सने फ़ाइरे और उसके लिए तम्बूमें अलग-अलग बिस्तरे लगा

दिये। जब ग्रेट्ज़ वहाँ पहुँचा, तब तक जेम्सने कैंचीसे फाइरेके कपड़े कतर डाले और उसके भयंकर घावोंकी देख-भाल ग्रेट्ज़के ऊपर छोड़ दी। ज्योंही वह फाइरेकी ओर लड़खड़ाया, त्योंही उसको चेतना हुई। धीमेसे उसके होंठ केवल दो शब्द उच्चारण कर पाये—"ईश्वर मालिक!"

फाइरेकी दशा बड़ी शोचनीय थी। उसके बचनेकी कोई आशा न थी। ग्रेट्ज़ने उसको मरफ़िया (अफ़ीम) का इंजेक्शन दिया और फिर उसको अधिक-से-अधिक सुविधा पहुँचानेका प्रयत्न किया। जितनी भी उसकी पीड़ा कम की जा सकती थी, उतना ही उसके लिए अच्छा था। कम से कम तीन बार भैंसेने उसे उछालकर फेंका था, और तीनों ही बार उसके सींग घुसे थे। उसकी छातीके बाएँ भागका पुट्ठा कच्चे मांसके साथ लटक रहा था। हृदय और फेफड़े सुरक्षित थे, और उसकी बाईं ओर पेड़ू और हृदयके बीच गहरा घाव था। इस घावको ग्रेट्ज़ने तुरन्त ही सीकर अन्य घावोंके लिए यथोचित प्रबन्ध किया। ग्रेट्ज़की इस चीर-फाड़के उपरान्त जेम्सने घाव धो और पट्टी बाँधकर फाइरेको बिस्तरपर लेटा दिया। ग्रेट्ज़ भी इतने परिश्रमके कारण बड़ी कमज़ोरी महसूस कर रहा था और अपने प्रिय सार्थीके लिए कुछ और करनेके अयोग्य-सा था। फाइरेने विधिवत् साँस लेना प्रारम्भ किया। अपने बिस्तरपर पड़े-पड़े ग्रेट्ज उसकी श्वास-गति सुनता रहा। अब उसको उसके विषयमें कुछ आशा-सी होने लगी।

रात्रिको घुप अन्धकारके वक्षःस्थलमें..वह प्रदेश लीन हो गया। ग्रेट्ज़के लिए वह कालरात्रि थी। असह्य पीड़ा और मुँहमें दहकते हुए कोयले रखेकी-सी वेदनासे उसकी बेचैनीका कुछ ठिकाना न था।

प्रातःकाल थोड़ी देरके लिए अर्धनिद्रा-सी उसे आई, और उसीसे उसे काफी आराम मिला। उषाकालमें वही कष्ट फिर प्रारम्भ हो गया। श्मशानका-सा वातावरण चारों ओर प्रतीत होता था।

चिल्लानेकी बात तो दूर, ग्रेट्ज़से बोला तक न जाता था। ताली बजाकर उसने अपने नौकरोंको बुलाया। उतनी ही गतिसे बेहोशी-सी आती मालूम दी और पीड़ा बढ़ गई। नौकर आये, ब्राण्डीकी एक खुराक लेकर वह बड़ी कठिनाई और पीड़ासे उठा और फ़ाइरेकी ओरको लड़खड़ाया। सूर्यकी ज्योतिके आगमनसे पूर्व फ़ाइरेकी जीवन-ज्योति बुझ चुकी थी, और ग्रेट्ज़को फ़ाइरेके भाग्यपर बड़ी ईर्ष्या थी, क्योंकि आँखें बन्द हो जानेपर सब दुःखोंका अन्त है।

* *
*

यात्राकी सफलताकी चौखटपर पैर रखते ही—बैंगवीयालो झीलके किनारे पहुँचते ही—ग्रेट्ज़की आशापर पानी फिर गया। भाग्यचक्रने उसके एक साथीका तो अन्त ही कर दिया था, और स्वयं भी वह बुरी तरह घायल तथा बेकार हो चुका था। विधिकी लकीरें अमिट होती हैं। जेम्सने वीर फ़ाइरेको लम्बूके निकट ही दफ़नानेका प्रबन्ध किया।

सबसे निकट स्थान उत्तरी-पूर्वीय रोडेशियाका कासमा स्थान था। ग्रेट्ज़ने सहायताके लिए समाचार भेजा, और सहायताके आने तक अपूर्व धैर्यसे उसने परिस्थितिका सामना किया।

दिन-रात चलकर कासमासे डाक्टर और मैजिस्ट्रेट दो दिनमें वहाँ आ पहुँचे, और उन चार पाँच दिनोंमें—डाक्टरी सहायताके

आने तक—ग्रेट्ज़को जो शारीरिक और मानसिक कष्ट हुआ, उसकी कल्पना ही की जा सकती है।

डाक्टरने बड़ी नाजुक हालतमें ग्रेट्ज़के चीरा लगाया, और एक साधारण-से स्ट्रेचरपर रखकर उसे कासमा लाया गया। यात्राके कष्ट और फ़ाइरेकी मौतसे ग्रेट्ज़की दुर्गति हो गई। उसके साथ फ़ाइरेका शव भी ले आया गया। यात्रा-भर ताज़ियेदारी रही, कई मास तक कासमेमें उनकी शुश्रूषा हुई, और शरीरमें शक्ति आनेपर उसे अन्तिम चीर-फाड़के लिए दारुस्सलम जाना पड़ा।

* *
*

ग्रेट्ज़ और फ़ाइरेके आदर्श प्रत्येक शिकारी और सैनिकके लिए माननीय और अनुकरणीय हैं। अपने साथीकी सहायता करना, और सो भी अपनी जान जोखिममें डालकर, प्रत्येक भले आदमी और विशेषकर प्रत्येक खिलाड़ीका कर्त्तव्य है। फ़ाइरे अपनी जान बचा सकता था। भैंसेसे उसका भिड़ पड़ना स्वार्थकी दृष्टिसे ठीक न हो; पर नहीं, सच्चे शिकारी साथीकी दृष्टिसे उसका वह कृत्य उचित और प्रशंसनीय था। लोग मरते और जीते रहते हैं; पर वास्तवमें वे ही जीते हैं और उन्हींका नाम लिया जाता है, जो औरों के लिए निष्काम सेवा करते हुए मरते हैं। ग्रेट्ज़का अदम्य साहस और उसकी सहिष्णुता भी कम प्रशंसनीय नहीं है। ग्रेट्ज़ और फ़ाइरे पक्के शिकारी थे। वे विलासी शिकारी नहीं थे, जिनकी शिकार-कला—शिकार-लिप्सा—केवल जीवोंके मारनेमें ही होती है। बहुत-से आदमी हज़ारों और लाखों रुपये केवल इसी बातके लिए फूँक देते हैं कि बस, उनकी रायफ़लसे बूचड़का काम हो जाय।

उनकी गोलीसे चीज़ मर ज़ाय, चाहे शिकारकी उत्तेजना, परिश्रम और सैनिक-शक्तिका सुख या दुःख कोई और भोगे। इन पंक्तियों का लेखक ऐसे शिकारियोंके कृत्यको, जो वर्त्तमान दूषित पूँजीवादके दुष्परिणाम हैं, निन्दनीय समझता है ; पर फ़ाइरे और ग्रेट्ज़-जैसे शिकारियोंको वह नतमस्तक प्रणाम करता है।

'प्राणोंका सौदा'के लेखक

पं० श्रीराम शर्माको लिखी अन्य पुस्तक

शिकार

'शिकार'में क्या है? शिकार केवल बन्दूक और रायफ़लकी धाँय-धाँय नहीं, उसमें प्राकृतिक दृश्योंका सजीव वर्णन, अद्भुत वीरताके रोमाञ्चकारी वृत्तान्त और मनोभावोंका सूक्ष्म विश्लेषण है। ग़रीबों और किसानोंके चरित्र-चित्रणको पढ़कर आप मन्त्र-मुग्ध हो जायँगे।

साहित्याचार्य स्व० पं० पद्मसिंह शर्माने लेखकको लेखन-शैलीपर लिखा है—

"आपके लेखोंका निशाना सीधा पाठकोंके हृदयपर बैठता है। पढ़ने-वाला लोट-पोट हो जाता है। आप ऐसा जीता-जागता चित्र खींचते हैं कि देखकर सहृदय पाठक आश्चर्य-चकित रह जाता है। लेखककी क़लम चूमनेको जी चाहता है। आपकी वर्णन-शैली बड़ी सजीव, भाव-विश्लेषण मनोविज्ञान-सम्मत और भाषा विषयके अनुरूप बड़ी सुघड़ होती है।"

छह चित्र, मूल्य केवल २॥)

सुलभ संस्करण

'शिकार' का संक्षिप्त संस्करण भी प्रकाशित हुआ है, जो संयुक्त-प्रान्तीय हाई स्कूलोंके लिए भी स्वीकृत हो चुका है। इस संस्करणका मूल्य ॥=)